अवधी लोकगीतों के अनोखे स्वर

डॉ० महेश

अवधी लोकगीतों के अनोखे स्वर

[अवधी लोकगीतों का प्रामाणिक संकलन अर्थ सहित

सम्पादक

डॉ० महेश

[डॉ० महेशप्रतापनारायण अवस्थी]

एम० ए० (संस्कृत तथा हिन्दी), एल०टी०, पी-एच०डी०

प्रोफेसर

राजकीय सी० पी० आई०, इलाहाबाद

प्रकाशक

भारतीय भाषा भवन

इलाहाबाद

प्रकाशक
भारतीय भाषा भवन
४११ ए-दारागंज, इलाहाबाद

वितरक
१. अवधी साहित्य संस्थान : अयोध्या
२७०, ठठरहिया, फैजाबाद

२. स्वाध्याय प्रकाशन
डी-५४, निराला नगर, लखनऊ

प्रथम संस्करण (वृहद्) १९८५ ई०

द्वितीय संस्करण (संशोधित)-१९९० ई०

मूल्य मूल्य : ३० रुपये

भारतीय भाषा परिषद्, प्रयाग की 'अवधी समिति' द्वारा प्रकाशित

मुद्रक
देववाणी मुद्रणालय,
नया बैरहना, इलाहाबाद

समर्पण

मातृवत पूजनीया

स्वर्गीया श्रीमती छविमती (छब्बा), बुआ

एवं

परम श्रद्धास्पद

स्वर्गीय श्री रामकरन मिश्र, फूफा

की

पुण्य स्मृति में

श्रद्धापूर्वक ।

शुभकामना

प्रिय डा० अवस्थी,

मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि आपने मधु ऋतु की मधुरिम बेला में अवधी लोकगीतों के अनोखे स्वर में हिन्दी साहित्य को एक अनुपम कृति अर्पित की है। आपके इस सत्प्रयास से अवध की बिखरी हुई जनवाणी के सहृदय काव्य रसिकों को अनोखे रसास्वादन का सुखमय अवसर मिलेगा। मैंने आपके इस संकलन को आद्योपान्त देखा है।

प्रस्तुत संकलन में उत्तर प्रदेश के २० जिलों में बिखरी हुई अवधी बोली के भिन्न-भिन्न स्वरों को एकत्र करने का जो प्रयास किया गया है, वह इसलिए भी और उत्तम हो गया है कि सर्व-सामान्य की धारणा अभी तक यही बनी हुई है कि अयोध्या के समीपवर्ती जिलों में ही यह बोली बोली जाती है, किन्तु आपके लोकगीतों से स्पष्ट है कि यह एक विशाल क्षेत्र की लोक-भाषा है।

इस संकलन को देखकर साहित्य-प्रेमियों को निश्चय ही प्रसन्नता होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। एतदर्थ मेरी कोटिशः शुभकामनाएँ है।

उमाशंकर

(डा० उमाशंकर मिश्र)

पी० ई० एस०

प्राचार्य,

राजकीय रचनात्मक प्रशिक्षण महाविद्यालय, लखनऊ

फाल्गुन शुक्ला सप्तमी,

सं० २०४१ विक्रमी

दिनांक २७ फरवरी १९८५ ई०

प्राक्कथन

अवध प्रान्त में १२ जनपद हैं—

(१) लखनऊ आयुक्त मण्डल (कमिश्नरी) के लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, खीरी, सीतापुर, हरदोई तथा

(२) फैजाबाद आयुक्त मंडल के फैजाबाद, गोंडा, बहराइच, सुलतानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी जनपद।

उपर्युक्त १२ जनपदों में से अवध के ११ जनपदों में पूर्णतः एवं १ जनपद (हरदोई) का अधिकांश भाग अवधी लोकगीतों के क्षेत्र में आता है। इनके अतिरिक्त अवध के बाहर के निम्न-लिखित जनपद तथा जनपदांश भी अवधी लोकगीतों की सीमा में आते हैं :—

१. इलाहाबाद जनपद (सम्पूर्ण)

२. बाँदा जनपद की मऊ तथा कर्वी तहसीलें।

३. जौनपुर जनपद की केराकत तहसील छोड़कर शेष तहसीलें।

४. मिर्जापुर जनपद की मिर्जापुर तथा राबर्ट्सगंज तहसीलें

५. वाराणसी जनपद की ज्ञानपुर नहसील।

६. फतेहपुर जनपद (सम्पूर्ण)

७. कानपुर जनपद की अकबरपुर तथा डेरापुर तहसीलें छोड़कर शेष जनपद।

८. बस्ती जनपद की हरैया तहसील।

अवधी लोकगीनों को मैंने पाँच प्रमुख विभागों में विभाजित किया है, वैसे इनके और भी कई विभाग किये जा सकते हैं।

ये विभाग निम्नलिखित हैं—

१. संस्कार सम्बन्धी,

२. ऋतुपरक,

३. श्रम सम्बन्धी;

४. जातिपरक और

५. विविध।

प्रस्तुत संकलन में इन्हीं विभागों को अलग-अलग करके रखा गया है, जिससे पाठकों को विषय-वस्तु देखने में सुविधा हो

वैसे मैंने सन् १९८५ ई० में अवधी लोकगीतों का एक विशाल प्रामाणिक संकलन साहित्यकारों की सेवा में प्रस्तुत किया था, जिसमें १२५० लोक गीत संकलित थे और उसका नाम था 'अवधी लोकगीत हजारा'। लोकगीत प्रेमियों तथा साहित्य-मनीषियों ने उसकी भूरि-भूरि सराहना की थी, क्योंकि इतना प्रामाणिक तथा व्यवस्थित संकलन अभी तक अवधी में नहीं है। उसमें एक कमी अवश्य रह गयी थी कि लोकगीतों के साथ उनके अर्थ नहीं दिये गये थे, जिससे अवधीतर साहित्य-कारों को कुछ कठिनता का अनुभव हो रहा था। प्रस्तुत लघु संकलन में उसी कठिनाई के निवारण का प्रयास किया गया है। आशा है साहित्यिक बन्धु इससे अवश्य संतुष्ट होंगे, जिससे मेरा प्रयास सार्थक होगा।

सन्त रविदास जयन्ती —महेश

माघी पूर्णिमा, ९ फरवरी, १९९०

विषय सूची

संस्कार सम्बन्धी लोकगीत

संस्कारों से सम्बन्धित लोकगीतों में सर्वप्रथम देवी सम्बन्धी लोकगीत गाये जाते हैं ।

१. देवी गीत

सन्दर्भ—किसी याचक द्वारा देवी से वरदान माँगना ।

माँगेउँ बरदान देबी के मँडिलवा भीतर ।। टेक ।।
भइया जौ माँगेउँ सतपँच ठइ रे ।
बहिनी आकेलि देबी के मँडिलवा भीतर ।।१।।
देवरा जौ माँगेउ सतपँच ठइ रे ।
ननदी आकेलि, देबी के मँडिलवा भीतर ।।२।।
अपना जौ माँगेउँ सोने कै सिहरवा,
जुग-जुग बाढ़ै अहिबात, देबी के मँडिलवा भीतर ।।३।।

—मँझगवाँ (गोंडा)

अर्थ—वर-याचिका स्त्री बताती है कि उसने देवी के मन्दिर में वरदान माँगा है कि मेरे सात-पाँच भाई हों, किन्तु बहिन अकेली हो ।।१।।

मेरे सात-पाँच देवर हों, किन्तु ननद अकेली हो ।।२।।

अपने लिए मैंने सोने का सिन्दूर-पात्र माँगा है और साथ ही यह भी कि मेरा अहिबात युग-युग बढ़े अर्थात् मेरे पतिदेव दीर्घजीवी हों ।।३।।

विशेष—१. 'सत-पँच' कहने का आशय है कि यथासंभव सात या पाँच हों अर्थात् कई हों ।

२. बहिन तथा ननद अकेली माँगने का भाव यही है कि जिससे बर खोजने तथा दहेज आदि की कठिनाइयाँ मेरे पिताजी तथा ससुरजी के समक्ष न आयें ।

२. देवी गीत

सन्दर्भ—देवीजी के आने पर कोई साध्वी पत्नी निवेदन करती है :—

जौ मैं जनतूँ माता यही रहिया अइबू।
माता ! रहिया माँ मलिया बसउतूँ, झलरिया लै चढ़उतूँ ॥१॥
जौ मैं जनतूँ माता यही रहिया अइबू।
माता ! रहिया माँ बनिया बसउतूँ, लवँगिया लै चढ़उतूँ ॥२॥
जौ मैं जनतूँ माता यही रहिया अइबू।
माता ! रहिया माँ बगिया लगउतूँ, जुड़े-जुड़े अउतू ॥३॥
जौ मैं जनतूँ माता यही रहिया अइबू।
माता ! रहिया माँ सगरा खोदउतूँ, डफइया मारत अउतू ॥४॥

—मझगवाँ (गोंडा)

हे माता ! यदि मैं जानती कि आप इस राह से आएँगी तो मैं राह में माली को बसा देती और उससे झालर लेकर चढ़ाती ॥१॥

हे माता ! यदि मैं जानती कि आप इस राह से आएँगी तो मैं राह में बनिया बसा देती और उससे लवँग लेकर चढ़ाती ॥२॥

हे माता ! यदि मैं जानती कि आप इस राह से आएँगी तो मैं राह में बाग लगा देती, जिससे आप शीतलता का अनुभव करते हुए आतीं ॥३॥

हे माता ! यदि मैं जानती कि आप इस राह से आयेंगी तो मैं राह में सरोवर खुदवा देती, जिससे उसके पानी पर आनन्दपूर्वक तैरती हुई आतीं ॥४॥

विशेष—(१) देवी के स्वागत के लिए आराधिका हर उपाय करना चाहती है, जिससे उन्हें पथ में कहीं कोई कठिनाई न हो और सुख प्राप्त हो।

(२) पहले समय में बाग लगाना तथा सगरा खुदवाना पुण्य का कार्य समझा जाता था।

३. देवी गीत

सन्दर्भ—देवी का मन्दिर दूर है, एक स्त्री कह रही है कि वह किस बहाने से उनके दर्शन करने जाय।

मैं कउने बहाने आवउँ तौ देबी तोरे दरसन का ॥ टेक ॥
हाथे मँ लिहे मइया डाल डेलइया,
मलिनिया बहाने आवौं तौ देबी तोरे दरसन का ॥१॥
हाथे मँ लिहे लेड्डू का दोना,
हेलवइया बहाने आवउँ तौ देबी तोरे दरसन का ॥२॥
हाथे मँ लिहे मइया सोने का गेडुवा,
महरिया बहाने आवउँ तौ देबी तोरे दरसन का ॥३॥
हाथे मँ लिहे मइया लउँगन कै बिरिया,
तमोलिन बहाने आवउँ तौ देबी तोरे दरसन का ॥४॥
हाथे मँ लिहे मइया लाली चुँदरिया,
बजजवा बहाने आवउँ तौ देबी तोरे दरसन का ॥५॥

—चिलौली (रायबरेली)

हे देवी! मैं आपके दर्शन के लिए किस बहाने आऊँ (वैसे तो मैं घर से बाहर कहीं नहीं जाती-आती)। मैं सोचती हूँ कि हाथ में डाल-डलिया लेकर मालिन के (यहाँ जाने के) बहाने से आपके दर्शन के लिए आऊँ ॥१॥

हाथ में लड्डू का दोना लेकर हलवाई के बहाने से आपके दर्शन के लिए आऊँ ॥२॥

हाथ में सोने का गेडुवा लेकर महरी के बहाने आपके दर्शन के लिए आऊँ ॥३॥

हाथ में लवँग लगी बिड़िया लेकर तमोलिन के बहाने आपके दर्शन के लिए आऊँ ।।४।।

हाथ में लाल चुनरी लेकर बजाज के बहाने आपके दर्शनार्थ आऊँ ।।५।।

४. देवी गीत

सन्दर्भ—देवी की सवारी और उनकी दयालुता ।

सेर पै ह्वै गईं सवार, सवार मोरी अम्बे ।।टेक।।
सेर सवारी मइया महलन पहुँचीं,
राजा पै ह्वै गईं दयाल, दयाल मोरी अम्बे ।।१।।
सेर सवारी मइया घाटन पहुँची,
धोबिया पै ह्वै गईं दयाल, दयाल मोरी अम्बे ।।२।।
सेर सवारी मइया बागन पहुँचीं,
माली पै ह्वै गईं दयाल, दयाल मोरी अम्बे ।।३।।
सेर सवारी मइया कुअँना पै पहुँचीं,
महरा पै ह्वै गईं दयाल, दयाल मोरी अम्बे ।।४।।

—दिउली (बाराबंकी)

मेरी अम्बा सिंह पर सवार हो गयीं । सिंह पर सवार होकर माता महल पहुँचीं, वे राजा पर दयालु हो गईं ।।१।।

सिंह पर सवार होकर माता घाट पर पहुँची, वे धोबी पर दयालु हो गईं ।।२।।

सिंहवाहिनी माता वाटिका पहुँची, वे माली पर दयालु हो गईं ।।३।।

सिंह पर सवार होकर माता कुआँ पर पहुँची, वे महरा पर दयार्द्र हो गयीं ।।४।।

५. देवीगीत (पचरा)

सन्दर्भ—किसी के ऊपर देवी का आवेश होने पर दुसाधों द्वारा गाया जाने वाला प्रसिद्ध गीत जिसमें उनका स्मरण कर उन्हें आते और मनोकामनाएँ पूर्ण करते देखा गया है ।

सुमिरौं मैं आदि भवानी, जगत मइया ।।टेक।।
सिंघ चढ़ी देबी गरजत आवैं,
लाल धुजा फहरानी, जगत मइया ।।१।।
देबी दुआरे यक हरिअर पीपर,
गड़िगा झंडा निसानी, जगत मइया ।।२।।
देबी दुआरे यक बँझिनी पुकारै,
देउ बलक घर जाई, जगत मइया ।।३।।
देबी दुआरे एक अँधरा पुकारै,
देउ नयन घर जाई, जगत मइया ।।४।।

—केशवपुर (फैजाबाद)

मैं आदि भवानी, जगज्जननी का स्मरण करता हूँ ।

सिंह पर चढ़कर देवी गरजती हुई आती हैं, उनकी लाल ध्वजा फहराती है ।।१।।

देवी के द्वार पर एक हरा पीपल है, उसी पर चिह्न स्वरूप झण्डा गड़ गया है ।।२।।

देवी के द्वार पर एक वन्ध्या स्त्री पुकारती है कि पुत्र का वरदान दीजिए तो मैं घर जाऊँ ।।३।।

देवी के द्वार पर एक अन्धा पुकारता है कि नेत्र दीजिए तो मैं अपने घर जाऊँ ।।४।।

विशेष—आद्या शक्ति असमर्थों की मनोकामना पूर्ण करती हैं ।

६. सोहर

सन्दर्भ—एक सुन्दरी जल भरने कुएँ पर गयी, बहुत वर्षों के बाद उसका परदेशी पति लौटा। वह तो अपनी पत्नी को पहचान गया, किन्तु उसकी पत्नी नहीं पहचान सकी। अतः दोनों में कहा सुनी हुई और बाद में रहस्य उद्घाटित हुआ।

पन अस पतरी जौ रनिया कुसुम रंग सुन्दर रे ।।टेक।।
घोड़वा चढ़न्ते एक राजा, बोलि-ठोलि मारै रे.
पनि कै पियासे होउ जौ राजा तौ पनि पियउ,
अपनी डगरि जाउ रे ।।१।।
तुम्ह अस रानी जौ पउतूँ तौ, जँघा बइठउतूँ—२ रे।
रानी कुचतू महोबे कै पान, दुनहुँ जने रहतूँ - २ रे ।।२।।
तुम्ह अस राजा जौ पउतूँ तौ, गोबरा कढ़उतूँ—२ रे।
राजा अपने परभूजी के पायें कै, पनहिया पोछउतूँ-२ रे ।।३।।
कहवाँ रानी तोरी बैठक, कहवाँ जेवनरिया—२ रे।
रानी कउने महल सोवनार, उहैं हम अउबै—२ रे ।।४।।
डिहरिया मोरी बैठक रामा, रसोइयाँ जेउनरिया—२ रे।
राजा रंगमहल सोवनार, उहाँ कइसे अइहौ—२ रे ।।५।।
चारि पहुरवा तौ जागैं, कूकुर दुइ भूकैं—२ रे।
राजा लहुरा देवर रखुवार, उहाँ कइसे अइहौ—२ रे ।।६।।
चारि पहुरवा मँजुरिया, कुकुर दुइ कउरा—२ रे।
रानी तुम्हरा देवर मोर भाइ तौ हम रानी आउब—रे।।७।।
सोउतैं रनिया जगउबै, तौ जँघा बइठउबै—२ रे।
रानी कुचब महोबे कै पान, दुनहुँ जने रहबै—२ रे ।।८।।
आगि न लागै तोरी जँघिया, बजुर परै पनवा- २ रे।
राजा लाख मुहर कै धरम, धरम कइसे जाइ- २ रे ।।९।।

अरे धेरिया तौ हौ तुम सपूती, कपूती कइसे होइहौ -२ रे।
रानी, हम पापी कन्त तुम्हार, एतना छल कीना- २ रे ॥१०॥

—सेंदुरवा (सुलतानपुर)

पान जैसी पतली रानी है और उसका रंग कुसुम के रंग की भाँति सुन्दर है।

घोड़े पर चढ़ा हुआ एक राजा उसे देखकर बोली-ठोली मारता है (हास-परिहास करता है)। इस पर स्त्री कहती है कि हे राजा, यदि तुम पानी के प्यासे हो तो पानी पियो और अपनी राह जाओ ॥१॥

वह कहता है कि यदि मैं तुम्हारी जैसी रानी पाता तो उसे अपनी जाँघ पर बैठाता और फिर रानी तुम महोबे का पान (जो कि उत्तम समझा जाता है) कूचती एवं हम दोनों लोग आनन्दपूर्वक रहते ॥२॥

स्त्री कहती है कि यदि मैं तुम्हारा जैसा राजा पाती तो उससे गोबर कढ़ाती और अपने स्वामी (पति) के पैरों के जूते तुमसे पुछवाती ॥३॥

पति कहता है—रानी ! तुम्हारी बैठक कहाँ है, कहाँ भोजनशाला और रानी ! किस महल में तुम्हारा शयन कक्ष है, वहीं मैं आऊँगा ॥४॥

स्त्री उत्तर देती है—राजा ड्योढ़ी पर मेरी बैठक है, रसोई में (ही) भोजनशाला और रंगमहल में मेरा शयन कक्ष है, वहाँ कैसे आओगे ? ॥५॥

(क्योंकि) चार पहरेदार जगते रहते हैं, कुत्ते भूँकते हैं और मेरा छोटा देवर मेरा रक्षक है, वहाँ कैसे आओगे ? ॥६॥

वह विधि बताता है—चार पहरेदारों को मजदूरी और कुत्तों को कौरा चाहिए, सो मैं दे दूँगा एवं रानी तुम्हारा देवर तो मेरा भाई है। (अत:) मैं आऊँगा ॥७॥

मैं सोती हुई रानी को जगाऊँगा, अपनी जाँघ पर आसन दूँगा और

महोबे का पान कूँचेंगें, (इस प्रकार सुखपूर्वक) हम दोनों लोग रहेंगे ।।८।।

स्त्री रुष्ट होकर कहती है—तुम्हारी जाँघ में आग लगे, तुम्हारे पान पर बज्र पड़े । राजा, लाख मुहरों के तुल्य मेरा धर्म (पातिव्रत धर्म) है, उस धर्म को मैं कैसे नष्ट करूँगी ? ।।९।।

पति ने प्रसन्न होकर उससे कहा—वास्तव में तुम एक अच्छे पिता की अच्छी पुत्री हो, फिर कुपुत्री जैसा आचरण क्यों करोगी । रानी ! मैं तुम्हारा पापी पति हूँ, जिसने इतना छल किया (इतना छल-भरा नाटक किया) ।।१०।।

विशेष—भारतीय नारी के लिए अपना पति ही सर्वस्व है, वह किसी अन्य को अपने हृदय में स्थान नहीं देती, फिर चाहे वह कितना ही बड़ा आदमी हो । यद्यपि पुरुष के मन में सन्देह का कीट रहता है, जिसके कारण वह यदा-कदा पत्नी की परीक्षा लेता रहता है, जैसा कि इस लोकगीत में है । वह उसे अनेक प्रलोभन भी देता है और अपनी उच्च स्थिति से अवगत भी कराता है । किन्तु पत्नी के लिए तो—

नारि धरम पति देव न दूजा ।

७ सोहर

सन्दर्भ—पति परदेश गया है । पत्नी भी सास से अनुमति लेकर जाती है, किन्तु पति की विमुखता से निराश हो लौट आती है । पति के आने पर इसका बदला वह भी ले ही लेती है ।

मचिया तौ बइठी ससुइया तौ बहुरिया अरज करै हो ।
सासू वहि बन हमहूँ जाबै जहाँ हरि छाये हो ।।१।।
वहि बन कांट—कँटइली, बबुर-मकोइया लागे हो ।
बहुवरि, वहि बन बिकट अँधेरिया, हुआँ कइसे जइहौ हो ।।२।।

काटि डरबै काँट कँटइली, बबुर मकोइअउ हो।
सासू, झेलि डरबै बिकट अँधेरिया, हुआँ चली जाबै हो ।।३।।
एक बन गइली, दुसर बन, तिसरे माँ राजा बन हो।
राजा, खोलउ चंदन केंवरिया, भितर हम अउबै हो ।।४।।
कोरवा माँ सोवै मलिनियाँ, पैताने मोरे ठौर नहीं।
रानी, जहवाँ से तुम आइउ, तहवैं का चली जाव हो ।।५।।
उँचवैं-उँचवा जायो रानी, खलवा पैग नहिं दीहेउ हो।
रानी, राखेउ पगड़िया कै लाज, दुन्हउ कुल तारेउ हो ।।६।।
खलवैं खलवा जाबै राजा, उँचवा पैग नहिं देबै हो।
राजा, मःरब पगड़िया पै लात, दुन्हउ कुल बोरबै हो ।।७।।
बरहे बरिस राजा लउटि घर आइ गये हो।
रानी, खोलउ चंदन केंवरिया, भितर चले आई हो ।।८।।
कोरवा तौ सोवै होरिलवा, पैताने मोरे ठौर नहीं।
राजा, मुठिया मँ लेउ पयरवा, कुकुरिया लग सोऊ बिलरिया लग सोऊ,
मोरे लग ठौर नहीं, घरवा मोरे ठौर नहीं हो ।।९।।
बाउ बहै पुरवइया रानी पयरवा लागे ऊड़न हो।
रानी कुकुरिया भुकन लागी, बिलरिया भुकन लागी हो ।।१०।।
ऊँचेन घर केरी बेटी उँचेन घर ब्याही, अरे लिहेउ बदला हो।
रानी, बोली डारौ बिसराय, रहब दुनउ जने मिलि कै हो ।।११।।

—सेंदुरवा (सुलतानपुर)

मचिया पर सास जी बैठी हैं, बहू उनसे निवेदन करती है—सासु जी ! मैं भी उस वन में जाऊँगी, जहाँ मेरे पतिदेव रहते हैं ।।१।।

सासु उसे समझाती है—उस वन में काँटे और कँटीली झाड़ियाँ हैं, बबूल और मकोय के पेड़ लगे हैं जो कण्टक युक्त हैं। बहू, उस वन में विकट अँधेरी रहती है, वहाँ कैसे जाओगी ? ।।२।।

वह समाधान करती है—मैं काँटों और कँटीली झाड़ियों को काट डालूँगी, बबूल तथा मकोय को भी। सासू, मैं विकट अंधेरी को भी झेल डालूँगी, इस प्रकार वहाँ चली जाऊँगी ॥३॥

वह एक वन गई, फिर दूसरे वन और फिर राजा वन (जहाँ उसके राजा पतिजी रहते थे) पहुँची। उसके पति जी वन के एक घर में निवास कर रहे थे। पत्नी ने पुकारा—राजा चन्दन की किवाड़ खोलिए, मैं भीतर आऊँगी ॥४॥

निष्ठुर पति ने उत्तर दिया—मेरे कोरवा (हृदय से लगी हुई सन्नि-कट) में मालिन सो रही है, मेरे पैरों की तरफ शय्या पर स्थान नहीं है। रानी, जहाँ से तुम आई हो, वहीं चली जाओ ॥५॥

पति ने यह भी हिदायत की कि ऊँचे-ऊँचे ही जाना, नीचे पैर न देना (अर्थात् उच्च कुल की मर्यादा का ध्यान रखते हुए, पातिव्रत धर्म का पालन करते हुए जाना, कहीं विचलित होकर अधोगामिनी न होना)। हे रानी, मेरी पाग की लाज रखना, इस प्रकार दोनों कुलों को तारना। (पति को अपनी लज्जा का बड़ा ध्यान है कि उसकी पत्नी पतिव्रता रहे और पतिव्रता स्त्री से आशा की जाती है कि वह दोनों कुलों (पति-कुल तथा पिता-कुल) को तार देगी।) ॥६॥

पतिव्रता पत्नी उसके इस दुर्व्यवहार से क्षुब्ध हो उठती है और उसे मुँहतोड़ उत्तर देती है कि "मैं नीचे-नीचे ही जाऊँगी, ऊँचे पैर नहीं रखूँगी। तुम्हारी पगड़ी पर लात मारूँगी (तुम्हारी लज्जा की परवाह नहीं करूँगी)। इस प्रकार दोनों कुलों को डुबो दूँगी। (वास्तव में पत्नी दुराचरण नहीं करेगी, किन्तु आवेश में ऐसा उत्तर दे डालती है।) ॥७॥

वह खीझकर अपने घर लौट आती है। उसके बारहवें वर्ष उसके पति जी लौट कर घर आये और पुकारा—रानी! चन्दन की किवाड़ी खोलो तो मैं भीतर चला आऊँ ॥८॥

रानी ने उत्तर दिया—मेरे कोरवा में (हृदय से लगा हुआ) मेरा प्रिय पुत्र सो रहा है और चारपाई पर पैरों की तरफ स्थान नहीं है। राजा ! अपनी मुट्ठी में पयाल ले लो और कुतिया के साथ सोवो चाहे बिल्ली के साथ, मेरे पास स्थान नहीं है और न मेरे घर में ही ।।९।।

पति अनुनय करते हुए कहता है—पूर्वी हवा चल रही है, पयाल उड़ने लगा है। रानी ! कुतिया और बिल्ली भूँकने लगी हैं ।।१०।।

वह विनम्रतापूर्वक पत्नी की प्रशंसा करते हुए निवेदन करता है—"आप ऊँचे घर की बेटी हैं और ऊँचे ही घर में व्याही गई हैं। आपने तो बदला ले लिया (मेरे पिछले दुर्व्यवहार का); रानी ! मेरी उस बात को भूल जाओ, अब हम दोनों लोग आपस में मिलकर रहेंगे ।।११।।

विशेष—स्त्रियाँ अपने पति पर अपना एकाधिकार मानती हैं और किसी अन्य स्त्री का उस पर अधिकार सहन नहीं कर सकती हैं, जो उचित ही है, फिर भी यदि पति स्वयं दुराचारी होते हुए भी उनकी अवहेलना करता है, तो वे उसे बरदाश्त नहीं कर सकतीं और उसका उचित बदला लेती हैं। विवश होकर पति को परास्त होना पड़ता है और अपनी विवाहिता पत्नी की ही शरण लेनी पड़ती है।

८. सरिया

प्रसंग—सन्तानोत्पत्ति के लिए गर्भिणी के अनुरोध पर पति का दाई को बुलाने जाना।

हँसत खेलत घर आये, कहाँ सरि खेलि आयो मोरे लाल ।।टेक।।
यक पग धरे हैं डेहरि पै दुसरो पलँग पै,
कहौ धना बेदना मोरे लाल ।।१।।
लाज सरम केरी बात, सकुच केरी बात,
मरद आगे कैसे कहौं मोरे लाल ।।२।।

कमर मोरी करकै, कूल मोरा कसकै,
मरेली पँजरिया की पीर,
सुघरि दाई चाहिए मोरे लाल ।।३।।
—आकाशवाणी, लखनऊ ।

पति जी हँसते-खेलते घर आये । गर्भिणी पत्नी ने पूछा कि सारी कहाँ खेल आये हो । पति ने एक पैर ड्योढ़ी पर रखा और फिर दूसरा पलँग पर एवं पति ने उसका हाल-चाल पूछा—धना ! अपनी वेदना बताओ ।।१।।

पत्नी ने उत्तर दिया—लाज-शर्म की बात है, संकोच की बात है, मैं पुरुष के समक्ष कैसे कहूँ ? ।।२।।

फिर वह अपनी दशा का वर्णन करती है, जिससे पता चलता है कि उसे शीघ्र ही शिशु जन्म लेने वाला है । वह कहती है—मेरी कमर करक रही है, मेरा कूल कसक रहा है, मैं पँजरी की पीड़ा से मरी जा रही हूँ । अतः सुघर दाई चाहिए (तुरन्त एक अच्छी दाई बुलाइए, जो सरलता से बच्चा पैदा कराये ।) ।

विशेष—(१) वास्तव में यह बड़ी सरिया का एक अंश मात्र है ।

(२) एक छोटी सरिया भी होती है, वह दूसरे ढंग से गायी जाती है ।

(३) कभी प्राचीन काल में सन्तान मात्र के होने पर सरिया गायी जाती थी, किन्तु मध्ययुग में जहाँ समाज में अनेक कुप्रथाएँ प्रचलित हो गईं, वहीं एक कुप्रथा 'दहेज' ने भी अपना भयावह रूप धारण कर लिया, जिसके कारण पुत्री का निरादर तो होने ही लगा, उसकी दुर्दशा भी होने लगी । परिणामस्वरूप सम्प्रति पुत्र के जन्म पर ही सरिया गायी जाती है, बिरले ही व्यक्ति पुत्री के जन्म पर खुशी मनाते और सरिया, सोहर गवाते हैं ।

(४) सरिया के बाद ही सोहर, ख्याल आदि गाये जाते हैं ।

६. सोहर (जन्म)

सन्दर्भ—पुत्रोत्पत्ति होने पर हर्ष मनाया जाना ।

निहुरे-निहुरे बनें झकितिऊँ रमइया जी खाँ पउतिऊँ रे ।
रामा, अँचरा मैं छाँड़ि बिछउतिउँ अरज कुछु करितिउँ रे ।।१।।
काहू का दीन्ह्यो दुइ एक, काहू को दुइ चार रे ।
रामा, काहू का मारिन तरसाय, अलेखी नरायन रे ।।२।।
घिउ बिन होम न होंहि, दूध बिन जावर रे ।
रामा, धिय बिन धरम न होंहि, होरिल बिन सोहर रे ।।३।।
भोर होत पुँह फाटत, चिरई चुनचावत
लालन भये सुन्दर रे ।
रामा, बाजन लागीं अनंद बधइयाँ,
गावइँ सखि सोहर रे ।।४।।
—अतर्रा (बाँदा)

एक स्त्री कामना करती है कि मैं विनम्र होकर वन की ओर जाती (या विनम्र होकर खीझती) तो राम जी को (पुत्र रूप में) पाती । फिर मैं अपने आंचल को बिछाती और उनसे कुछ निवेदन करती ।।१।।

हे अलक्षित प्रभु ! किसी को आपने दो-एक और किसी को चार सन्तानें दीं, किन्तु किसी को आपने तरसा मारा ।।२।।

घी के बिना होम नहीं होती और न दूध के बिना जावर बनती है । पुत्री के बिना धर्म नहीं होता और पुत्र के बिना सोहर नहीं गाये जाते ।।३।।

प्रातःकाल हुआ, चिड़ियाँ चहचहाने लगीं, उसी समय सुन्दर पुत्र ने जन्म लिया । फिर क्या, आनंद बधाइयां बजने लगीं और सखियाँ सोहर गाने लगीं ।

विशेष—(१) पुत्र-जन्म से पूर्व सीमन्तोन्नयन संस्कार (सिरवन्त, साँथर) में जो सोहर गाये जाते हैं, उनमें मुख्यतः पुत्र के जन्मोत्सव का वर्णन नहीं होता, शिशु-जन्म से पूर्व की स्थितियों का वर्णन मिलता है। पुत्रजन्म होने पर पुत्र होने तथा सोहर गाये जाने का वर्णन प्रायः रहता है।

(२) वैसे अब तो सीमन्तोन्नयन संस्कार कम घरों में ही होता है और जहां होता भी है, उनमें सोहरों की विषयवस्तु पर ध्यान नहीं दिया जाता, वरन्, सोहर, उठान आदि सोल्लास गाये जाते हैं।

(३) प्रस्तुत सोहर में इस बात का उल्लेख है कि पुत्री के बिना धर्म नहीं होता और पुत्र के बिना सोहर नहीं गाये जाते। इसीलिए बहुत से दम्पति कई पुत्र होने पर भी एक पुत्री की कामना करते रहते हैं और महिलाएँ तो पुत्री के जन्म से ही अपनी कोख को पवित्र मानती हैं। भले ही, पुत्र के जन्म की भाँति उत्साहपूर्वक सोहर न गाये जायें तो क्या।

१०. सोहर

संदर्भ—राम-जन्म तथा कौशल्या की सन्तुष्टि।

हँकरौ न नग्र के नउआ बेगेहि चलि आवहु रे ॥
नउआ, बँभना पंडित लै आवउ,
खोलैं पोथिया पुरान तौ बांचि सुनावैं ॥१॥
कौसिल्या के जन्मे हैं राम सुमिन्त्रा के लछिमन।
रानी केकही के भरत भुआल तिनिउ घर सोहर ॥२॥
कवनि घरी जन्मे हैं राम कवनि घरी लछिमन।
बँभना कवनि घरी भरत भुआल, कवनि घरी सोहर ॥३॥
भली घरी जन्मे हैं राम भली घरी लछिमन।
ए हो, भली घरी भरत भुआल, भलिन घरी सोहर ॥४॥

राजा, बरहा बरिस राम होइहैं तौ बन का सिधरिहैं।
राजा गोड़े मूड़े तनले चदरिया, सोवैं[1] धौरहरि ॥५॥
भितरा से बोलैं कउसिला रानी अड़पि-तड़पि बोलैं।
राजा, छुटल बँझिनिया कै नाउ, भलेन घर सोहर ॥६॥
भलभे से रामा बन जइहैं, लवटि फिरि अइहैं।
राजा, छोड़ि दिअउ मन कै बिरोग, बइठौ चलि कोहबर ॥७॥
—समोधपुर (जौनपुर)

महाराज दशरथ ने कहा कि नगर के नापित को बुलाओ और शीघ्र चले आओ। फिर नापित के आ जाने पर उससे संदेश कहा—"हे नापित ! ब्राह्मण पंडित (यहाँ ज्योतिषी पंडित) को लेकर आओ, मेरे यहाँ राम ने जन्म लिया है। वे अपनी पोथी-पुरान खोलें और पढ़कर सुनायें ॥१॥

कौसल्या के राम ने, सुमित्रा के लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न ने और रानी कैकेयी के भरत ने जन्म लिया है और तीनों घरों (महलों) में सोहर गाये जा रहे हैं ॥२॥

किन घड़ी राम ने जन्म लिया है, किस घड़ी लक्ष्मण ने, किस घड़ी भरत ने और किस घड़ी उन्हें सोहर[2] से निकलना है।

ज्योतिषी ब्राह्मण ने पत्रा (पंचांग) देखकर बयाया कि शुभ घड़ी राम ने जन्म लिया है तथा लक्ष्मण और भरत का जन्म भी शुभ मुहूर्त में ही हुआ है एवं सोहर की भी शुभ घड़ी है ॥४॥

इसके अतिरिक्त ज्योतिषी ने यह भी कहा कि जब राम बारह वर्ष के हो जायेंगे तो वे बन को चले जायेंगे। इतना सुनकर राजा दशरथ महल के ऊपरी कक्ष में जाकर सिर से पैर तक चादर तान कर लेट गये ॥५॥

---

१. पड़ रहे (इस क्षेत्र में सोने का अर्थ लेटने के लिए भी होता है।)
२—सूतिकागृह, जन्म सम्बन्धी प्रसिद्ध गीत

यह जानकर सूतिकागृह के भीतर से रानी कौशल्या आवेश में बोलीं कि 'बन्ध्या' का नाम तो छूटा (अब कोई बन्ध्या तो न कहेगा) और भले घर में सोहर है ।।६।।

उन्होंने आगे यह भी कहा कि —भले ही राम वन को जायेंगे, फिर लौट आयेंगे। हे राजन् ! मन की व्यथा छोड़िये और कोहबर में चलकर बैठिए ।।७।।

११. मंगल

सन्दर्भ—कौशल्या द्वारा राम के जन्म का कारण बतलाना।

नगरी तौ नीकी अजोध्या, सेजरिया राजा दसरथ हो।
कोखिया तौ नीकी कौसिल्या रानी, जहाँ राम जनम लिर्
मचिया तौ बइठी कउसिल्ला रानी, रामइ दुलरावइँ हो।
दुआरे ठाढ़ एक बाँभन पलक नहीं भाँजै तौ बात एक पूछइ हो।
रानी, कउन तपसिया तुम कीह्यो, रमइया फल पायउ हो ॥२॥
माघइ मास नहानिउँ, अगिनि नहिं तापिउँ हो।
बँभना, बिधि कै रहिउँ अतवार, रमइया पुत पायउँ हो ।।३।।
एकादसी रहिउँ बरती, दुआदसी क पारन हो।
बँभना, भूखल बिप्र जेवायउँ, रमइया फल पायउँ हो ।।४।।
जे यह मंगल गावै, गाइकै सुनावइ हो।
ए हो, तरि बइकुंठइ जाइ, सुनइयउ फल पावइ हो ।।५।।
—पेचरुआ (बाराबंकी)

अयोध्या नगरी अच्छी है और उसके राजा दशरथ की सेज भी रम्य है। रानी कौशल्या की कोख उत्तम है जहाँ पुरुषोत्तम राम ने जन्म लिया है। मचिया पर बैठी हुई रानी कौशल्या राम को दुलरा रही हैं। राजद्वार पर खड़ा एक ब्राह्मण अपलक नेत्रों से देखते हुए एक बात पूछता है—हे रानी ! आपने कौन-सी तपस्या की है, जिसके फलस्वरूप राम को प्राप्त किया है ?

रानी कौशल्या उत्तर देती हैं—हे ब्राह्मण ! मैंने माघ मास में प्रातः काल उठकर (सरयू) स्नान किया और अग्नि नहीं तापा (जैसा कि अन्य लोग प्रायः शीतकाल में करते हैं) एवं मैं विधिपूर्वक रविवार का व्रत रही जिससे पुत्र रूप में राम को प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त मैंने एकादशी का व्रत रखा, द्वादशी को उसकी पारणा की एवं भूखे विप्र को भोजन कराया, जिसके फल रूप राम को पाया।

जो इस मंगल (मांगलिक गीत) का गायन करता है, गाकर दूसरों को श्रवण कराता है, वह भवसागर को भली-भाँति तैर कर वैकुण्ठ को जाता है तथा सुनने वाला श्रोता भी इसका फल (सुफल) प्राप्त करता है।

१२. उठान

सोहरों के उपरान्त उठान गाये जाते हैं। इन्हीं के गाने के उपरान्त महिलाएँ अपने-अपने घरों को जाने के लिये उठ पड़ती हैं। इसलिए इन्हें उठान कहते हैं। उठान अधिकतर परिनिष्ठित भाषा में होते हैं, फिर भी अवधी का पुट रहता है।

प्रसंग—सन्तानोत्पत्ति से पूर्व कमर में पीड़ा होना।

करिहइयाँ की पीर, मैं तो अब जान्यों।
बाहर से आये ससुर जी हमरे,
लचक-पचक बहुआ के सरीर ॥मैं०॥
बाहर से आये जेठ जी हमरे,
लचक-पचक छोटी के सरीर ॥मैं०॥
बाहर से आये बलम जी हमरे,
लचक-पचक धनिया के सरीर ॥मैं०॥
बाहर से आये देवर जी हमरे,
लचक-पचक भाभी के सरीर ॥मैं०॥

गुड़ की भेली ससुर जी लाये,
खाय लेव बहुआ पटाय जाय पीर ।।मैं०।।
मेवा की थैली जेठ जी लाये,
खाय लेव छोटी पटाय जाय पीर ।।मैं०।।
फूल की सेजरिया बलम जी लाये,
सोय जाव नाजौ पटाय जाय पीर ।।मैं०।।
भरि पिचकारी देवर जी लाये,
खेलौ भाभी होली पटाय जाय पीर ।।मैं०।।

—दारागंज, प्रयाग

कमर की पीड़ा का मुझे अब ज्ञान हुआ । बाहर से हमारे ससुरजी आये (उन्होंने देखा कि) बहू का शरीर दुबला हो गया है । इसी प्रकार बाहर से हमारे जेठ जी, पति जी तथा देवर जी आये और उन्होंने भी देखा कि उनकी छोटी, पत्नी तथा भाभी क्षीणकाय हो गई है । ससुर जी अपने साथ गुड़ की भेली लाये (और मुझसे कहा)—हे बहू ! इसे खा लो तो पीड़ा शान्त हो जाय । इसी प्रकार मेवे की थैली जेठ जी, फूल की सेज पति जी, पिचकारी भरकर देवर जी लाये और उन्होंने मुझसे कहा—हे छोटी, हे नाजौ, हे भाभी मेवा खा लो, सेज पर सो जाओ एवं पिचकारी लेकर खेलो तो जल्दी पीड़ा शान्त हो जाय ।

१३. उठान

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म होने पर नेग-दान ।

यही अँगनइया बतासा लुटाय देबै, लालन के भये माँ ।।टेक।।
सासू जौ अइहैं चरुवा चढ़इहैं,
अरे यही अँगनइवा कँगना पहिराय देबै, लालन० ।।१।।
जेठनी जौ अइहैं पीपर पिसन का,
अरे यही अँगनइया तिलरी पहिराय देबै, लालन० ।।२।।



ननदी जौ अइहैं छठिया धरन को,
अरे यही अँगनइया झूमर पहिराय देबै, लालन० ।।३।।
देवरा जौ अइहैं बंसी बजइहैं,
अरे यही अँगनइया घड़िया पहिराय देबै, लालन० ।।४।।
सखिया जौ अइहैं मंगल गइहैं,
अरे यही अँगनइया मोहरै लुटाय देबै, लालन० ।।५।।

—पेचरुआ (बाराबंकी)

कोई गर्भिणी अपने विचार व्यक्त करती है—पुत्र के होने पर मैं अपने इसी आँगन में (प्रसन्न होकर) बताशा लुटा दूँगी । जब सासु जी आयेंगी और चरुआ चढ़ायेंगी (तो उसके नेग स्वरूप) इसी आँगन में उन्हें कंगन पहिना दूँगी । जब जेठानी जी पीपर पीसने के लिए आयेंगी तो मैं इसी आँगन में उन्हें तिलरी पहना दूँगी । जब ननद जी षष्ठी देवी की स्थापना के लिए आयेंगी तो मैं उन्हें इसी आँगन में झूमर पहना दूँगी । जब देवर जी आयेंगे और वंशी बजायेंगे तो मैं उन्हें इसी आँगन में घड़ी पहना दूँगी । जब सखियाँ आयेंगी और मंगल गायेंगी तो मैं उनके लिए इसी आँगन में मोहरें लुटा दूँगी ।

विशेष—पुत्रोत्सव में इतनी सहृदयता एवं उदारता होनी ही चाहिए ।

१४. उठान

सन्दर्भ—राम-जन्म पर राजा दशरथ के यहाँ हर्ष का पारावार ।

जलमे हैं राजा राम, राजा दसरथ के घर ।।टेक।।
रानी राजा मिलि बागा लगावैं, कोइली करै बिसराम, राजा०
रानी राजा मिलि समरा खोदावैं, गउवै पियैं जुड़ापानी, राजा०
रानी राजा मिलि गोबरा मँगावैं, झुक धरि बेदिया लिपावैं, राजा०
रानी राजा मिलि चउक पै बइठैं, गोदिया लिहे नंदलाल, राजा०

रानी राजा मिलि ।गउवै संकलपैं, सोने सींग मिढ़ाय, राजा०
रानी राजा मिलि मोहरैं लुटावैं, लूटैं अवध के लोग, राजा०
—पेचरुआ (बाराबंकी)

राजा दशरथ के गृह में राजा राम ने जन्म लिया है। रानी और राजा मिलकर बाग लगाते हैं एवं कोकिला उसमें विश्राम करती है। रानी और राजा मिलकर सागर खुदवाते हैं एवं उसमें गायें शीतल जल पीती हैं। रानी और राजा मिलकर गोबर मँगाते हैं, उसे झुककर पृथ्वी पर रखकर वेदी लिपवाते हैं। रानी और राजा मिलकर चौक पर बैठते हैं और गोद में नंदलाल (यहाँ पुत्र) लिये हुए बैठे हैं। रानी और राजा मिलकर सोने में सींग मढ़वा कर गायें संकल्प करते हैं। रानी और राजा मिलकर मोहरें लुटाते हैं और अवधवासी लूटते हैं।

१५. उठान

प्रसंग—सूतिका गृहिणी (सौर्याही) से जीरा पीने का अनुरोध।

तोहरे होइहै होरिलवा क दूध, सुहागिन जीरा पियो ।।टेक।।
डेवढ़ी खड़ा उनकर ससुरु कहे, बहू ! फुलजीरा पियो ।
जीरा पिये मोहे सरादी होइ जाय, ससुर मैं न पियों ।।१।।
डेवढ़ी खड़ा उनकर सइयाँ कहै, धन फुलजीरा पियो ।
नहीं कइ लेबै दुसरा बियाह, सुहागिन जीरा पियो ।।२।।
खस लोढ़वा मँगाउ, खस सिलिया मँगाउ,
जीजी ! रगरि पिसाउ, जीरा पियब हलोरि-हलोरि,
सवति दुख ना सहब ।।३।।
—पेचरुआ (बाराबंकी)

तुम्हारे पुत्र के लिए दूध होगा, हे सौभाग्यवती, जीरा पियो। ड्योढ़ी पर खड़े हुए उनके ससुर कहते हैं—बहू, सम्पूर्ण जीरा पियो। (सौभा-

ग्यवती उत्तर देती है) जीरा पीने से मुझे सर्दी हो जाती है, ससुर जी मैं जीरा न पिऊँगी ॥१॥

ड्योढ़ी पर खड़े हुए उसके पतिजी कहते हैं—हे धन, सम्पूर्ण जीरा पियो अन्यथा मैं दूसरा विवाह कर लूँगा, अतः सौभाग्यवती ! जीरा पियो ॥ २॥

यह सुनकर पत्नी का दिमाग ठिकाने आ जाता है, तब वह अपनी जेठानी से प्रार्थना करती है कि हे जीजी ! लोढ़ा और सिल मँगा लीजिए और जीरा रगड़ कर पिसाइए, फिर मैं हलोर-हलोर कर (छानकर) जीरा पिऊँगी, किन्तु सापत्न्य दुःख (सौत का दुःख) नहीं सहूँगी ॥३॥

विशेष—कोई भी पत्नी नहीं चाहती कि उसके जीवित रहते उसका पति किसी अन्य स्त्री से विवाह करे जो उचित है एवं स्वाभाविक भी।

१६. ख्याल

उठान तथा ख्याल में थोड़ा-सा अन्तर यह है कि उठान में हिन्दी शब्दों की बहुलता रहती है और ख्याल में उर्दू शब्दों की। 'ख्याल' नाम पड़ने का कारण यही प्रतीत होता है कि सोहर गाते-गाते कोई ख्याल (विचार) किसी गायिका स्त्री के मन में आता है और वह अपने शब्दों में उसे व्यक्त कर देती है।

संदर्भ—शिशु के रोने पर जच्चा का कथन।

मोरी पतली कमर लम्बे बाल रे,
साँवलिया, मैं कैसे करूँगी बच्चा रोवै रे ॥१॥
मैंने सासु बुलाई बड़े सौक से,
मैने चेरुआ चढ़ाई बड़े सौक से,
नेग देने में टेढ़ी नहीं बात है,
साँवलिया मैं कैसे करूँगी बच्चा रोवै रे ॥ २॥

मैंने सखियाँ बुलाई बड़े सौक से,
नेग देने में टेढ़ी नहीं बात है,
साँवलिया मैं कैसे करूँगी बच्चा रोवै रे ।।३।।

—दारागंज, इलाहाबाद ।

पत्नी अपने पति से निवेदन करती है कि 'मेरी पतली कमर है, मेरे लम्बे केश हैं, हे साँवले पति जी ! मैं कैसे करूँगी जब बच्चा रोयेगा ।।१।।

मैंने बड़े शौक से सासु जी को बुलवाया और चेरुआ चढ़ाया, जिसका नेग देना कोई जटिल बात नहीं है, किन्तु बच्चा रोयेगा तो मैं कैसे करूँगी (कैसे नेग दे सकूँगी) ।।२।।

मैंने बड़े शौक से सखियाँ बुलवाई और उनसे मंगल (गीत) गवाये जिनका नेग देना जटिल कार्य नहीं है, किन्तु बच्चा रोयेगा तो मैं कैसे करूँगी (कैसे उन्हें नेग दूँगी अर्थात् नेग न दूँगी) ।।३।।

विशेष—नेग न देने के बहाने कितने चुटीले हैं ।

१७. ख्याल

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म पर ननद का आगमन ।

आई गुलशन में बहार, अँगन मोरे लालन खेलैं ना ।।टेक।।
पाय खबरिया आई ननदिया, करने लगी तकरार ।
रुपया-पैसा एकु न लेबै, लेबै कँगनवा उतारि, अँगन० ।।१।।
अच्छी ननदिया, प्यारी ननदिया, बिनती सुन ले हमार ।
हमरे बलम कै यहै कमाई, अब ना करौ तकरार, अँगन० ।।२।।
भउजी मोरी घर की रानी, भइया साहूकार ।
बिनती-उनती एकु न सुनबै, लेबै कँगनवा उतारि अँगन० ।।३।।
पहिरि कँगनवा नाचै ननदिया, अँगना करै गुलजार ।
जुग-जुग जीवै मोर भतीजा, जानै सकल जहान, अँगन० ।।४।।

—दारागंज, इलाहाबाद ।

कोई पुत्रवती अपने भाव व्यक्त करती है कि गुलशन में बहार आ गई। मेरे आँगन में लालन (लाडला पुत्र) खेलते हैं, यह खबर पाकर ननद आई और तकरार करने लगी। वह कहने लगी कि मैं एक भी रुपया-पैसा नहीं लूंगी, मैं तो भाभी जी, तुम्हारे हाथों से कंगन उतार लूंगी ।।१।।

भाभी निवेदन करती है—हे मेरी अच्छी ननद जी, प्यारी ननद जी ! मेरी विनय सुन लीजिए। मेरे प्रिय पति जी की यही एकमात्र कमाई है (अर्थात् वे अपनी कमाई से मेरे लिए एक मात्र यह कंगनों का जोड़ा ही बड़े प्रेम से लाये हैं), अब इनके लिए तकरार न कीजिए ।।२।।

ननद पुन: कहती है कि हे मेरी भाभी ! आप तो घर की रानी हैं और मेरे भैया साहूकार हैं। मैं आपकी विनती-उनती एक नहीं सुनूँगी और कँगना उतार लूंगी ।।३।।

आखिरकार ननद को कंगन प्राप्त हो गये, जिन्हें पहनकर वह मारे खुशी के नाचने लगी और आँगन को गुलजार करने लगी। वह अपनी शुभकामना व्यक्त करने लगी कि मेरा भतीजा युग-युग जीता रहे, सारे जँवार के लोग उसे जान जायँ। उसकी चतुर्दिक ख्याति हो ।।४।।

विशेष—इस गीत में ननद-भाभी की प्रेममयी नोंक-झोंक द्रष्टव्य है।

१८. रोचना

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म होने पर सूचनार्थ रोचना भेजना।

हँकरौ न बन केरे नउआ, हाली-बूली आवहु हो।
नउआ, रचि-रचि पिसउ हरदिया, लोचन पहुँचावहु हो ।।१।।
पहिल लोचन गुरू ग्यानी, दुसर कउसिल्या रानी हो।
ए हो, तिसरा लोचन लछिमन देउरा, पपीवा ना जनायहु हो ।।२।।

घर से निकरैं राजा राम तौ लछिमन से पूछइँ हो।
लछिमन, भहर-भहर करै मथवा, लोचन कहाँ पायहु हो ।।३।।
हमरिनि भउजी सीतल रानी, बसइँ अंनद बन हो।
भइया, उनहीं के भये नँदलाल, लोचन होहिन आवा हो ।।४।।
घर से निकरे हैं राम तौ हथवा गेड़ुवा लिहे हो।
हाथे कइ दतुइन भुइँ गिरी, गेंड़ुवा ढरकि गवा हो ।।५।।
अगवा के घोड़वा राजा राम तौ पिछवा केरे लछिमन हो।
ए हो, चले हैं सीता का मनावै, अजोध्या क लावइ हो ।।६।।
एक बन गइले, दुसर बन, तिसरे माँ सीता बन हो।
ए जी, खेलइँ लवकुस भाइ, तौ धाय मड़इया गये हो ।।७।।
तुमही मोरी भउजी से भउजी, तुमही ठकुराइनि हो।
भउजी चलतू अजोध्या तुम्हारि, तुमहिं बिन सूनी हो ।।८।।
तुमहिन देवरा से देवरा, तुमहीं बड़ देवरा हो।
देवरा, झूठइ लच्छन लाग तौ कइसे हम चलबै हो ।।९।।
—जामो (सुलतानपुर)

हे वन के नापित। मैं तुम्हारा आह्वान करती हूँ, तुम शीघ्र आओ एवं धीरे-धीरे हरिद्रा पीसो और उससे युक्त रोचना पहुँचाओ ।।१।।

पहला रोचना ज्ञानी गुरु (वशिष्ठ) जी, दूसरा रानी कौशल्या एवं तीसरा रोचना देवर लक्ष्मण को देना किन्तु पापी (राम) को न जताना ।।२।।

घर से राजा राम निकलते हैं और लक्ष्मण को देखकर उनसे पूछते हैं—हे लक्ष्मण ! तुम्हारा मस्तक तो भहर-भहर कर रहा है, रोचना कहाँ से पाया ।।३।।

लक्ष्मण ने उत्तर दिया—हे भ्राता जी ! हमारी भाभी सीता जी आनन्द वन में निवास करती हैं, उन्हीं के आनन्द प्रदान करने वाले पुत्र उत्पन्न हुए हैं; वहीं (वन) से रोचना आया है ।।४।।

इतना सुनकर हाथ में गेड़ुवा लिए हुए राम घर से निकले थे, उनके हाथ की दातून भूमि पर गिर पड़ी और गेड़ुवा का जल लुढ़क गया ।।५।।

फिर आगे के घोड़े पर राजा राम और पीछे के घोड़े पर लक्ष्मण सवार हुए । इस प्रकार सीता जी को मनाने और अयोध्या को लाने के लिए चल पड़े ।।६।।

वे एक वन से, दूसरे वन और फिर तीसरे वन पहुँचे, जिसमें सीता जी का आवास था । वहाँ लव और कुश दोनों भाई खेल रहे थे, (जो राम और लक्ष्मण को देखकर) दौड़कर कुटी में गये (वहाँ उन्होंने सीता से बताया तो वे बाहर निकलीं) ।।७।।

लक्ष्मण ने सीता जी को देखकर विनयपूर्वक कहा—हे मेरी श्रद्धामयी भाभी तथा अयोध्या की स्वामिनी ! आप अपनी अयोध्या के लिए चलतीं (तो कितना अच्छा होता), आपके बिना आपकी अयोध्या सूनी है ।।८।।

सीता जी ने उत्तर दिया—हे मेरे प्रिय और श्रेष्ठ देवर ! मुझे तो वहाँ झूठा ही लांछन लगा तो भला मैं वहाँ कैसे चलूँगी ।।९।।

विशेष—लोकगीतों में सीता-निवार्सन प्राप्त होता है किन्तु निश्चित रूप से कहना कठिन है ।

१९. छट्ठी (षष्ठी)—उठान

शिशु के जन्म के छठे दिन छट्ठी मनाई जाती है और सोहर, उठान आदि लोकगीत गाये जाते हैं ।

सन्दर्भ—षष्ठी के दिन बधाई देने वालों का आना और स्वार्थ-सिद्धि करना ।

आज मोरे लल्ले की छठिया सबै जनी आय गईं रे ।।टेक।।
यक दमड़ी कै सोंठि मँगायों, भरिकै करहिया हरीरा बनायों ।
आइ गईं सास ननदिया तौ थोरा-थोरा पी गईं रे ।।१।।
यक दमड़ी कै मेवा मँगायों, भरिकै करहिया मेवा पकायों ।
आइ गईं देवरा जेठानी तौ थोरा-थोरा दबाय गईं रे ।। २।।
यक दमड़ी कै बेसन मँगायों, भरिकै थारी लड्डू बनायों ।
आइ गईं राँध परोसिन तौ आध-आध बाँटि लिहिन रे ।।३।।
—नेतखेड़ा (रायबरेली)

जच्चा कहती है कि आज मेरे लाड़ले पुत्र की छट्ठी है, जिसमें संबंधित सभी महिलाएँ आ गईं । मैंने एक दमड़ी की सोंठ मँगाई और कड़ाही भर कर हरीरा बनाया । सासू और ननद आ गईं तो थोड़ा-थोडा-थोड़ा करके सब हरीरा पी गईं ।।१।।

मैंने एक दमड़ी का मेवा मँगाया और कड़ाही भर कर मेवा पकाया; देवरानी और जेठानी जी गईं तो थोड़ा-थोड़ा दबा गईं (चोरी से उठा ले गईं) ।।२।।

मैंने एक दमड़ी का बेसन मँगाया और थाली भरकर लड्डू बनाये; आस-पास की महिलाएँ आ गईं तो आधा-आधा बाँट लिया (और इस प्रकार शेष कुछ न बचा) ।।३।।

विशेष—इस लोकगीत में महिलाओं की स्वार्थमयी मनोवृत्ति का अच्छा चित्रण प्रस्तुत किया गया है ।

२०. बरहौं–ख्याल

इसे जन्म से बारहवें दिन होने के कारण कहीं बरहौं और कहीं बरही कहते हैं । इसी दिन पहले-पहले जच्चा-बच्चा सौरि (सूतिका गृह) से बाहर आंगन में लाये जाते हैं और उत्सव मनाया जाता है । प्रथम

बार सौर से बाहर निकलने के कारण इसे निकासन भी कहा जाता है।
इसी अवसर पर अब नामकारण संस्कार भी सम्पादित हो जाता है।

सदर्भ—कृष्ण जन्म की बरही पर उत्सव ।

गोकुल में जनमे कन्हाई तौ बरही मनाई,
चलौ सखी नेगा लै आई ।।टेक।।
ओ बारा जोड़ी नगारा बाजैं, तेरा में बाजै सहनाई, चलो० ।।१।।
ओ बारा जोड़ी पतुरिया नाचैं, तेरा में नाचै नटाई, चलो० ।।२।।
सोंठि सोठउरा सबै कोऊ खाई, नाजौ कै कमर पिराई, चलो०।।३।।
—पुरैना वाजिद (गोंडा)

कृष्ण की बरही में सम्मिलित होने के लिए एक सखी दूसरी सखी से कह रही है कि हे सखी ! गोकुल में कृष्ण ने जन्म लिया है और उनकी बरही मनाई जा रही है। हे सखी ! चलो चलकर हम लोग भी नेग ले आयें। बारह जोड़ी नगाड़े बज रहे हैं और तेरहवें वाद्य में शहनाई बज रही है ।।१।।

बारह जोड़ी वेश्याएँ नृत्य कर रही हैं और तेरहवाँ नट भी नृत्य कर रहा है ।।२।।

सब लोग सोंठ से निर्मित सोठौरा खा लेंगे और कोमलांगी जच्चा की कमर में पीड़ा होगी (उसे खाने के लिए सोठौरा नहीं बचेगा तो और क्या होगा) ।।३।।

विशेष—बरही में सभी लोग स्वार्थलिप्त रहते हैं और कोई भी जच्चा की पीड़ा पर ध्यान नहीं देता। इसी तथ्य को यहाँ उद्घाटित किया गया है।

२१. पसनी

जन्म के पाँचवे महीने अन्नप्राशन संस्कार होता है। इसमें शिशु को

प्रथम बार अन्न खिलाया जाता है, इसीलिए इसे अन्नप्राशन या पसनी कहते हैं। इस अवसर पर पसनी के गीत तथा सोहर गाये जाते हैं। यहाँ एक पसनी गीत प्रस्तुत है :—

सन्दर्भ—पुत्र के अन्नप्राशन संस्कार के अवसर पर उसे खीर खिलाया जाना।

को मोरे चउरा बेसाहै औ गउवै दुहावै।
को मोरे खिरिया बनावै तौ पूता कै पसनिया ॥१॥
बाबा मोरे चउरा बेसाहैं औ गउवैं दुहावैं।
आजी रानी खिरिया बनावैं औ जाँघा बइठावैं,
नाती का खीर चिखावैं तौ नाती कै पसनिया ॥२॥

माँ कहती है—मेरे यहाँ कौन चावल खरीदे और गायें दुहाये। इसी प्रकार कौन खीर बनाये, मेरे पुत्र का अन्नप्राशन (संस्कार) है ॥१॥

पुत्र की ओर से उत्तर दिया जाता है किमेरे बाबा चावल खरीदते हैं और गायें दुहाते हैं। इसी प्रकार आजी रानी खीर बनाती और अपनी जंघा पर नाती को बैठाती हैं, फिर अपने नाती को खीर चिखाती हैं, (क्योंकि) नाती की पसनी है ॥२॥

विशेष—पसनी में पतली खीर खिलाने का प्रचलन है कि शिशु उसे सरलता से खा सकता है और हजम भी कर सकता है। वैसे भी यह थोड़ी ही खिलाई जाती है।

२२. मूँड़न

प्रायः जन्म के तीसरे वर्ष में चूड़ाकर्म संस्कार हो जाता है, जिसमें प्रथम बार सिर के बाल मूँड़ दिये जाते हैं। इस अवसर पर मूँड़न के गीत गाये जाते हैं, जिनमें सोहरों की प्रधानता रहती है। यहाँ एक मूँड़न गीत प्रस्तुत।

सन्दर्भ—चूड़ाकर्म संस्कार के भलीभाँति सम्पादन के लिए छूरे का बनवाना।

झड़ुले हैं आम अमिलिया, जउवन केरे खेत।
वइसेन झड़ुले झड़ुलवा, तौ झड़ुली मुड़ावौ ।।१।।
सभियइ बइठे हैं बाबा उनके तौ ढाढ़े नाती उनके।
बाबा अब मोरी झड़ुली बाढ़ी तौ झड़ुली मुड़ावौ ।।२।।
जौ मैं जनतूँ नाती मोरे, मुड़न तुम्हार।
सोने कै छुरवा गढ़उतूँ तौ मुड़न करउतूँ ।।३।।
सभियइ बइठी आजी, दादी, चाची उनकी।
सोने कै टकवा उतारैं तौ आजी तुम्हारि ।।४।।
—नेतखेड़ा (रायबरेली)

आम और इमली झड़ुले हैं अर्थात् फलों से खूब लदे हुए हैं और जौ के खेत भी। उसी भाँति शिशु भी केशों से युक्त है, उसकी झड़ुली (केशगुच्छ) मुड़ाओ ।।१।।

सभा में उनके बाबा बैठे हुए हैं और उनका नाती खड़ा है। नाती कहता है—हे बाबा ! अब मेरी झड़ुली बढ़ गई है, अतः यह झड़ुली मुड़ाइए ।।२।।

बाबा कहता है—हे नाती ! यदि मैं जानता कि तुम्हारा मुण्डन है तो मैं सोने का छूरा गढ़ाता और तुम्हारा मुण्डन कराता ।।३।।

इसी प्रकार सभा में उनकी आजी, दादी, चाची आदि बैठी हैं। वे सोने के टके न्यौछावर कर रही हैं ।।४।।

२३. छेदन

मूँड़न के पश्चात् कहीं उसी समय, कहीं उसी वर्ष और कहीं पाँचवें वर्ष कर्णवेध संस्कार (कनछेदन) होता है। इस अवसर पर भी

सोहरों की बहुलता रहती है । वैसे छेदन का अपना भी एक गीत होता है, जो निम्नलिखित है—

सन्दर्भ—कर्णवेध संस्कार के सम्पन्न होने के लिए सुई का प्रबन्ध ।

जौ मैं जनतिउँ फलाने रामा छेदन तुम्हार ।
सोने कै सुजिया गढ़उती बाबा तुम्हार ।।

बालक की आजी अपने नाती से कहती है कि हे अमुक नाम के राम (बालक) यदि मैं जानती कि तुम्हारा छेदन है तो तुम्हारे बाबा सोने की सुई गढ़वाते (जिससे) तुम्हार कनछेदन होता) ।

२४. जनेऊ

ब्राह्मण बालक का ८ वर्ष, क्षत्रिय का ११ वर्ष और वैश्य का उपनयन संस्कार १२ वर्ष की अवस्था में करने का विधान है । यह द्विजत्व प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण संस्कार है, किन्तु ईसा की बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध के लिए नाटक मात्र रह गया है एवं किसी प्रकार इसे निबटाया जाने लगा है । पहले इसमें भी कम से कम तीन दिन पूर्व से तैयारी की जाती थी, जिसमें मनदुहा, धनछुहा, तेल, मैन आदि के कृत्य होते थे और फिर चौथे दिन ब्रह्मचारी को जनेऊ (यज्ञोपवीत) पहनाया और गायत्री मंत्र दिया जाता था । तत्पश्चात् अनेक विधि-निषेधों की जानकारी भी दी जाती थी, किन्तु अब अधिकतर लोग विवाह के एक दिन पूर्व यज्ञोपवीत कराने लगे हैं, जिससे यज्ञीय भावना तथा द्विजत्व का नाम ही शेष रह गया है । इस अवसर पर पुरोहित के निर्देशन में आचार्य द्वारा ब्रह्मचारी बालक को यज्ञोपवीत प्रदान किया जाता है और महिलाओं द्वारा 'जनेऊ' गीत गाये जाते हैं । यहाँ एक गीत प्रस्तुत है ।

सन्दर्भ—ब्रह्मचारी के काशी के लिए प्रस्थान करते समय उसे रोकना ।

देहु न मोरी मइया सेतुआ अउर गुर लेड़ुआ,
जाबै कासी बनारस, बेद पढ़न का ।
का करब्या मोरे लाल सेतुआ अउर गुर-लेड़ुआ,
घर ही बाबा तोंहार, घर ही बेद देइहैं ।

—पूरे गंगा मिश्र (सुलतानपुर)

बालक अपनी माँ से निवेदन करता है कि हे माताजी ! आप मुझे सत्तू और गुड़ मिश्रित लड्डू दीजिए, मैं काशी (वाराणसी) वेदाअध्यन के लिए जाऊँगा ।

माँ कहती है—मेरे प्रिय पुत्र ! सत्तू, गुड़ और लड्डू लेकर क्या करोगे ? घर पर तुम्हारे पिताजी (कहीं-कहीं पितामह) हैं ही (जो वेदज्ञ हैं), वे घर पर ही तुम्हें वेद (ज्ञान) देंगे ।

२५. तिलक (कन्या पक्ष)

जब विवाह संस्कार के लिए वाग्दान, वरदेखी या वरिच्छा हो जाती है तो उसके बाद पुरोहित के द्वारा विचारित तिथि, वार, लग्न में वर का फलदान या तिलक चढ़ाने के लिए कन्या पक्ष की ओर से कुछ लोग जाते हैं । उस अवसर पर कन्या पक्ष में भी गीत गाये जाते हैं ।

सन्दर्भ—पिता का वर खोजने से परेशान होकर पड़ रहना और कन्या द्वारा उन्हें धैर्य बँधाना ।

बाबा दुआरे यक झालर पेड़वा, झलरी बहइ बयार ।
तेहितर मोरे बाबा पलँगा बिछाये, बाबा सोये अनचीत ।।१।।

भितरा से बोलीं बेटी कवनि कुंवरि-सुन बाबा अरज हमार ।
जेकरे घर बाबा कन्या कुँआरी, से कइसे सोये अनचीत ।।२।।

अगहर सोजि बेटी मगहर खोज्यों, खोज्यों सब संसार ।
तोहरे जोगे बेटी नाहीं बर पायों, अब बेटी रहेहु कुँआरि ।।३।।
धाउ तू नउआ, धाउ रे बरिया, धाइ खबर लै आउ ।
राजा दसरथ के चारि रे बेटा, चारिउ बाटे कुँआर ।।४।।
साँवर बदन मुख मनु चकोर, अँखियाँ भंवर रतनार ।
चारौ में बाटे उहै बर सुन्दर, वोही बर तिलक चढ़ाउ ।।५।।

-- समोधपुर (जौनपुर)

पिताजी के द्वार पर एक घना पेड़ है, उससे घनी बयार चलती है । इसी वृक्ष के नीचे पिताजी पलँग बिछाये हुए निश्चिन्त सो रहे हैं ।।१।।

घर के भीतर से कुंआरी कन्या बोली—हे पिता जी ! मेरी विनती सुनिये । जिसके घर में (सयानी) कन्या कुआँरी (अविवाहिता) हो, वह कैसे निश्चित होकर सोयेगा । अभिप्राय यह कि पुत्री के विवाह योग्य सयानी हो जाने पर माँ-बाप को उसके विवाह की चिन्ता के कारण नींद नहीं आती ।।२।।

पिता ने उत्तर दिया—हे पुत्री ! मैंने अगहर खोजा और फिर मगहर की खोज की । इतना ही नहीं, वरन् सारा संसार खोज डाला (अपने चारों ओर की जँवार में दूर तक खोज की) किन्तु हे बेटी ! तेरे योग्य मुझे वर नहीं मिला, अतः अब तुम कुआँरी ही रहना ।।३।।

पुत्री ने पिताजी को दुःखी और चिन्तित देखकर अपनी अक्ल दौड़ाई, प्रयास किया और सूझ से काम लिया, जिससे बात बन गई । उसने नाई और बारी को आज्ञा दी कि तुम लोग शीघ्र जाओ और सूचना लेकर आओ । राजा दशरथ के चार पुत्र हैं और वे चारों कुंआरे हैं ।।४।।

उनमें से जो साँवले बदन के हैं जिनका मुख चन्द्र-चकोर की भाँति सुन्दर है और नेत्र रतनारे हैं, उसी वर को तिलक चढ़ाओ ।।५।।

विशेष—इस लोकगीत से यह पता लगता है कि किसी समय पुत्रियाँ अपने पिता को चिन्तित देखकर उसकी चिन्ता दूर करने का प्रयत्न करती थीं, यहाँ तक कि अपने लिए वर खोजने के संबंध में भी उन्हें उचित परामर्श देती थीं।

२६. भिनसरा

तैल पूजन के दिन प्रातःकाल जो गीत गाया जाता है, उसे सुलतानपुर जनपद की कादीपुर तहसील में भिनसरा कहते हैं।

सन्दर्भ—प्रातःकाल शुभकर्म की प्रेरणा।

भोर भये भिनसारा धरम कै जुनिया।
लेउ झँझरा मुख धोओ, लाओ दोहिनिया ॥१॥
ना मोरे धेनु न मोरे ओसरि,
दुधवा तौ आयँ कमोरियन, मठवा कै नारी बहै।
मचियहि बइठी पुरखिन देईं दहिया बिलोरैं ॥२॥

—भेलारा (सुलतानपुर)

माता अपनी पुत्री से कहती है कि प्रातःकाल हो गया, धर्म की बेला हो गई। झझ्झर लो और मुँह धोओ तथा दोहनी लाओ ॥१॥

पुत्री कहती है—न तो मेरे गाय है और न कोई नई भैंस ही है। माता बतलाती है–दूध तो कमोरियों भर कर है, मट्ठे की नाली वहती हैं। मचिया पर गृहस्वामिनी दही को बिलो रही हैं ॥२॥

विशेष—प्राचीन काल में दूध-दही की बहुतायत थी।

२७. तेल

तैल पूजन के दिन मण्डप, कलश, पीठासन, दीपधार, पेरी तथा तेल को विशेष महत्त्व दिया जाता है। तेल को हल्दी में मिलाकर

उबटन तैयार किया जाता है, जिसे वर के शरीप में लगाया जाता है। इससे उसकी त्वचा मुलायम और सुदृढ़ होती हैं।

सन्दर्भ—तेलिन से तेल कोइरिन से हल्दी तथा नाउन से बुकवा देने का आग्रह।

तेलिनि-तेलिनि तुहुँ बड़ी रानी,
कहियाँ कै तेल संचायू आज हो।
हमरे कवन रामा, एस सुकुवारि हो,
सहइ न जानयँ करुअवा कै झार हो ॥१॥
कोइरिनि-कोइरनि तुहुँ बड़ी रानी हो,
कहियाँ कै हरदी सँचायू आज हो।
हमरे कवन रामा, एस सुकुमारि हो,
सहइ न जानयँ हरदिया कै झार हो ॥२॥
नाउनि-नाउनि तुहुँ बड़ी रानी हो,
कहियाँ कै बुकवा सँचायू आज हो।
हमरे कवन रामा, एस सुकुवारि हो,
सहइ न जानयँ बुकवना के झार हो ॥३॥

—भेलारा (सुलतानपुर)

प्रस्तुत लोकगीत में वर की कोमलता दर्शाते हुए उत्तम वस्तुओं द्वारा उनके प्रयोग करने का आग्रह है।

वरमाता तेलिनि से कहती है—हे तेलिनि ! तू बड़ी रानी है, आज कहाँ का तेल संचित कर रखा है। हमारे अमुक नाम के पुत्र ऐसे सुकोमल हैं कि वे कड़ुए तेल की झार को सहन नहीं कर सकते ॥१॥

वरमाता कोइरिन से निवेदन करती है—हे कोइरिन ! तू भी बड़ी रानी है, आज कहाँ की हरिद्रा संचित कर रखी है। हमारे अमुक नामक पुत्रजी ऐसे सुकोमल हैं कि वे हल्दी की झार को बरदाश्त नहीं कर सकते ॥२॥

वरमाता नापित-पत्नी से कहती है—हे नाउन ! तू भी बड़ी रानी है, आज कहाँ का बुकवा (उबटन) संचित कर रखा है। हमारे अमुक पुत्र इतने सुकोमल हैं कि वे उबटन की झार नहीं सहन कर पाते ॥३॥

विशेष—इस लोकगीत में वर की कोमलता का भी पता चलता है।

२८. सांझ

सायंकाल सन्ध्या-वन्दन हेतु लोकगायिकाएँ साँझ गीत गाती हैं।

प्रसंग—सन्ध्या से वर-पक्ष के लिए आशीर्वाद की याचना।

तुहुँ हो संझा गोसाईं हाथ चँवर लिहे।
तुहूँ सबै दिहा असीस, दुलहिन दुलहा चिरंजू ॥

—भेलारा (सुलतानपुर)

हे सन्ध्या देवी ! आप हाथ में चँवर ग्रहण किये हुए हैं। आप सब प्रकार के आशीर्वाद देना, जिससे दुलहिन और दूल्हा चिरंजीवी हों।

मैन (मातृपूजन)

विवाह से एक दिन पूर्व मातृपूजन होता है, जिसके अनेक कार्यक्रमों में कलश, देवतापूजन, वर्जन, सिलपोहनी, बरा, पितर निमन्त्रण, जैंती जैंवाई होते हैं।

२९. सिलपूजन (कन्यापक्ष में)

सिलपूजन को ही कई स्थानों में सिलपोहनी कहा जाता है। इसके लिए सायंकाल पाँच या सात सुहागिन स्त्रियाँ अपने पतियों के साथ प्रायः गाँठ जोड़कर बैठतीं और सिल पर उड़द की दाल पीसती हैं। उस समय अन्य स्त्रियाँ सिलपोहनी का गीत गाती हैं।

सन्दर्भ—सिल पर पीसने से सम्बन्धित यह तथ्य कि वधू पीसने से थक जाती है, जिस पर उसकी सास उसे ठेना (व्यंग्य) देती है, जिस पर वधू की माँ उसके साथ एक सेविका भी भेज देती है।

सेर भर उरदी, सवइया भरि दालि,
पीसन बइठीं राजा कै धेरिया, पहुँचा पिराय।
जौ तोरा बहुआ पहुँचा पिराय,
अपने बाबइया जिउ से चेरिया मँगाउ।
नाहीं तौ बहुआ के नइहर पहुँचाव ॥१॥
भितरा से निकसी हैं धेरिया कै माई—
नाहीं हमरे देवर देवरनिया, नाहीं पुता बहुआरि,
केकर डँड़िया दुअरवा भइली ठाढ़ि ? ॥२॥
परदा के भीतर से बेटी जे बोलैं—
नाहीं माई देवर देवरनिया, नाहीं पुता बहुआरि,
तोहरे धेरिया कै माई ! डंड़िया बाटी ठाढ़ि ॥३॥
की आरे बेटी चोटी चटनिया, की आरे लोलार,
कउन गुनहिया बेटी नइहर पहुँचाव ? ॥४॥
नाहीं रे माई ! चोटी चटनिया, नाहीं रे लोलार,
सेर भरि उरदी सवइया भरि दालि।
पीसन बैठिउँ माई रे पहुँचा पिराय,
सासूजी बोलली अपने नइहर से चेरिया बोलाउ ॥५॥
एकै चेरियवा नाहीं बेटी, दुइ लै जाउ,
एही गोड़े बेटी ससुरे पहुँचाउ ॥६॥

—तारतरे (जौनपुर)

सेर भर उड़द और सवा सेर दाल पीसने के लिए राजा की पुत्री बैठी, किन्तु उसका हाथ दर्द करने लगा। यह बात उसने अपनी सास रानी से कही, तो उससे तुरन्त व्यंग किया—हे बहू ! यदि तुम्हारे हाथ

में पीड़ा होती है तो अपने पिताजी से कहकर एक सेविका मँगा लो, नहीं तो बहू को उसके मायके पहुँचाओ ॥१॥

हुआ यही कि सास ने बहू को उसके मायके भेज दिया। घर के भीतर से दुहिता की माँ निकली। उसने दरवाजे पर डोली देखकर कहा—नहीं मेरे कोई देवर है, न देवरानी और न ही पुत्रवधू, फिर यह किसकी डोली मेरे दरवाजे पर आ खड़ी हो गई है ?॥२॥

यह सुन पर्दे के भीतर से बेटीजी बोलती हैं—हे माँ ! आपके न ही देवर है, न देवरानी और न ही पुत्रवधू, हे, माई ! यह तेरी दुहिता की डोली खड़ी है ॥३॥

माँ ने कहा—हे बेटी ! क्या तू चटोरी है या लड़ाई-झगड़ा करने वाली। आखिर किस दोष के कारण बेटी को नैहर पहुँचाया गया है ? ॥४॥

पुत्री ने उत्तर दिया—हे माँ ! तुम्हारी पुत्री न तो चटोरी है और न ही लड़ाई-झगड़ा करनेवाली। बात यह हुई कि सेर भर उड़द और सवा सेर दाल पीसने के लिए मैं बैठी तो मेरा हाथ दर्द करने लगा। मैंने सास जी से अपना कष्ट निवेदित किया तो वे बोलीं—अपने नैहर से सेविका बुलाओ ॥५॥

बेटी की उदारमना माँ ने तुरन्त कहा—हे बेटी ! एक ही सेविका नहीं, दो ले जाओ, और इसी समय ससुराल पहुँचाओ ॥६॥

विशेष—अधिकांश सासें बहू को कष्ट देतीं और ऐसे ही व्यंग-बाणों से बहू के मर्म को वेधती रहती हैं।

बिआह

विवाह संस्कार भी उपनयन संस्कार की भाँति कई दिनों में सम्पन्न होता है। इसमें भी मनछुहा-अनछुहा, तेल, मैन आदि के विविध लोकाचार होते हैं एवं विवाह के दिन तथा उसके दो-तीन दिन बाद तक

कार्यक्रम होते रहते हैं। इन अवसरों पर लोकवधुएँ अपने कोकिल कण्ठ से गीत गाती हैं।

३०. वर-स्नान (महरा द्वारा)

विवाह के दिन कहार वर को स्नान कराता है तो महिलाएँ बड़े उत्साह से लोकगीत गाती हैं।

सन्दर्भ—वर को नहलाने के सम्बन्ध में व्यवस्था।

को मोरे सगरा खनावै, घाट बन्हावै।
केकर भरइँ कहार दुलहे नहुवावैं ॥१॥
बाबा फलाने रामा सगरा खनावैं, घाट बन्हावैं।
माई के भरइँ कहार, दुलहे नहुवावैं ॥२॥
दसरथ सगरा खनावैं, तौ घाट बन्हावैं।
कउसिला देई के भरइँ कहार रमइया नहुवावैं ॥३॥

—भेलारा (सुल्तानपुर)

दूल्हे की माँ कहती है—मेरे यहाँ कौन ऐसा है जो सगरा खुदाये, घाट बँधाये, किसके कहार पानी भरें और दूल्हे को नहलायें ॥१॥

कोई स्त्री उसे सान्त्वना देती है—अमुक वर-पिता सगरा खुदायें, घाट बँधायें, माता के कहार पानी भरें और दूल्हे को नहलायें ॥२॥

दशरथ सगरा खुदवाते हैं और उस पर घाट बँधवाते हैं। कौशल्या देवी के कहार उससे पानी भरते हैं और राम को नहलाते हैं ॥३॥

विशेष—(१) इस लोकगीत में लोकगीतकार साधारणीकरण से विशिष्टीकरण की ओर उन्मुख हो गया है।

(२) अवधी क्षेत्र के सभी बालक राम और बालिकाएँ सीता मानी जाती हैं, कहीं-कहीं कृष्ण, रुक्मिणी, राधा और सुभद्रा भी।

३१. जामा पहनाने तथा पाग बाँधने से सम्बन्धित लोकगीत

सन्दर्भ—स्नानोपरान्त वर को वस्त्र पहनाये जाते हैं। उनके वर्णन अत्यन्त हृदयग्राही होते हैं।

जोड़वा के भुखला दुलहे रामा,
बाबू, के तोहरा जोड़वा सँवारै।
तौ जोड़वा माँ हीरा लागे, मोती लागे।
माई तुम्हारि सतभतरी, सोनरवा साथे करत है मिताई।
तौ जोड़वा माँ हीरा लागे, मोती लागे ॥१॥
मैं तोहसे पूछउँ दुलहे रामा, बाबू के तोहरा जोड़वा सँवारै,
तौ जोड़वा माँ हीरा लागे, जोड़वा माँ मोती लागे।
माई तुम्हारि सतभतरी, दरजिया संग करत है मिताई,
तौ जोड़वा माँ हीरा लागे, जोड़वा माँ मोती लागे ॥२॥
बाबू, तोहरा फूफा जोड़वा सँवारैं, औ पगिया लै बाँधैं,
तौ जोड़वा माँ हीरा लागे, जोड़वा माँ मोती लागे ॥३॥
बलावौ दुलहे के बाबा का, लावैं हथिनिया छोड़ाइ हो।
बलावौ दुलहे की आजी का, लावैं मोहरैं दै डारैं ॥४॥

—भेलारा (सुल्तानपुर)

लोकगायिका कहती है—हे वैवाहिक वस्त्र पहनने के अति इच्छुक वर जी! कौन तुम्हारे वस्त्रों का साज-श्रृंगार करे, वस्त्रों में तो हीरे और मोती लगे हुए हैं। फिर वह वर से हँसी-मजाक करते हुए उसका उपहास करती है—तुम्हारी माँ सैकड़ों पुरुषों की स्त्री है; वह स्वर्णकार के साथ मित्रता करती है, इसीलिए वस्त्रों में हीरे-मोती लगे हुए हैं ॥१॥

हे वर जी! मैं तुमसे पूछती हूँ—तुम्हारे वस्त्र कौन सज्जित करे

कि उनमें हीरे-मोती लगे हुए हैं । तुम्हारी माँ शतभर्तृका (सैकड़ों को अपना भर्तार बनाने वाली) हैं, वह दर्जी से मैत्री करती है, इसी से वस्त्रों में हीरे-मोती लगे हुए हैं ।।२।।

हाँ, तुम्हारे फूफा जी वस्त्र सवारें और पाग बाँधें, क्योंकि वस्त्रों में हीरे-मोती लगे हुए हैं ।।३।।

वर के बाबा को बुलाइए, वे (फूफा को नेग स्वरूप देने के लिए) हस्तिनी छुड़ा लायें (जो हस्तिशाला में बँधी हुई है) । वर की आजी को (भी) बुलाइए, वे मोहरें लायें और नेग के रूप में (सूप में) डालें ।।४।।

३२. नाखुर

कहीं पाग बँध जाने के बाद नाखुर या नहछू किया जाता है, कहीं-कहीं वस्त्र पहनने से पहले ही नहछू होता है ।

सन्दर्भ—नापित-पत्नी द्वारा वर के पैरों के नाखून काटना तथा महावर लगाना ।

घर-घर फिरइ नउनिया गोतिनी बोलावै ।
रामलला कै नहछू गोतिनि सबय आवैं ।।१।।
केऊँ दीन्हा अँगुठी मुँदरिया, केऊँ दीन्हा रूप ।
केऊँ दीन्हा रतन पदारथ भरिगे हैं सूप ।।२।।
नउआ जे झगरैं औ बिनवै ई सब थोर ।
रामा ललन कै नहछू तौ लेबै हम घोड़ ।।३।।
चुप रह ये नउआ चुप रह, देबै हम घोड़ ।
रामा बियहि कै लउटिहैं देबै हम घोड़ ।।४।।
एहि नउआ कै अलहन पायेसि घोड़ ।
लेइ रे बाँधेसि पिछवरवा तौ लै गये चोर ।।५।।

—जोरई खाँउँबीरा (वाराणसी)

नापित-पत्नी घर-घर जाकर समगोत्रीय स्त्रियों को बुलाती है कि रामलला का नहछू है, सभी समगोत्रीय स्त्रियाँ आयें ॥१॥

स्त्रियाँ आईं। किसी ने अंगुष्ठीय मुद्रिका दी, किसी ने रुपये (या चाँदी) और किसी ने विविध रत्न-पदार्थ दिये, जिससे सूप भर गये ॥२॥

नापित झगड़ता है और विनती करता है कि यह सब थोड़ा है, कम है। रामलला के नहछू में मैं तो घोड़ा लूंगा ॥३॥

वरपिता ने उसे आश्वासन दिया—हे नाई! चुप रह, मैं तुझे घोड़ा दूँगा, किन्तु राम विवाह करके जब लौटेंगे, तब घोड़ा दूंगा ॥४॥

इस नाई की तकदीर, इसने घोड़ा पाया। उसे लेकर उसने अपने पिछवाड़े की तरफ बाँध दिया तो चोर (उसे) ले गये ॥५॥

विशेष—उपर्युक्त नहछू में तथ्यात्मक वर्णन तो है ही, साथ ही अन्त में इस ओर भी इंगित किया गया है कि किसी से माँग कर पाई हुई वस्तु ऐसे ही चली जाती है और व्यक्ति हाथ मलता रह जाता है।

३३. बिआह (कन्या)

कन्या के विवाह में उससे सम्बन्धित लोकगीत गाये जाते हैं, जिनमें प्रायः पिता और पुत्री का वार्तालाप मिलता है। लगता है कि प्राचीन काल में पुत्रियाँ वर-चयन में अपने पिता को उचित सम्मति देती थ।

सन्दर्भ—समय आने पर अपने आप बिना किसी पूर्व तैयारी के विवाह का हो जाना।

पुरुब देस से आई बिहतुइया, बैठीहिं जाजिम बिछाइ।
की रे बिहतुइया खाबू खाँड़ चिरौंजी, की रे लुटइबू
मोरा देस ॥१॥

ना हम खाबइ खाँड़ चिरउँजी, ना रे लुटउबै तोरा देस ।
बिधि कै पठई हम बिहतुइया, तोरे घर रचा है बियाह ।।२।।
ना मोरे तेलवा रे ना मोरे नोनवा, ना रे हरदिया कै गाँठि ।
मटिया कै चुल्हिया बनवइउ न जानेउ, केहि बिधि रचेउ
बियाह ।।३।।
हम देबै तेलवा रे हम देबै नोनवा, देबै हरदिया कै गाँठि ।
मटिया कै चुल्हिया बनइ हम देबै, तोरे घर रचा है बियाह ।।४।।
—सरैंया (सुल्तानपुर)

पूर्व देश से बिहतुइया आई और जाजिम बिछाकर बैठ गई । कन्या की माता ने उससे पूछा—हे बिहतुइया ! आप खाँड़-चिरौंजी खाएँगी या देश लुटाएँगी ।।१।।

बिहतुइया ने उत्तर दिया—न मैं खाँड़-चिरौंजी खाऊँगी और न ही तेरा देश लुटाऊँगी । मैं तो विधि (विधाता) की भेजी हुई बिहतुइया हूँ, तेरे घर विवाह रचा है ।।२।।

कन्या-माता निवेदन करती है—न मेरे यहाँ तेल है, न नमक और न हरिद्रा-ग्रन्थि । मिट्टी का छोटा चूल्हा भी बनाना नहीं जानती, फिर किस प्रकार विवाह रच दिया है ? ।।३।।

बिहतुइया उसे आश्वासन देती है—मैं तेल दूँगी, नमक दूँगी और हरिद्रा-ग्रन्थि भी । मैं मिट्टी की चुल्हिया बना दूँगी, तेरे घर विवाह रचा है ।।४।।

विशेष—यह बिहतुइया और कोई नहीं, केवल विधाता की विवाह सम्बन्ध करने वाली एक शक्ति है । अभिप्राय यह है कि जब भावी होती है तो न चाहते हुए भी विवाह-सम्बन्ध हो जाता है और फिर व्यवस्था बन ही जाती है ।

३४. बिआह

सन्दर्भ—विशिष्ट बिबाहों का संक्षिप्त वर्णन ।

राजा जनक जी के चारि बिटियवा, चारिउ बार कुँवारि ।
चारौ के बियहबै एक मड़वना, एकहि लगन धराइ ।।१।।
मन्दोदरी के बियहबै लंका के राजा, रुकिमिनि बियहबै गोपी काँध ।
गौरा के बियहबै इसरी महादेव, सीता के बियहबै सिरी राम ।।२।।

डंक लै आवैं लंका के राजा, मुरली लियावैं गोपी काँध ।
डमरू लियावैं इसरी महादेव, सोलहौ बाजन सिरी राम ।।३।।
बेंदी लियावैं लंका के राजा, झुमकी लियावैं गोपी काँध ।
बिछिया लियावैं इसरी महादेव, सोलहौं गहन सिरी राम ।।४।।
—रहाइसपुर (इलाहाबाद)

राजा जनक के यहाँ चार बालिकाएँ हैं और चारों ही बालिकाएँ कुमारी हैं । चारों का एक मंडप के नीचे विवाह करूँगा, सबकी एक ही लग्न रखवा कर ।।१।।

मन्दोदरी का विवाह लंका के राजा रावण के साथ करूँगा, रुक्मिणी का गोपीकृष्ण के साथ, गौरी का ईश्वर (महादेव) के साथ और सीता का श्रीराम के साथ विवाह करूँगा ।।२।।

लंका के राजा डंका, गोपीकृष्ण मुरली तथा ईश्वर महादेव डमरू लेकर आते हैं, किन्तु श्रीराम सोलहों प्रकार के वाद्य ले आते हैं ।।३।।

लंका के राजा माँग बेंदी, गोपीजनवल्लभ कृष्ण झुमकी तथा ईश्वर महादेव बिछिया लेकर आते हैं, किन्तु श्रीरामचन्द्र सोलहों प्रकार के गहने ले आते हैं ।।४।।

टिप्पणी—लोकगीतकार की दृष्टि में राजा जनक के यहाँ चार कन्याएँ हैं, जो क्रमशः मन्दोदरी, रुक्मिणी, गौरी तथा सीता हैं । वह इतना सीधा-सादा है कि वह उनमें तथा सीता की अन्य बहिनों में कोई अन्तर नहीं करता । उसके लिए सभी एक ही जैसी हैं ।

३५. बिआह (वर)

वर के विवाह से सम्बन्धित गीतों का वर्ण्य विषय कुछ भिन्न रहता है।

सन्दर्भ—राम का विवाह करने के लिए जाना एवं सास से वार्तालाप।

राम तौ चले हैं बियाहन, बहुबिधि बाजै।
उपरा सुगना मँड़राय, हमहूँ जावै ब्याहन ॥१॥
रिखियन खबर जनावौ, कहाँ दल उतरै।
पनवन छाई चउपारि, हुएँ दल उतरै ॥२॥
थार भरि मोती लिहे ठाढ़ि सुनयना।
केहि की मैं अरती उतारौं सबै दल सुन्दर।
ओढ़े हैं पीत-पितम्बर उनहीं की अरती
उतारौ उनहीं बर सुन्दर ॥३॥
थोरी करैं अरती बहुत करैं बिनती।
लाला, हमरी धिया लरिका अजान, कुछउ नहीं जानैं ॥४॥
जौ तोरी धिया लरिका अजान, कुछउ नहीं जानैं।
सासू हमहूँ कमलदल फूल, दुनउँ जने बिहँसब ॥५॥

—लखापुर (बाराबंकी)

राम विवाह के लिए चलते हैं, बहुत प्रकार के वाद्य बज रहे हैं। ऊपर तोता मँडरा रहा है, वह कहता है कि मैं भी विवाह करने के लिए जाऊँगा ॥१॥

ऋषियों को सूचना दो कि दल कहाँ उतरे ? पानों से चौपाल छाई हुई है, वहीं दल उतरे ॥२॥

रानी सुनयना थाल भर मोती लिए हुए खड़ी हैं। वे कहती हैं—मैं किसकी आरती उतारूँ, सारा ही दल सुन्दर है। एक स्त्री परामर्श

देती है कि जो पीताम्बर ओढ़े हुए हैं, उन्हीं (राम) की आरती उतारो, वे ही सुन्दर वर हैं ।।३।।

सुनयना देवी आरती तो कम करती हैं, किन्तु विनती बहुत करती हैं। वे कहती हैं कि हे लाल ! मेरी पुत्री अभी अज्ञ बालिका ही है, जो कुछ भी नहीं जानती ।।४।।

राम उत्तर देते हैं—आपकी पुत्री अज्ञ बालिका है, कुछ भी नहीं जानती, तो हे सास जी ! मैं भी कमल के कोमल फूल के समान हूँ, दोनों लोग हँसेंगे-खिलेंगे ।।५।।

विशेष—इस लोकगीत से राम और सीता के विवाह और उनकी कोमलता तथा अबोधता पर प्रकाश तड़ता है।

३६. विआह (कन्या)

सन्दर्भ—पिता का पुत्री के विवाह का संकल्प करना और पुत्री का उसे उलाहना देना ।

बाबा के अँगने चन्दन बड़ा रुखवा, पतवन झालरि लागि ।
तेहि तर बाबा बेटी संकल्पइँ, बेटी कँवर धरे ठाढ़ि ।।१।।
खँभवा पकरि के बोलैं बेटी कवनि देई,
लाखौ जियरा जिमइँ बाबा चउपरिया,
यक मोर जियरा भारु ।।२।।
तब तू रहिउ बेटी धान सिन्हौना,
अब तौ भइउ बेटी फूटी के भतवा,
मोरे बूते राखि न जाय ।।३।।
भइया औ बहिनी एकै कोखी जनमी,
सुनु बाबा बचन हमार।
भइया का लिखा बाबा लाली चउपरिया,
हमका लिखा बनबास ।।४।।

—पूरे कँधई पाण्डेय (सुलतानपुर)

बाबा के आँगन में चन्दन का बिशाल वृक्ष है, पत्तों की झालर लगी हुई है। उसी के नीचे बाबा बेटी का संकल्प कर रहे हैं, बेटी कमर पर हाथ रखे हुए खड़ी है ॥१॥

खम्भा पकड़ कर अमुक बेटी कहती है—बाबा की चौपाल में लाखों जीव जीवित रहे हैं, जीते हैं, उनमें से मेरा जीव ही भारस्वरूप है (जो वे मेरा विवाह कर मुझे घर से बाहर करना चाहते हैं) ॥२॥

पिता कहता है—हे बेटी, पहले तो तुम सीन्हे भात की भाँति थीं, किन्तु अब तो फूटी का भात हो, जिससे मेरे द्वारा रखा नहीं जा सकता। मेरे सामर्थ्य के बाहर है ॥३॥

पुत्री कहती है—भाई और बहन ने एक ही कोख से जन्म लिया है, हे बाबा! मेरे वचनों को सुनो—भैया को तो (विधाता ने) सुन्दर लाल चौपाल लिखा और मेरे भाग्य में वनवास। (ससुराल का जाना मानो वनवास के समान है, जहाँ कष्ट ही कष्ट झेलने पड़ते हैं) ॥४॥

३७. बिआह

सन्दर्भ—दुलहिन तथा दूल्हे का वार्तालाप एवं हास-परिहास।

सँझइन मोरे बाबा उइगै तरइया, सुकवा उवै आधी राति।
अँगने कै पलँग भीतर लै दासा, जहाँ रहैं दुलरू दमाद ॥१॥
दुलहिन दुलहा यक मत कीन्हा, सुन दुलहिन मोरी बात।
तोहरे बाबा जी के सोने कै कटोरवा, उहै लेबै दइजा लगाय ॥२॥
दुलहिनि दुलहा अस मत कीन्हा, सुनु दुलहा मोरी बात।
हमरे बबइया जी के सोने कै कटोरवा, पियइँ भइया वो माँ दूध।
दुधवा पियत भइया मचली पसरिहैं, मँगिहैं बहिनी तोहारि ॥३॥
एतनी बचन जब सुने हैं दुलहे रामा, घोड़े पीठि भये असवार।
जेकरे बहिनिया का हम चढ़ि बियहा ते माँगैं बहनी हमारि ॥४॥

सभवा से उठे हैं भइया कवन रामा, हड़पि-तड़पि बोलैं बात।
चाँद-सुरुज अस बहिनी संकल्पा, खोरवा कवनि बड़ी बात ॥५॥
—कुँड़वा (सुलतानपुर)

सायंकाल तारे निकल आये, किन्तु शुक्र अर्धरात्रि में निकलता है। जो पलंग आंगन में पड़ा हुआ था, उसे ले जाकर भीतर बिछाया, जहाँ प्रिय दामाद जी रह रहे हैं ॥१॥

दुलहिन तथा दूल्हे ने एक मत किया। दूल्हे ने कहा—हे दूल्हन! मेरी बात सुनो! तुम्हारे पिताजी के पास स्वर्णनिर्मित कटोरा है, उसे ही दायज लगा लूँगा (अर्थात् दहेज के रूप में ले लूँगा) ॥२॥

तब दूल्हन ने दूल्हे से कहा—हे दूल्हाजी! मेरी बात सुनो। मेरे पिताजी के पास सोने का कटोरा है, उसमें मेरा भाई दूध पीता है। (यदि तुम उसे ले लोगे तो) दूध पीते समय मेरा भाई हठ करेगा और तुम्हारी बहिन को माँगेगा ॥३॥

दूल्हे ने जब इतनी बात सुनी तो घोड़े की पीठ पर सवार हो गया। उसने कहा—जिसकी बहिन को मैंने ब्याह लिया, वही मेरी बहिन को माँगेगा ॥४॥

इतना सुनकर सभा में बैठा हुआ भाई उठ खड़ा हुआ और तड़प कर बोला—मैंने चन्द्र-सूर्य जैसी अपनी बहिन का संकल्प कर दिया (उसे संकल्प पूर्वक वर को सौंप दिया) तो कटोरा कौन बड़ी बात है? (वह तो मैं दे ही दूँगा) ॥५॥

टिप्पणी—इस लोकगीत से यह पता चलता है कि किस प्रकार वर दहेज के लिए हठ करता है, किन्तु समझदार बहिन अपने भाई के हित को भी महत्त्व देती है, उसे अपने छोटे भाई के हित का बराबर ध्यान बना रहता है। बड़ा भाई तो बहिन के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए उद्यत रहता है।

३८. बँदरा

दूल्हे को बँदरा, बनरा या बन्ना एवं दुलहिन को बँदरी, बनरी या बन्नी कहा जाता है। अतएव इनसे सम्बन्धित लोकगीतों के एक प्रकार को बँदरा या बन्नी कहते हैं। ये प्राय: वर पक्ष से बरात के प्रस्थान के समय एवं वधू के आ जाने पर गाये जाते हैं।

सन्दर्भ—सीता के विदा हो जाने पर जनक का दु:खी होना और पत्नी को धैर्य बँधाना।

आयेगा हरियाला बँदरा, मैं तेरी उरमाल रे ।।टेक।।
पहिला डंका अवधपुर बाजा, दुसरा जहानाबाद।
तिसरा डंका जनकपुर बाजा, राजन के दरबार रे ।।१।।
को रे लुटावा झिनका के चाउर, को रे बँगला पान।
को रे लूटा सिया बँदरी का, बरहौ बाजन बजाय रे ।।२।।
जेठ लुटावा झिनवा के चाउर, ससुर लुटावा बँगला पान।
राजा ने लूटा सिय बँदरी का बरहौं बजन बजाय रे ।।३।।
डोला पठै जब लउटे जनक जी, घर अँधियार सूत।
फाटै धरती बजरासन कन्या जलम नहि होइ रे ।।४।।
भीतर से बोली रानी सुनयना, धरौ मनही मां धीर।
आपन पठयौ परार लै आयो, यह दुनिया कै रीति रे ।।५।।

--सेंदुरवा (सुलतानपुर)

हरियाला बन्ना (मजेदार वर) आयेगा। मैं तो तेरी ग्रीवा की माला हूँ। पहला डंका अवधपुर में बजा, दूसरा जहानाबाद में और तीसरा डंका जनकपुर में आकर राजा के दरबार में बजा ।।१।।

किसने झिनवा के (महीन) चावल लुटाये, किसने बँगला पान और किसने बारहों बाजे बजाकर अर्थात् धूमधाम से सीता को लूटा (ब्याह लिया) ।।२।।

ज्येष्ठ ने झिनवा के चावल लुटाया, श्वसुर ने बँगला पान और राजा ने बारहों बाजा बजाकर सीता वधूटी को लूट लिया ॥३॥

डोला विदा कर जब जनकजी लौटे तो घर में उन्हें अँधेरा-सा लगा और वे सो रहे (यह वास्तविक सोना नहीं था, वरन् चिन्ता में पलँग पर पड़ रहना था) और सोचने लगे, धरती फट जाय, बज्रपात हो जाय, किन्तु कन्या का जन्म न हो ॥४॥

अन्तःपुर से रानी सुनयना बोलीं—मन में धैर्य रखो। अपना भेजकर पराये का ले आया जाता है। यही सांसारिक रीति है ॥५॥

टिप्पणी—इससे पता चलता है कि पति के दारुण दुःख में पत्नी उसे समझाकर धैर्य बँधाया करती थी।

३८. बन्ना

सन्दर्भ—बन्ने का खो जाना।

कोठे बरोठे की गलिया हो, कहूँ बन्ना हेरान ॥टेक॥
बन्ना हेराने बागा बगइचा, होइगे मलिनिया के बस माँ ॥१॥
बन्ना हेराने ताला तलइया, होइगे धोबिनिया के बस माँ ॥२॥
बन्ना हेराने कुअना जगतिया, होइगे महरिनिया के बस माँ ॥३॥
बन्ना हेराने महला दुमहला, होइगे पतुरिया के बस माँ ॥४॥
बन्ना हेराने सेजा सुफेदी, होइगे ननदिया के बस माँ ॥५॥

—सेंदुरवा (सुलतानपुर)

कोठे-बरोठे की बहुत-सी गलियाँ हैं, कहीं वर खो गया है। वरजी बाग-वाटिका में खो गये और मालिन के वश में हो गये ॥१॥

वरजी ताल-तलैया में खो गये और धोबिन के वश में हो गये ॥२॥

वरजी कुएँ की जगत पर खो गये और महरिन के वश में हो गयें ॥३॥

वरजी महला—दुमहला में खो गये और वेश्या के वश में हो गये ।।४।।

टिप्पणी—इस लोकगीत में हास्य-व्यंग का चित्रण है ।

४०. बन्नी

सन्दर्भ—वधू विदाई ।

बन्नी चली ससुराल, टपाटप आसू चुवैं ना ।।टेक।।
बन्नी के बाबा डोला कस दिया है,
आजी कै जियरा उदास, टपाटप० ।।१।।
बन्नी के दादा डोला कस दिया है,
दादी कै जियरा उदास, टपाटप० ।।२।।

—धौरहरा (प्रतापगढ़)

वधू श्वसुरालय चली (विदा हुई) तो उसके नेत्रों से टपाटप आँसू गिरने लगे ।

बन्नी के बाबा ने डोला तैयार करवा दिया; आजी का जी उदास है, टपाटप आँसू गिरने लगे ।।१।।

बन्नी के दादा ने डोला कस दिया तो दादी का जी उदास हो गया और उनके नेत्रों से आँसू गिरने लगे ।।२।।

टिप्पणी—कन्या का विवाह होने के बाद उसकी विदाई का समय आता है । विवाहिता कन्या डोले में बैठा दी जाती है, जो प्राय: रोती रहती है । उस समय सभी की आँखों में आँसू आ जाते हैं । लोग रोने लगते हैं ।

४१. नकटा

नकटा नटका का विकृत रूप जान पड़ता है, जिसका अर्थ है नृत्य

या नाटक सम्बन्धी। इसमें बहुधा नृत्य किया जाता है और नाटकीयता पूर्ण अभिनय सहित गायन। नकटे प्रायः के बे सिर-पैर के होते हैं, किंतु हर्षोन्मत्त बनाने की क्षमता रखते हैं।

संदर्भ—पत्नी की कानपुर शहर के सम्बन्ध में आलोचना।

कम्पू सहर बड़ी दूर, दूर मोरे राजा ॥टेक॥
कम्पू सहर की सँकरी रे गलिया, मोटर चलैगा जरूर, जरूर
मोरे राजा ॥१॥
कम्पू सहर की ऊँची दुकानै, लड्डू बिकैं मोतीचूर, मोतीचूर
मोरे राजा ॥ २॥
कम्पू सहर के ढीठे बेटउना, दोना देखावैं जरूर, जरूर
मोरे राजा ॥३॥
कम्पू सहर की ढीठी बिटयवा, नैना लड़ावैं माँ चूर, चूर
मोरे राजा ॥४॥
—सेंदुरवा (सुल्तानपुर)

पत्नी पति से कहती है—हे मेरे राजा ! कानपुर शहर बड़ी दूर है।

कानपुर शहर की सँकरी गलियाँ हैं तो भी मोटर तो चलते ही हैं ॥१॥

कानपुर शहर की ऊँची दूकानें है, जिनमें मोतीचूर के लड्डू बिकते हैं ॥२॥

कानपुर शहर के लड़के धृष्ट हैं, वे मिठाई का दोना जरूर दिखाते हैं ॥३॥

कानपुर शहर की लड़कियाँ भी धृष्ट हैं, वे आँखें लड़ाने में चूर रहती हैं ॥४॥

टिप्पणी—यह पति से परिहास का एक-उदाहरण है। पति कानपुर का निवासी है और पत्नी बाहर की।

४२. नकटा

संदर्भ—पति से चुनरी की माँग ।

चले जइहौ बजरिया हो राजा जी ।।टेक।।
दिल्ली सहर की लागी बजरिया, मोहे ला दे चुनरिया,
हो राजा जी ।।१।।
पहिरि-ओढ़ि मैं अँगना में ठाढ़ी, मोहे लागी नजरिया,
हो राजा जी ।
दिल्ली सहर कै बैदा बुलाओ, मोरी झारै नजरिया,
हो राजा जी ।।२।।
दिल्ली सहर कै बैदा मिजाजी, माँगै पाँच रुपइया,
हो राजा जी ।।३।।
पाँच रूपइया मैं बैदा का दीना, मोरी झारी नजरिया,
हो राजा जी ।।४।।
—आकाशवाणी (लखनऊ)

एक पत्नी अपने पति से कहती है—

हे राजाजी ! बाजार चले जाइए । दिल्ली शहर की बाजार लगी है, वहीं से मेरे लिए चूनर ला दीजिए ।।१।।

पहन-ओढ़कर मैं आँगन में खड़ी हुई तो मुझे नजर लग गयी । दिल्ली शहर के वैद्य बुलाइए, मेरी नजर झार दे ।।२।।

दिल्ली शहर का वैद्य बड़ा मिजाज दिखानेवाला है, वह पाँच रुपये माँगता है । मैंने विवश होकर उसे पाँच रुपये दिये तब उसने मेरी नजर झारी ।।३।।

टिप्पणी—इससे टोने-टोटके, नजर, दीठ आदि के प्रति आस्था ज्ञात होती है ।

४३. नकटा

सन्दर्भ – बुद्धि भ्रम।

हाथों में पहिने पाजामा, दस्ताना समझ के ।।टेक।।
कमरे से निकरे बाबू जी खाने के वास्ते ।
नौ बोरे मटर चाब गये, मखाना समझ के ।।१।।
कमरे से निकरे बाबू जी, पीने के वास्ते ।
मिट्टी का तेल पी गये, बरण्डी समझ के ।।१।।
कमरे से निकरे बाबू जी, टट्टी के वास्ते ।
चूल्हे के ऊपर बैठ गये, टट्टी समझ के ।।३।।

—सेंदुरवा (सुलतापुर)

बाबूजी (पत्नी के लिए पतिजी) ने दस्ताना समझकर हाथों में पाजामा पहन लिया ।

बाबूजी कमरे से खाने के लिए निकले, वे मखाना समझकर नौ बोरे मटर चबा गये ।।१।।

बाबूजी पीने के लिए कमरे से निकले, वे बारण्डी समझकर मिट्टी का तेल पी गये ।।२।।

बाबूजी टट्टी के लिए कमरे से निकले, वे टट्टी समझकर चूल्हे के ऊपर बैठ गये ।।३।।

टिप्पणी—यह भद्दी मजाक का एक उदाहरण है ।

४४. नकटा

सन्दर्भ—पति का स्वागत एवं अन्य की उपेक्षा ।

अटरिया के तरे-तरे आवा नवाब ।।टेक।।
जौ मैं जनतिउँ, अइहैं मोरे ससुरा,
कढ़तिउँ घुंघटा देतिउँ जबाब ।।१।।

जौ मैं जनतिउँ अइहैं मोरे जेठा,
मरतिउँ अँचरा देतिउँ जबाब ।।२।।
जौ मैं जनतिउँ अइहैं मोरे देवरा,
लेतिउँ डंडा देतिउँ भगाय ।।३।।
जौ मैं जनतिउँ अइहैं मोरे बलमा,
खोलतिउँ खिड़की लेतिउँ बोलाय ।।४।।

—चिलौली (रायबरेली)

अट्टालिका के नीचे-नीचे नवाब आया ।

यदि मैं जानती कि मेरे ससुरजी आएँगे तो मैं घूंघट काढ़ती और उन्हें उत्तर देती ।।१।।

यदि मैं जानती कि मेरे जेठजी आएँगे तो मैं आँचल मारती और उन्हें उत्तर देती ।।२।।

यदि मैं जानती कि मेरे देवर आएँगे तो मैं डंडा लेती और उन्हें भगा देती ।।३।।

यदि मैं जानती कि मेरे पतिजी आएँगे तो मैं खिड़की खोलती और उन्हें बुला लेती ।।४।।

टिप्पणी—पति के प्रति कम-से-कम इतनी सहानुभूति तो होनी ही चाहिए, किन्तु देवर के प्रति ऐसी नाराजगी क्यों ? यह तो उस भुक्तभोगिनी से ही ज्ञात होगा ।

४५. नकटा

संदर्भ—गजरे का खो जाना और पति पर सन्देह ।

बलम मोर गजरा लइगे चोराय ।।टेक।।
अहरा माँ ढूँढ़्यों, पेटहरा माँ ढूँढ़्यो, बलम तोरि सेजिया
ढूँढ़ेउँ हलाय ।।१।।

सासु नहीं लीना, ननद नहीं लीना, बलम मोर जियरा
तुमका सुगाय ।।२।।
जउनी नटिनिया का दिहेउ मोर गजरा, बलम वहिकै-डेरा
देतू बताय ।।३।।
वहि रे नटिनिया कै डेरा फुँकउतूँ, बलम तोरी मुसकैं
देतूँ बँधाय ।।४।।
—नेतखेड़ा (रायबरेली)

पत्नी कहती है—मेरे पति गजरा चुरा ले गये ।

मैंने उसे आले में और पेटहरे में ढूँढ़ा । हे पतिजी ! तुम्हारी सेज भी हिलाकर ढूँढ़ा ।।१।।

सास ने नहीं लिया और न ननद ने लिया हे पतिजी, मेरा जी तो तुम पर सन्देह करता है ।।२।।

आपने जिस नटिनी को मेरा गजरा दिया, हे पतिजी ! आप उसका डेरा मुझे बता देते ।।३।।

मैं उस नटिनी का डेरा फुँका देती और हे पति ! मैं आपकी मुस्कें बँधा देती ।।४।।

बड़ी जोरदार पत्नी है ।

गाली

अपनी तथा भाई की ससुराल में गाली मिलना साधारण बात है । ये गालियाँ स्वयं व्यक्ति को तथा उसके आत्मीय सम्बन्धियों (माँ, चाची दादी, बुआ, आजी) को तो दी ही जाती है, पास-पड़ोस को भी उनसे अछूता नहीं रखा जाता । इन गालियों को सुनकर कोई अप्रसन्न नहीं होता, वरन् सुखानुभूति करता है । अवधी में गाली को गारी कहा जाता है । राम सम्बन्धी गारियों को रामगारी या गारी रमायन और

कृष्ण से सम्बन्धित गारियों को गोपालगारी कहा जाता है। अन्य गारियों को 'साधारण गारी' या केवल 'गारी' कहते हैं। इधर राष्ट्रीय जागरण के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय गारियाँ भी गाई जाने लगी हैं।

४६. रामगारी

संदर्भ—जनकपुर में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न को गाली।

राम लच्छिमन, भरत, सत्रोहन आये हैं जब ससुरारी जी।
करन कलेवा लागे जनक घर गावैं सखी सब गारी जी ।।१।।
एक सखी कहै सुनौ लाल जी पूछौं मैं बात बिचारी जी।
सुघर रूप कहाँ तुम पायो, कहाँ गईं महतारी जी ।।२।।
बोले लखन भली कही सजनी तुमहूँ तौ अबहीं कुंवारी जी।
बरनौ पुरुष-नारि की बातैं सो कहँ सीखेव सुकुमारी जी।
कहैं बिनोद सब हँसि-हँसि पूछैं, दिऐं प्रेम रस गारी जी ।।३।।
—लालगंज (रायबरेली)

राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न जब ससुराल आये तो जनक के घर में कलेवा खाने लगे और सब सखियाँ गारी गाने लगीं ।।१।।

एक सखी ने कहा—हे लालजी! सुनिये, मैं विचारपूर्वक एक बात पूछती हूँ। इतना सुन्दर रूप तुमने कहाँ प्राप्त किया। तुम्हारी माताजी कहाँ गयी थीं (अर्थात् किसके पास सोने गयी थीं)? ।।२।।

तब लक्ष्मण बोले—हे सजनी! आपने अच्छी बात कही। तुम भी तो अभी कुमारी हो। फिर भी पुरुष तथा नारी की बातों का वर्णन करती हो, उसे तुमने कहाँ सीखा। 'विनोद' कवि कहते हैं कि इस प्रकार सब सखियाँ हँस-हँस कर पूछती हैं और प्रेम-रस युक्त गालियाँ देती हैं ।।३।।

४७. गोपालगारी

सन्दर्भ—श्रीकृष्ण का मनिहारी रूप धारण करना।

जबहि गोपाल चले बरसाने, धरि के रूप मनिहारी जी।
नकबेसर माथे पर विंदिया, कानन झुमका डारी जी।
गले में हार हुमेल सुहाये, करधन कमर मँझारी जी ॥१॥
कड़ा, छड़ा, पाजेब बिराजत, पहिरे रेशम सारी जी।
सिर डलिया चुरियन की धइकै गलियन जाय पुकारी जी ॥२॥
राधे देखि महल से बोलीं, इधर आउ मनिहारी जी।
ऐसी चूड़ी हमैं पहिरावो, स्याम को लागैं प्यरी जी ॥३॥
चूरी पहिरावैं बहुत मुस्कावैं, समझि गई ब्रजनारी जी।
कहत विनोद रूप सब देखत, सखिया हँसैं दै तारी जी ॥४॥

—नरसवाँ (रायबरेली)

जब गोपाल (कृष्ण) मनिहारो का रूप धारण कर बरसाने चले तो नाक में बेसर, मस्तक पर बिंदिया और कानों में झुमके डाल लिये। उनके गले में हुबेल शोभायमान थी और कमर में करधन ॥१॥

कड़ा, छड़ा, पायजेब विराजते थे और रेशम की साड़ी पहन रखी थी। वे सिर पर चूड़ियों की टोकरी रखकर गलियों में जाकर पुकारने लगे ॥२॥

राधा उन्हें देखकर महल से बोली कि हे मनिहारिन! इधर आओ। मुझे ऐसी चूड़ियाँ पहनावो कि कृष्ण को अच्छी लगें ॥३॥

कृष्ण राधा को चूड़ी पहनाते थे और बहुत मुस्करा रहे थे, जिससे ब्रज वनिताएँ उन्हें समझ गयीं। विनोद कवि कहते हैं कि इनका (कृष्ण का) रूप देखकर सब सखियाँ ताली बजाकर हँस रही थीं ॥४॥

४८. गारी

सन्दर्भ—अपनी दीनता प्रदर्शित कर याचना करना।

काहे अवरथी हमते रिसान्यो, हमरी गरीबी कै ख्याल करौ ॥टेक॥
तुम्हरे तौ कंचन महल खड़े हैं, हमरी झोपड़िया कै ख्याल करौ ॥१

तुम्हरे तौ घर माँ बहिनी जुआनी, हमरे बिरनवा कै ख्याल करौ ।।२
तुम्हरे तौ घर माँ बहुत बुढ़ीवा. हमरे बुढ़उना कै ख्याल करौ ।।३
तुम्हरे तौ घर माँ बहुती भइँसी, हमरे पड़उना कै ख्याल करौ ।।४
तुम्हरे तौ घर माँ बहुतै घोड़ी, हमरे घोड़उना कै ख्याल करौ ।।५

—लखापुर (बाराबंकी)

लखापुर की एक सलहज भाभी अवस्थीजी को सम्बोधित कर कहती है—हे अवस्थीजी ! आप मुझसे क्यों नाराज हैं ? हमारी दीनावस्था पर ध्यान दीजिये ।

आपके तो कंचन महल खड़े हैं, हमारी झोपड़ी पर ध्यान दीजिए ।।१।।
आपके घर में दो युवती बहनें हैं, हमारे भाई का ख्याल कीजिए ।।२।।
आपके घर में तो बहुत सी वृद्धाएँ हैं, हमारे बुड्ढे का ख्याल कीजिए।।३।।
आपके घर में बहुत सी भैंसें हैं, हमारे पड़वा का ख्याल कीजिए ।।४।।
आपके घर में तो बहुत घोड़ियाँ हैं, हमारे घोड़े का ख्याल कीजिए ।।५।।

४९. गारी

संदर्भ—बहनोई का साले से उसकी बहिन माँगना ।

बइठे तेवारी रामा ठाढ़े अवस्थी रामा, सुन सारे मोर मोजरा
कि वाहु-वाहु
अपनि बहिन मोरी सेज पै पठबौ, धानी रंग चुँदरी चढ़उबै
कि वाहु-वाहु
धानी रँग कै चुँदरी रँगउबै, चुनि-चुनि सेज लगउबै
कि वाहु-वाहु
चुनि-चुनि कै हम सेजा लगउबे, नउरँग तकिया धरउबै
कि वाहु-वाहु
नउरँग कै हम तकिया धरउबै, पँचरँग बेनिया डोलउबै
पँचरँग केरी बेनिया डोलउबै, अधीराति धूम मचउबै
कि वाहु-वाहु

अधीराति सारे धूम मचउबै, भोरहे गरभ रहि जाई
कि वाहु-वाहु

—लखापुर, (बाराबंकी)

तिवारीजी बैठे हुए हैं और अवस्थी जी खड़े हैं, वे कहते हैं—हे साले, मेरी विनती सुनो। अपनी बहिन मेरी शय्या पर भेजो, मैं धानी रंग चूंदर उस पर निछावर कर दूंगा। फिर चुन-चुनकर सुन्दर ढंग से सेज बिछाऊँगा। उस पर नवरंग की तकिया रखवाऊँगा। फिर तुम्हारी बहिन के लेट जाने पर मैं पाँच रंगों वाला व्यजन डुलाऊँगा। तत्पश्चात् अर्धरात्रि में धूम मचाऊँगा, जिसके फलस्वरूप प्रभात में ही गर्भ रह जाएगा (ठहर जाएगा)।

टिप्पणी—बहनोई और सालों में हँस-मजाक होता ही रहता है।

५०. राष्ट्रीय गारी

राष्ट्रीय गारियाँ राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत होने के कारण अश्लील नहीं होती हैं, किन्तु रामगारी और गोपालगारी की भाँति इनमें से कहीं-कहीं विनोद की झलक मिलती है, जिससे सम्बन्धों में समीपता आती है।

सन्दर्भ—कन्यापिता द्वारा अपने समधी (वरपिता) को दहेज में चर्खा देने की बात कहना।

चरखा दहेजवा मँ देहौं समधी,
छकड़ा लदाय लै जाउ।
घर पीछे एक चरखा हो समधी,
गँउवा मँ दिहेउ बँटवाय ॥१॥

रुइया मैं देहौं समधी चरखा के सथवा,
रचि-रचि पिउनी बनाय।
चरखा के सथवा पिउनी बँटायउ,
कातैं सब गँउवा के लोग ॥२॥

समधिन का देबै सुगना चरखवा,
जेहिकर हरिअर पाँख।
सुगवा के लाल-लाल ठोरवा निहरिहैं,
समधिन होइहैं निहाल ।।३।।

केहू न देखै समधी रुपया पइसवा,
ओकर नाहीं कछु मोल।
काम त अइहैं रुपया तुहइँ समधी,
देसवा के कौन उपकार ।।४।।

घर-घर चलिहैं जौ समधी चरखवा,
सब देहैं तुहुका असीस।
ओहि रे असिसवा से अन, धन, पूत,
रहिहै सुखी परिवार ।।५।।

—पहाड़ापुर (गोंडा)

कन्या का पिता वर के पिता अर्थात् अपने समधी से कहता है—हे समधी जी ! मैं दहेज में चर्खा दूँगा, आप छकड़ा (छोटी बैलगाड़ी) लदा ले जाइए। अपने गाँव पहुँचकर आप प्रत्येक घर में चर्खा बँटवा दीजिएगा ।।१।।

हे समधी ! मैं चर्खे के साथ रुई दूँगा और ढंग से पूनी बनाकर दूँगा। आप चर्खे के साथ पूनी भी बँटवाइएगा, जिससे गाँव के सब लोग सूत कातें ।।२।।

मैं समधिन को सुगना (शुक) रूपी चर्खा दूँगा, जिसके हरे पंख हैं। सुगना के लाल ठोर को देखेंगी तो समधिन निहाल हो जाएँगी ।।३।।

हे समधी ! कोई रुपया-पैसा नहीं देखता, उसका कोई मूल्य नहीं। समधी जी, रुपया तो आपके काम आएँगे, उससे देश का क्या उपकार होगा ? ।।४।।

हे समधी ! जब घर-घर चर्खा चलेगा तो सब लोग आपको आशीर्वाद देंगे। उस आशीर्वाद से अन्न, धन, दूध, पूत से संयुक्त होकर परिवार सुखी रहेगा ।।५।।

ऋतुपरक लोकगीत

ऋतुओं से सम्बन्धित लोकगीतों को ऋतुपरक लोकगीत या ऋतुगीत कहते हैं। इनमें सावन, कजली, बारहमासा, फाग, चैता, चैती आदि आते हैं।

५१. सावन

श्रावण मास में गाये जाने वाले गीतों को 'सावन' कहते हैं। इनमें प्रायः किसी नववधू को अपने मायके जाने की व्यग्रता या पति-मिलन की चाह होती है।

सन्दर्भ—भाई के आने की प्रतीक्षा।

सखी रे सावनवा कब लगिहइँ ।।टेक।।
कब अइहइँ बिरना हमार ।।१।।
जेठवा मँ छावइँ आपन बँगला,
असढ़वा मँ बोवइँ साठी धान।
लगतै सवनवाँ बिरना अइहइँ ।।२।।
माया मोरी ढुढ़िया जे बाँधइँ,
भउजी मोरी रंगइँ पियरिया।
नीले घोड़े आवइँ मोरा बीरन भइया ।।३।।

—वासुदेवपुर (सुल्तानपुर)

कोई नवविवाहिता अपनी ससुराल में है। वह अपनी एक सखी से पूछती है कि हे सखी ! सावन कब लगेगा और मेरे प्रिय भाई कब आयेंगे ।।१।।

सखी उसे सान्त्वना देते हुए कहती है कि जेठ में तुम्हारे भाई बँगला छायेंगे और असाढ़ में साठी धान बोयेंगे, तदुपरान्त सावन लगते ही आयेंगे ।।२।।

नवविवाहिता प्रसन्न हो जाती है और कहती है कि सखी ! तुम ठीक कह रही हो। मेरी माँ ढँढ़ी बाँधेंगी, मेरी भाभी पेरी रँगेगी और फिर मेरे प्रिय भैया कृष्णवर्णी अश्व पर चढ़कर आयेंगे ॥३॥

५२. सावन

संदर्भ—पति के साथ रहने में ही सुख है।

पिया मोरे जोगी ह्वै गये, हमहू जोगिनि होइ जाब ॥
जिनि केऊ बोबहु कुसुमिया, जिनि केउ बोवहु कपास।
अब न रँगइबै हम चुँदरी, बिन पिया जग अँधियार ॥१॥
मोरे लेखे रन बन अँगना, घरही माँ फेंकरै सियार।
सेजिया पै लोटइ कारी नागिन, देखि कै जियरा डेराय ॥२॥
मोरे लेखे मधुबन जरि गये, जरि गये सोरहौ सिंगार।
नीक न लागैं गहना गुरिया, हम पिय खोजन जाब ॥३॥

एक स्त्री अपनी विरह-वेदना व्यक्त करते हुए कहती है—'मेरे प्रिय पति योगी हो गये हैं, अतः मैं भी योगिनी हो जाऊँगी।

कोई कुसुम न बोये और न कोई कपास बोये। अब मैं चुनरी नहीं रंगाऊँगी, प्रिय के बिना संसार अन्धकारमय है ॥१॥

मेरे लिये तो आँगन ही रण वन है, जिससे घर ही में शृगाल चिल्लाता है, और शय्या पर कृष्णा नागिन लेटती है, जिसे देखकर जी भयभीत होता है ॥२॥

मेरे लिए तो मानो मधुवन (सुखद वन) जल गये एवं सोलहों शृंगार भी जल गये हैं। मुझे गहने-वहने अच्छे नहीं लगते। मैं तो प्रिय (परमप्रिय पति) को खोजने जाऊँगी ॥३॥

५३. कजली

सावन-भादों महीने में गाये जाने वाले लोक गीतों में 'कजली' का

मुख्य स्थान है। मिर्जापुरी कजली तो सुप्रसिद्ध है। इनमें जीवन के विविध रूपों का वर्णन होता है, किन्तु श्रृंगार रस की प्रधानता रहती है। कजली को अवधी में अधिकतर 'कजरी' कहते हैं।

सन्दर्भ—विरहिणी की चिन्ता पति के पम्बन्ध में।

बिजुली चमकै मोरे अँगनवा,
मोरा हरी कहँवाँ होइहैं ना ॥टेक॥
सोने की थरिया मँ जेवना बनायों,
जेवना अलसै मोरी रोसइयाँ, मोरा हरी० ॥१॥
झाँझर गेंडुवा गंगाजल पानी,
गेंडुवा अलसै मोरी रोसइयाँ, मोरा हरी० ॥२॥
पाँच पान पँचबिरिया लगायों,
बिरिया अलसैं मोरे पनडेब्बा, मोरा हरी० ॥३॥
—मिसरौली (सुल्तानपुर)

एक विरहिणी अपने प्रियतम के वियोग में सशंकित होकर कहती है कि मेरे आँगन में बिजली चमक रही है, पता नहीं मेरे स्वामी कहाँ होंगे ? मैंने सोने की थाली में मधुर भोजन तैयार किया, जेंवना मेरे रसोईं घर में अलसा रहा है, पता नहीं पति जी कब आयेंगे ? ॥१॥

झाँझर गेंडुवा में गंगाजल भरा रखा है, गेंडुवा मेरे रसोईघर में अलसा रहा है, जाने मेरे प्राणाधार कब आयेंगे ? ॥२॥

मैंने पाँच पानों के पाँच बीड़े लगाये; बीड़े मेरे पनडिब्बे में अलसा रहे हैं किन्तु मेरे प्रियतम न जाने कब आयेंगे ? ॥३॥

५४. कजरी

सन्दर्भ—यशोदा से कृष्ण के मनिहार बनने की बात बताना।

जसुदा तेरा लाल मनिहार बिरज माँ बेंचइ चुरिया ना ॥टेक॥

लम्बी धोती भेलस जनाना, चाल चलै मरदाना ना।
गलिया कि गलिया पुकारै कँधइया, केऊ लेये चुरिया ना ॥१॥
अपनी महल से राधा पुकारैं, हम लेबै मनिहारी ना।
चूड़ी पहिरावइँ चुटकी काटइँ राधा गई पहिचानी ना ॥२॥
—मिसरौली (सुल्तानपुर)

एक गोपी यशोदा जी से शिकायत कर रही है कि हे यशोदा! तेरा पुत्र मनिहार के रूप में व्रज में चूड़ियाँ बेचता है। वह लम्बी धोती पहने हुए है और पुरुष की चाल चलता है। वह गली-गली में पुकारता है कि कोई चूड़ी लेगा? ॥१॥

अपने महल से राधा पुकारती हैं कि हे मनिहारिन! मैं लूँगी। कृष्ण उसे चूड़ी पहनाते हैं और चिकोटी काटते हैं। इससे राधा उसे पहचान गईं ॥२॥

टिप्पणी—इसमें कृष्ण की बाल लीलाओं की एक झलक प्रस्तुत की गई है।

५५: कजरी

सन्दर्भ—कृष्ण का मनिहारिन बनना।

हरे रामा कृष्न बने मनिहारी, ओढ़ि लिहे सारी रे हारी ॥टेक॥
कानन में सोहै झूमर बारी, माथे में बेंदिया निराली रामा,
हरे रामा, गले में सोहे हार, नारि मतवाली रे हारी ॥१॥
सिर पर धरे डेलरिया भारी, चुड़ियों की छटा निराली रामा,
हरे रामा, करत गलिन में पुकार, आई मनिहारिन रे हारी ॥२॥
सखी सब मिलिकै पुकारैं, इधरै आवौ मनिहारी रामा,
हरे रामा, ऐसी चुरिया दिखाओ, खुसी होय नारी रे हारी ॥३॥

बहियाँ पकरि जब सब रंग चुरिया लगे पहिरावन रामा,
हरे रामा, चउकि परी राधा प्यारी, हँसै ब्रजनारी रे हारी ॥४॥
—कोठा नौढ़िया (प्रतापगढ़)

कृष्ण मनहारिन बने हुए हैं, उन्होंने साड़ी ओढ़ ली है। उनके कानों में झूमर, बाली सुशोभित है, मस्तक में निराली बिन्दी है, गले में हार शोभायमान है जिससे ऐसा लगता है कि कोई मतवाली स्त्री है ॥१॥

वह सिर पर भारी डलिया रखे हुए हैं, उनकी चूड़ियों की छटा निराली है, वे गलियों में पुकार लगा रहे हैं कि मनिहार आई है (जिसे चूड़ियाँ लेना हो, ले ले) ॥२॥

सब सखियाँ मिलकर पुकारती है कि हे मनहारिन ! इधर ही आओ एवं ऐसी चूड़ियाँ दो कि मेरी प्यारी (राधिका) प्रसन्न हो जायँ ॥३॥

बाँह पकड़ कर जब वह सब रंगों की चूड़ियाँ पहनाने लगे तो अकस्मात राधा प्यारी चौंक पड़ी और ब्रजनारियाँ हँसने लगीं ॥४॥

६. कजरी

सन्दर्भ—कृष्ण का वैद्य का रूप धारण करना।

बैद बनि आये बनवारी, दवा करते हैं बिचारी,
बिर्जनारी कहो तो बुलाय लिहा जाय ॥टेक॥
सखी ने कहा पुकार, बैद जी सुनो हमार,
एक बिमार आपको दिखाय दिहा जाय ॥१॥
मर्ज देखी खोली झोली, दिया राधिका को गोली,
हँसि के बोली-मर्ज क्या है, बताय दिहा जाय ॥२॥
प्रेम अगिनि की बिमारी, दवा करते हम बिचारी,
अब कहो प्रेम जल से बुझाय दिहा जाय ॥३॥

मुकुन्द ने किया है खेल, खेल में किया कुलेल,
"अब्दुल" कहे सबका बताय दिहा जाय ॥४॥
—विन्ध्याचल (मिर्जापुर)

एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि बनवारी कृष्ण वैद्य बनकर आये हैं और विचार कर दवा करते हैं। हे व्रजनारी यदि तुम्हारी अनुमति हो तो उन्हें बुला लिया जाय। फिर सखी ने पुकार कर कहा— हे वैद्य जी! हमारी बात सुनिये। आपको एक बीमार दिखा दिया जाय ॥१॥

कृष्ण ने मर्ज देखा, अपनी झोली खोली और राधा जी को दवा की गोली दी। राधा जी ने उनसे हँसकर पूछा कि मर्ज क्या है, यह बता दिया जाय ॥२॥

वैद्य कृष्ण ने उत्तर दिया—प्रेमाग्नि की बीमारी है, हम भलीभाँति विचार कर दवा करते हैं। अब यदि कहो तो उसे प्रेम-जल से बुझा दिया जाय ॥३॥

अब्दुल लोककवि कहते हैं कि मुकुन्द ने यह खेल किया और खेल में विनोदात्मक लीला की है, जिससे सबसे बता दिया जाय ॥४॥

टिप्पणी—भक्त भगवान की प्रेम-लीलाओं का गान कर अपने को धन्य समझते हैं।

५७. मिर्जापुरी कजली

सन्दर्भ—द्रौपदी-चीर हरण प्रसंग।

आज बिपता में पड़ल मोर लाज बाय,
बइठल समाज बाय ना।।टेक।।
पांचौ पती बइठे मौन, लाज राखै मोरी कौन।
दुष्ट दुसासन बड़ा चालबाज बाय, बइठल० ॥१॥

पापी खीचै मोरी सारी, होइ जाऊँ मैं उघारी।
आज बारी तोहार बृजराज बाय, बइठल० ।।२।।
कहै लालता बिषधर, दुःखहारी नटवर।
सारी बढ़ाये, बचाये लाज बाय, बइठल० ।।३।।

द्रौपदी सभा में खड़ी विचार कर रही है कि आज मेरी लाज विपत्ति में पड़ी हुई है और समाज बैठा हुआ है। पाँचो पति मौन बैठे हुए हैं, मेरी लज्जा कौन रखे। दुष्ट दुःशासन बड़ा चालबाज है ।।१।।

पापी मेरी साड़ी खींच रहा है, मैं कहीं नग्न न हो जाऊँ ! हे ब्रज-राज कृष्ण ! आज तुम्हारी बारी है (अर्थात् इस अवसर पर आप ही लज्जा बचायें, यह ऐसा अवसर है ।।२।।

लोकगायक लालता विषधर कहते हैं कि दुःख हरने हेतु नटवर कृष्ण ने साड़ी बढ़ा दी और द्रौपदी की लाज बचा ली ।।३।।

५८. हिंडोला

सावन में स्थान-स्थान पर हिंडोले और झूले पड़ते हैं, जिन पर बैठकर स्त्री-पुरुष झूलते हैं। अवध के गाँवों में तो इनका दृश्य देखते ही बनता है। झूले पर स्त्रियाँ बैठती हैं और झूले के दोनों सिरों पर पुरुष खड़े होकर पेगें मारते हैं। इस समय कोकिलकण्ठी महिलाएँ सावन तथा कजली के गीतों से जो रसधार बहाती हैं वह सहृदयों के अन्तस में अपना स्थान बना लेती है। कहीं-कहीं तो कन्याएँ स्वयं पेंगें मारती हैं और अपनी भावजों तथा सखियों को झुलाती हैं। अयोध्या का सावन का झूला प्रसिद्ध है।

संदर्भ—अवध बिहारी राम अपने भाइयों तथा सीता जी के साथ झूल रहे हैं।

हिंडोला झूलत अवध बिहारी।
रेसम डोर चन्दन का पटुला, सुन्दर छबि है न्यारी।

सरजू तीर हिंडोला झूलत, मारत पेंगै भारी ।
राम लच्छिमन भरत सत्रुहन, सोहत जनकदुलारी ।
कबि बिनोद कह छबि को बरनै, कोटि काम छबि वारी ।
(नरसवाँ, रायबरेली)

अवध बिहारी राम हिंडोला झूल रहे हैं। रेशम की डोरी है, चन्दन का पटरा है, सुन्दर निराली छवि है ।

सरयू के किनारे हिंडोले पर वे झूल रहे हैं और लम्बी पेंगें मार रहे हैं ।

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न तथा जनक दुलारी सीताजी शोभायमान हैं ।

कवि विनोद कहते हैं कि उस छवि का कौन वर्णन करे जिस पर कोटि कामदेवों की छवि निछावर है ।

५६. झूला

संदर्भ—राम का अपने सखाओं सहित झूला झूलना ।

झूला झूलैं अवध बिहारी, संग में जनक दुलारी ना ।। टेक।।
रेसम डोर चन्दन का पटुला, झूलैं बारी-बारी ना ।।१।।
राम लछिमन भरत शत्रुघ्न, हनुमत करैं बयारी ना ।।२।।
सरजू तीर हिंडोला झूलैं, मारैं पेंगैं भारी ना ।।३।।
कबि बिनोद दरसन को धाये, पुर के सब नर-नारी ना ।।४।।
—लालगंज (रायबरेली)

अवध विहारी (राम) झूला झूल रहे हैं, उनके संग में जनकदुलारी (सीता) हैं ।

उस झूले में रेशम की डोर और चन्दन का पटरा है, वे बारी-बारी से झूल रहे हैं ।।१।।

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और हनुमान हवा कर रहे हैं ।।२।।

सरयू-तट पर वे हिण्डोले में झूलते और बड़ी-बड़ी पेंगें मार रहे हैं ।।३।।

विनोद कवि कहते हैं कि उनके दर्शन के लिए अयोध्या के सब नर-नारी दौड़ पड़े हैं ।।४।।

टिप्पणी—अयोध्या में सीता और राम का झूला झूलना समस्त प्रजा के लिए भी सुखद है।

६०. फाग

जिस प्रकार सावन में झूला, हिंडोला, सावन तथा कजली की अधिकता रहती है, उसी प्रकार फागुन में फाग, होरी, धमार, चौताल आदि की बहार आती है। फागुन मनुष्यों के लिए मस्ती का, हर्षोल्लास का महीना है। स्थान-स्थान पर लोग गाते बजाते आनन्दानुभूति करते हैं। इस समय के अश्लील लोकगीतों को भी लोग बुरा नहीं मानते, जिस प्रकार विवाह में गाली को।

संदर्भ—नवयौवना की लज्जा।

पिया उमरि-घुमरि गोहरावैं, सरम मोहे आई ।।टेक।।
एक तौ सरम मोरे सासू-ससुर कै हो,
दूजे सुरुजहु फेके ललाई सरम० ।।१।।
एक तौ सरम मोरे जेठ-जेठानी कै हो,
दूजे पैंजनि सोर मचाई, सरम० ।।२।।
एक तौ सरम मोरे देवर-देवरानी कै हो,
दूजे उवलि रात अंजोरिया, सरम० ।।३।।

—सोनावाँ (सुलतानपुर)

एक नवयुवती दूसरी से बताती है—प्रिय पति जी मुझे बार-बार पुकारते हैं, किन्तु मुझे शर्म आती है।

एक तो सास-ससुर की शर्म है, दूसरे सूर्य ने लालिमा भी बिखेर रखी है (अभी रात भी नहीं हुई है) ॥१॥

एक तो मुझे जेठ-जेठानी की शर्म है। दूसरे पैंजनी (पायल) भी शोर मचा रहे हैं (ज़ोर की आवाज करते हैं) ॥२॥

एक तो मुझे देवर-देवरानी की शर्म है, दूसरे उजली रात्रि भी हो गयी है (शुक्ल पक्ष की रात्रि है) ॥३॥

टिप्पणी—नवयुवतियाँ अपनी अन्तरंग सखियों से अपनी विवशता भी वर्णित करती हैं, जिससे शायद कोई उपयुक्त समाधान मिल सके और दाम्पत्य जीवन सुखमय हो सके।

६१. चौताल

सन्दर्भ—गौरी के विवाह का वर्णन।

रच्यो-रच्यो हिमांचल ब्याह, सुघरि गउरा ब्याहि गई
सिउसंकर का ॥टेक॥

कउने महीना लगन भई है, कउने महीना लगन भई है।
अब कउने रच्यो है वियाहु, सुघरि गउरा ब्याहि गई
सिउसंकर का ॥१॥

माह महीना लगन भई है, माह महीना लगन भई है।
अब फागुन रच्गो है बियाहु, सुघरि गउरा ब्याहि गई
सिउसंकर का ॥२॥

काहे केरे खम्भा गड़े हैं, काहे केरे खम्भा गड़े हैं।
अब काहे के छाय गये माड़, सुघरि गउरा ब्याहि गई
सिउसंकर का ॥३॥

चंदन केरे खम्भा गड़े हैं, चंदन केरे खम्भा गड़े हैं।
सरपत छाय गये माँड़, सुघरि गउरा ब्याहि गई
सिउसंकर का ॥४॥

—लालगंज (रायबरेली)

हिमाचल ने विवाह रचा है, शिव से सुन्दरी गौरी विवाहित हो गईं।

यह सुनकर एक सखी अपनी अभिन्नहृदया सखी से पूछती हैं—किस महीने में लग्न (तिलक) हुई है और किस महीने में विबाह रचा गया है ? ॥१॥

अन्तरंग सखी बताती है—माघ के महीने में लग्न हुई है और फालगुन मास में विवाह रचा गया है ॥२॥

पहिली सखी पूछती है—किस चीज के खम्भे गडे हैं और किस चीज से माँड़व (मण्डप) छाया गया ? ॥३॥

दूसरी सखी कहती हैं—चन्दन के बने हुए खम्भे गड़े हुए है और सरपत के द्वारा मण्डप छाया गया है ॥४॥

टिप्पणी—गौरी के विवाह का यह संक्षिप्त परिचय भक्तों के लिए आनन्दप्रद है।

६२. चौताल

सन्दर्भ—मिथिलापुर में धनुष के सन्दर्भ में यज्ञ।

मिथिलापुर मुनि सँग आये, राम दूनौ भाई ॥टेक॥
धरा पिनाक जहाँ संकर कै, जुरे बीर सब धाई।
सुरपुर, नरपुर, नागपुरा जो, सबका मिथिलेस बोलाई ॥१॥
अग्या दीन जनक मंत्री को, सभा में सबक सुनाई।
सम्भु सरासन जे नर तोरिहइँ, तेहि संग सिया कै सगाई॥२॥
सुनत भूप हरखाय धनुख पर जाय के हाथ लगाई।
हारे बीर सकल छल बल करि, लखि जनक उठे अकुलाई॥३॥
बीर-बिहीन भई बसुधा अब, झूठेन सूर कहाई।
सिउपरसाद उठे रघुबर तब, धनु तोरि कै दीन्ह बहाई ॥४॥

मिथिलापुर में मुनि संग राम-लक्ष्मण दोनों भाई आये हैं।

जहाँ शंकर का पिनाक रखा हुआ था, वहाँ सब बीर दौड़कर एकत्र हो गये। सुरपुर, नरपुर (मर्त्यलोक), नागपुर (नागलोक) के सब लोगों को मिथिलेश ने बुलाया ॥१॥

जनक ने मन्त्री को आज्ञा दी, उसने सभा में सबको सुनाकर कहा—जो कोई शम्भु के शरासन को तोड़ देगा, उसके साथ सीता की सगाई होगी ॥२॥

राजाओं (तथा राजकुमारों) ने यह सुनते ही हर्षित हो जाकर धनुष पर हाथ लगाया। किन्तु सब बीर छल-बल कर हार गये, यह देखकर जनक व्याकुल हो उठे ॥३॥

राजा जनक ने कहा—मुझे अब जान पड़ता है कि वसुधा बीरों से रहित हो गई है, व्यर्थ ही तो लोग स्वयं को शूर कहते हैं। शिवप्रसाद कहते हैं—तब राम उठे और उन्होंने धनुष तोड़कर फेंक दिया ॥४॥

६३. दुतल्ली

सखी तोरि दीन धनु राम लला,
सखी तोरि दीन धनु राम लला ॥टेक॥
अबहीं कुँअर दोऊ छोटे-छोटे
काम बीर कै कौन भला ॥सखी०॥
सिउपरसाद जुरे जो राजा,
सब हारि-हारि कै गये चला ॥सखी०॥

—पिपरी (सुलतानपुर)

एक सखी दूसरी से कहती है—हे सखी! राम ने धनुष तोड़ दिया है। अभी तो ये दोनों कुमार छोटे-से हैं, वीरों का भला क्या काम?

शिवप्रसाद (लोकगीतकार) कहते है—जो राजा आकर वहाँ एकत्र हुए थे, वे सब हार कर चले गये।

६४. होरी

सन्दर्भ—श्री रामचन्द्र का होली खेलना।

रघुबर खेलत होरी, साथ लिहे जनककिसोरी ॥टेक॥
अवधपुरी में अवध बिहारी, लखन सहित लीन्हे पिचकारी।
वारत काम करोरी, साथ लिहे जनककिसोरी ॥१॥
होरी खेलन चारौ भाई, अवधपुरी में धूम मचाई।
लै कै अबीर कै झोरी, साथ लिहे जनक किसोरी ॥२॥
उड़त गुलाल रंग बरसावत, बार-बार सुर तान सुनावत।
कबि बिनोद रँग बोरी, साथ लिहे जनककिसोरी ॥३॥
—लालगंज (रायबरेली)

राम जनककिशोरी (सीता) को साथ लिए हुए होली खेल रहे हैं।

अवधपुरी में अवधविहारी (राम) लक्ष्मण के साथ पिचकारी लिए हुए हैं। उन पर करोड़ों कामदेव निछावर हैं ॥१॥

चारों भाई होली खेलते हुए अवधपुरी में अबीर की झोली लेकर धूम मचा रहे हैं ॥२॥

गुलाल उड़ रहा है, रंग बरसा रहे हैं, देवता बार-बार तान सुना रहे हैं। विनोद कवि का कहना है कि वे रंग से सराबोर हो रहे हैं ॥३॥

६५. होरी

सन्दर्भ—लक्ष्मण मूर्च्छा तथा राम का विलाप।

उठि बइठौ लखन मोरे भाई, कहैं रघुराई ।।टेक।।
मेघनाथ रावन कै बेटा, अब दल बीच कराथै लड़ाई ।।कहैं०।।
सत्तीबान लाग लछिमन के, धरती पै गिरे भहराई ।।कहैं०।।
जब हनुमान संजीवनि लाये, उठि बइठे सबै हरखाई ।।कहैं०।।
—जामो (सुलतानपुर)

राम कहते हैं—हे मेरे भाई लक्ष्मण ! उठ बैठो ।

रावण का पुत्र मेघनाद अब दल के बीच युद्ध कर रहा है ।

लक्ष्मण के शक्ति-बाण लगा, वे भहराकर धरती पर गिर पड़े ।

जब हनुमान संजीवनी लाये तो लक्ष्मण उठ बैठे, जिससे सब लोग हर्षित हो गये ।

टिप्पणी—इस लोकगीत में लंकायुद्ध की एक झलक मात्र प्रस्तुत की गई है ।

श्रमपरक लोकगीत

शारीरिक श्रम की क्रियाएँ करते समय जो लोकगीत गाये जाते हैं उन्हें श्रमगीत या क्रिया गीत कहते हैं। इन गीतों से श्रम परिहार होता रहता है। इनमें जँतसार, कोल्हौरा, निरवही आदि के गीत आते हैं।

६६. जँतसार

जाँत या हाथ की चक्की चलाते समय महिलाएँ जो लोकगीत गाती हैं, उन्हें जँतसार, जँतसारी या जाँत के गीत कहते हैं।

सन्दर्भ—पुत्रवधू का शिर दर्द और सास की करतूत।

कँकरा औ पथरा दुनउ जोड़ी जँतवा हो ना।
दिनवा भै पीसेउँ सासू रतिया हो ना॥
सासू, तबहूँ न चुकै झीन गोहुँआ हो ना।
बहू उठि कै करौ दतुइनिया हो ना॥
रोज तो मोरी सासू मुँहवा न बोलिउ हो ना।
सासू, आजु काहे पूछिउ दतुइनिया हो ना॥
रोज तौ मोरी सासू काठे कै कठोलिया हो ना।
सासू, आज काहे फूल कै थरिया हो ना॥
खात-पिअत सासू भल निक लागइ हो ना।
सासू, अँचवत मुँड़वा धमाकै हो ना॥
जउ मोरी बहुवरि मुँढ़वा धमाकै हो ना।
बहू, साजी बाटी ससुरू सेजरिया हो ना॥

—राहपुर लपटा (सुल्तानपुर)

बहू कहती है कि कंकड़ और पत्थर के दो जोड़ी जाँत हैं। हे सासू! मैंने दिन भर पीसा और रात भी व्यतीत होने वाली है। तब भी झीना गेहूँ नहीं चुकता।

यह सुनकर सास कहती है—हे बहू ! उठकर दातून कर लो।

बहू ने कहा—हे मेरी सास ! रोज तो आप मुँह से भी नहीं बोलती थीं, आज दातून को क्यों पूछा ?

हे मेरी सास ! रोज तो मेरे खाने के लिए आप कठोलिया (काष्ठ-पात्र) देती थीं, आज फूल की थाली क्यों दे रही हो ?

हे सास जी ! खाते-पीते समय तो बहुत अच्छा लगता है, किन्तु हाथ-मुँह धोते समय मेरा सिर दर्द कर रहा है।

सास ने कहा—हे मेरी बहू ! यदि तुम्हारा सिर दर्द कर रहा है तो तुम्हारे लिए श्वसुर की सेज सजी हुई है, उसी पर जाकर लेटो तो ठीक हो जायगा।

टिप्पणी—लगता है कि बहू का पति बहुत दिनों से परदेश में है और श्वसुर के आग्रह पर सास अपने पति के लिए बहू को उसकी रात्रि-सेवा में भेजना चाहती है। ऐसे भी सासें हैं।

६७. जँतसार

सन्दर्भ—पत्नी के लिए एक पति प्रत्येक वस्तु का बड़ा ध्यान रखता है।

कउने टैम कै गाड़ी, बलम सिटिया दै के आइ गयेन ।।टेक।।
मोरे पिछवरवा हेलवइया छोकरवा
हाय, रतिया सोवइउ न पाइउँ, बलम पेड़वा लै के आइ गयेन।
मोरे पिछवरवा कहरवा छोकरवा,
हाय, रतिया सोवइउ न पाइउँ, बलम गेड़ुवा लै के आइ गयेन।
मोरे पिछवरवा बरइया छोकरवा,
हाय, रतिया सोवइउ न पाइउँ, बलम बिरवा लै के आइ गयेन।
मोरे पिछवरवा बजजवा छोकरवा,
हाय, रतिया सोवइउ न पाइउँ, बलम सड़िया लै के आइ गयेन।

मोरे पिछवरवा दरजियवा छोकरवा,
हाय, रतिया सोवइउ न पाइउँ, बलम चोलिया लै के आइ गयेन।
—दिलीपपुर (प्रतापगढ़)

कोई पत्नी विचार करती है—किस समय पर आनेवाली गाड़ी है जो मेरे प्रियतम सीटी देकर आ गये।

मेरे पिछवाड़े हलवाई छोकरा है, अरे मैं तो रात में सोने भी न पाई कि बलम पेड़ा लेकर आ गये।

मेरे पिछवाड़े कहार छोकरा है, अरे मैं तो रात में सोने भी न पाई कि बलम गेडुवा (जलपात्र) लेकर आ गये।

मेरे पिछवाड़े बरई छोकरा है, अरे मैं तो रात में सोने भी न पाई कि बलम पान का बीड़ा लेकर आ गये।

मेरे पिछवाड़े बजाज छोकरा (किशोर) रहता है, अरे मैं तो रात में सोने भी न पाई कि बलम साड़ी लेकर आ गये।

मेरे पिछवाड़े दर्जी छोकरा है, अरे मैं तो रात में सोने भी न पाई कि बलम चोली (कंचुकी) लेकर आ गये।

टिप्पणी—हर पति इतना ध्यान नहीं रखता, किन्तु कोई-कोई छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी वस्तु का ध्यान रखते हैं। वे पत्नी को हर तरह से खुश रखना चाहते हैं, किन्तु कष्टदायिनी बात यह है कि पत्नी बेचारी अच्छी तरह सोने भी नहीं पाती। शायद इसे वे भूल जाते हैं कि उसे नींद भी आवश्यक है अन्यथा स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ता है।

६८. कोल्हौरा

अवध प्रान्त के ग्रामाञ्चल में तेली लोग अपने घरों में सरसों, लाही, तिल्ली आदि से तेल निकालने के लिए कोल्हू चलाते हैं, जिसमें

एक बैल नधा होता है, जिसकी आँखों में पट्टी बँधी होती है। उसकै पीछे एक पाटा होता है, जिस पर बैठकर तेली बैल को हाँकता है। वह उमंग में आने पर तथा समय बिताने के लिए लोकगीत भी गाता रहता है, जिसके विषय जीवन के विबिध आयामों को स्पर्श करते हैं। इन लोकगीतों को कोल्हू के गीत या कोल्हौरा कहा जाता है।

सन्दर्भ—विरहिणी नायिका की व्यथा।

अमवा औ महुआ की बड़ी घनछहियाँ, जेहि बिच राह परी।
तेहि तर ठाढ़ि तिरियवा मनै माँ बिरोग भरी।।१।।
पूछै लागे देखि बटोहिया, अकेलि धना काहे रे खड़ी ?
भइया, चले जाहु अपनी बाट, हमइँ तुहइँ काह रे परी।।२।।
की तुहइँ सास ससुर दुख, कि नइहर दूरि बसइ ?
भइया, नाहिं हमइ सास ससुर दुख, न नइहर दूरि बसइ।
भइया, हमरे बलम परदेस, मनै माँ बिरोग भरी।।३।।
बहिनी, तोहरे बलम परदेस, तुहइँ कछु कहि न गये ?
भइया, दै गये कुपवन तेल, हरपवन सेंदुर।
भइया, दै गये चनन चरखवा, उठाय गज ओबरि!
भइया, दै गये आपनि दुहइया, धरम जिन छोड़ेउ।।४।।
भइया, चुकै लागे कुपवन तेल, हरपवन सेंदुर।
भइया, घुनै लागे चनन चरखवा, ढहइ गज ओबरि।
भइया, चुकै लागी मोरि उमिरिया, हरीजी नहीं आये।।५।।

आम और महुए की बड़ी घनी छाया है, जिसके बीच से राह जाती है। उसी के नीचे एक स्त्री खड़ी है, जिसके मन में बड़ी व्यथा है।।१।।

उसे देखकर एक पथिक पूछने लगा—हे धना! क्यों खड़ी हो ? स्त्री ने कहा—हे भैया! अपनी राह चले जाओ, हमसे तुमसे क्या सम्बन्ध।।२।।

पथिक फिर भी कहने लगा—तुम्हें सास-ससुर दुःख देते हैं या तुम्हारा नैहर दूर है ?

स्त्री ने उत्तर दिया—भैया मुझे सास-ससुर का दुःख नहीं है और नहीं नैहर दूर स्थित है। भैया ! मेरे पति परदेश में हैं, इससे मेरे मन में वियोग-व्यथा है ॥३॥

पथिक ने संवेदनायुक्त होकर पूछा—हे बहिन ! तुम्हारे पति परदेश में हैं, क्या वे तुमसे कुछ कह नहीं गये ?

स्त्री ने बताया—भैया ! मेरे पति कई कुप्पे तेल और ढेर-सा सिन्दूर दे गये। भैया ! वे चन्दन निर्मित चर्खा और गज ओबरी भी उठाकर छोड़ गये हैं। भैया ! वे अपनी दुहाई भी दे गये हैं कि धर्म (पातिव्रत धर्म) मत छोड़ना ॥४॥

हे भैया ! मैं क्या कहूँ ? अब तो कुप्पों का तेल चुकने लगा है, ढेर सारा सेंदुर भी कम होने लगा है और शूतिकाकक्ष भी ढहने लगा है। भैया ! तुमसे क्या कहूँ—मेरी उम्र भी क्षीण हो रही है, किन्तु अभी तक भी हरि जी (ईश्वरतुल्य पतिदेव) नहीं आये ॥५॥

६८. कोल्हौरा

सन्दर्भ—पति का परदेस जाने के लिए तैयार होना और पत्नी का रोकना।

कौल्हुवा माँ बिरहा सुनावौ कि जिनि जावौ रे ॥टेक॥
बेरिया कि बेरिया तोहे बरजौं किसनबा कि जिन जावौ रे।
कोल्हुवा माँ बरधबा नाधौ कि जिनि जावौ रे ॥१॥
मेटिया धरी छुछि कि कौल्हू बिच घानी परी।
मोरे जियरा भरा है बिरोग कि अँखिया पानी भरी ॥२॥

बिकसे गगनवा के फूल, जोंधइया मुस्क्याय रही।
सरसर सरद बयरिया कि जियरा कँपाय रही।
मेटियन नेह भरावौ कि हिय सरसावौ रे ॥३॥

पत्नी पति से निवेदन करती है – कोल्हू पर बैठे हुए बिरहा सुनाओ, परदेश मत जाओ।

हे कृषक पति ! मैं समय-समय पर तुम्हें वर्जित करती हूँ कि मत जाओ एवं कोल्हू में बैल नाधो और मत जाओ ॥१॥

मेटिया रिक्त रखी हुई है और कोल्हू में घानी पड़ी हुई है। मेरे जी में बिरोग भरा है और आँखें पानी से भरी हुई हैं ॥२॥

आकाश के फूल विकसित हैं (तारे चमक 'रहे हैं) और जुन्हैया (चन्द्रमा) मुसका रही है। सरसर शारदीय वायु चल रही है, जो हृदय कँपा रही है। मेटियों (मृत्तिका-पात्रों) को स्नेह (तैल) भराओ और इस प्रकार हृदय को सरसाओ ॥३॥

टिप्पणी—पत्नी का कहना ठीक ही है कि जब अपने घर में अपना कुटीर-उद्योग है तो बाहर नौकरी ढूँढ़ने हेतु दर-दर मारे-मारे फिरने की क्या जरूरत है। घर में रहकर अपना पैतृक धंधा करना श्रेयस्कर है।

७०. निरौनी (निरवही)

सावन-भादों के महीने में जब खेतों में धान निराने योग्य हो जाते हैं तो पुरुष तथा महिलाएँ उनके खर-पतवार निकालने के लिए निरवही करती हैं और साथ ही लोकगीत गाती हैं, जिन्हें अवधी में निरौनी, या निरवही के गीत कहते है। इन गीतों में पारिवारिक जीवन की झलक मिलती है, जिसमें दुःख-सुख दोनों ही दृष्टिगोचर होते हैं।

सन्दर्भ—किसी का योगी हो जाना और घर वालों का कष्ट निवेदन।

काहे का सोंटा काहेन का कूँड़ी, भला हो बरम्हा जोगी बने ।।टेक।।
काहेन का लावै भभूतिया, भला हो बरम्हा जोगी बने ।
सोने का सोटा, रूपेन का कूड़ी, अँउना कै लावै भभूतिया भला० ।।१
तकथ बइठि उनके बाबा जिउ झंखैं, भला हो बरम्हा जोगी वने ।
आज राज मोरी छोड़िके, भला हो पूता जोगी बने ।।२।।
मचिया बइठि उनकी माता जिउ झंखैं, भला हो भइया जोगी बने ।
गोदी मोरी छोड़ि के भला हो, पूता जोगी बने ।।३।।
महल चढ़े उबके भइया जिउ झंखैं, भला हो भइया जोगी बने ।
आज बाँह मोरी तोड़ि के भला हो, भइया जोगी बने ।।४।।
राम रसोइयाँ उनकी भउजी जिउ झंखैं, देबरा जोगी बने ।
जेंवन छोड़ि के भला हो, भइया जोगी वने ।।५।।
अपने ससुर से बहिनि जिउ झंखैं, भला हो भइया जोगी बने ।
हमरी राह छोड़ि के भला हो भइया जोगी बने ।।६।।
रंगी महलि चढ़ि तिरिया जिउ झंखैं, भला हो स्वामी जोगी बने ।
हमरी महलिया छोड़िके, भला हो स्वामी जोगी बने ।।७।।

—दिलीपपुर (प्रतापगढ़)

किस चीज का सोंटा और किस चीज की कूड़ी है, ब्रह्मा योगी बन गये हैं । वह योगी किसकी विभूति लाता है ? सोने का सोटा, चाँदी की कूँड़ी और आँवे की विभूति है ।।१।।

तख्त पर बैठकर उनके बाबाजी झींकते है कि आज मेरा राज्य त्याग कर पुत्र योगी बन गया है ।।२।।

मचिया पर बैठी उनकी माताजी झींकती है कि मेरी गोद छोड़कर पुत्र योगी हो गया है ।।३।।

महल पर चढ़ उनके भैयाजी झींकते हैं कि आज मेरी भुजा तोड़कर भैया योगी बन गये हैं ।।४।।

रसोईघर में उनकी भाभीजी झींखती हैं कि उत्तम भोजन त्याग कर देवरजी योगी हो गये हैं ।।५।।

अपने श्वसुर से बहिनजी झींक रही हैं कि हमारी राह छोड़कर भैया योगी वन गये हैं ।।६।।

रंग महल चढ़कर उसकी त्रियाजी झींक रही है कि हमारा महल छोड़कर स्वामी योगी बन गये ।।७।।

टिप्पणी—इस लोकगीत में व्यक्ति का नाम ब्रह्मा है जो योगी बन गया है । घर के सभी लोग बिरह-विक्षिप्त हैं । वे सबसे अपनी मनो-व्यथा बताते फिरते हैं ।

७१. निरौनी

सन्दर्भ—किसी विरहिनी तेलिनि का किसी राजपूत के यहाँ बैठ जाना और पति के परदेश से लौटने पर पुनः उसे छोड़कर तेली पति की ओर आकृष्ट होना ।

देतू न सासू, तेलवा की मेटिया, तेलवा बेंचन हम
जाबै हो ना ।।१।।
सगरी नगरिया तेलवा बेंचिउ बहुअरि ! रजवा
नगरिया जिन बेंचू ।।२।।
गलिया की गलिया पुकारथिन तेलिनिया हो ना ।
रामा, केऊ लेबा करू का तेलवा हो ना ।।३।।
अपनी महलिया से बोलै राजा पुतवा हो ना ।
तेलनी, हम लेबै करुआ तेलवा हो ना ।।४।।
तेलवा लै धरउ तेलिनि हमरी महलिया हो ना ।
तेलनी, बइठा हमरे बगलिया हो ना ।।५।।
बरहे बरिसवा पै लउटा तेलियवा हो ना ।
माई, हमरी तेलिनिया कहाँ गईं हो ना ।।६।।
तोहरी तेलिनिया गरब की माती हो ना ।
पूता, ऊतौ गई रजवा नगरिया तेल बेंचै हो ना ।।७।।

देतू न मोरी माई मोरी बँसुरिया हो ना।
माई, तेलिनि खबरिया हम जाबै हो ना ॥८॥
आधी की रतिया तेलिया बजावथिन बँसुरिया हो ना।
भभरि के जागी उहै तेलिनिया हो ना ॥९॥
छोड़ि देतै राजा हमरा अँचरवा हो ना।
राजा, आइगा हमरा तेलियवा हो ना ॥१०॥

—दिलीपपुर (प्रतापगढ़)

एक तेलिन अपनी सास से निवेदन करती है—हे सासू ! मुझे तेल की मेटिया देतीं तो मैं तेल बेंचने जाती ॥१॥

सास ने हिदायत की—हे बहू ! सारी नगरी में तेल बेंचना, किन्तु राजा की नगरी में मत बेचना ॥२॥

गली-गली तेलिन पुकार रही थी कोई कड़ुवा तेल लेगा ? ॥३॥

अपने महल से राजपुत्र बोलता है—हे तेलिन ! मैं कड़ुवा तेल लूँगा ॥४॥

हे तेलिन ! तेल लेकर मेरे महल में रखो और मेरी बगल में बैठो ॥५॥

बारहवें वर्ष तेली लौटा। उसने अपनी माँ से पूछा—माँ मेरी तेलिन कहाँ गई ? ॥६॥

माँ ने बताया तुम्हारी तेलिन गर्व से मतवाली थी। हे पुत्र ! वह राजा के नगर में तेल बेचने गई है ॥७॥

तेली ने कहा—हे माँ ! मेरी बाँसुरी देतीं, मैं तेलिन की खबर लेने जाऊँगा ॥८॥

अर्द्ध रात्रि में तेली ने बाँसुरी बजायी, जिससे तेलिन हड़बड़ा कर जाग पड़ी ॥९॥

वह राजपुत्र से बिनती करने लगी—हे राजा मेरा ! अंचल छोड़ देते, मेरा तेली आ गया है ॥१०॥

टिप्पणी—आखिर अपना पति अपना ही है ।

७२. लगवही

खेत में धान की रोपाई करते समय जो लोकगीत गाये जाते हैं, उन्हें लगवही, रोपाई या रोपनी के गीत कहते हैं । इन्हें प्रायः स्त्री-पुरुष दो दलों में विभक्त होकर गाते हैं और कभी-कभी समवेत स्वर में गाया करते हैं ।

सन्दर्भ—मेघ से वर्षा की याचना ।

बरसहु-बरसहु भइया बदरवा कि बरसहु हो ।
गाइ-गाइ करबै रोपनिया कि हँसि-हँसि हो ॥१॥
बरसि-बरसि भल मनवा बढ़ावहु कि भरि देहु हो ।
नदिया, नरवा, सगरवा कि भरि देहु हो ॥२॥
लहर-लहर लहराय सुखेतिया कि देखि-देखि हो ।
मन होइ मगनवा कि देखि-देखि हो ॥ ३॥
घर-घर सुखवा के सजवा सजावहु कि नहिं आवै हो ।
हमरे देसवा अकलवा कि नाहिं आवै हो ॥४॥
मनवा से तनिकौ न भुलबै बदरवा कि हम गइबै हो ।
गुनवा सँझवा सकरवा कि हम गइबै हो ॥ ५॥

—बौनापुर (गोंडा)

एक कृषक-पत्नी बादल से याचना करती है—रे भैया बादल ! बरसो । मैं गा-गाकर हँसते हुए (प्रसन्नचित्त) रोपाई करूँगी ॥१॥

हे बादल । बरस-बरस कर मेरा मन बढ़ाओ (उत्साह बढ़ाओ) । नदी-नाले और सागर भर दो ॥२॥

मेरी खेती लहर-लहर लहराये जिसे देख-देखकर मन मगन हो ।।३।।

घर-घर सुख के साज सजाओ, जिससे हमारे देश में अकाल न आये ।।४।।

मैं मन से तुम्हें तनिक भी नहीं भूलूँगी और हे बादल ! मैं रोज सुबह-शाम तुम्हारा गुणगान करूँगी ।।५।।

टिप्पणी—किसानों के लिए समय पर वर्षा उनके सुख में वृद्धि करने वाली होती है।

७३. लगवही

सन्दर्भ—कृषक पत्नी का कथन पति से ।

चढ़त असढ़वा घुमड़ि घन गरजै,
कि घूमि-घूमि हो ।
भल देत नोटिसवा कि घूमि-घूमि हो ।।१।।
साजु-साजु हरबैला पियवा किसनवा,
कि घूमि-घूमि हो ।
गिरहतिया के दिनवा कि आइ गये हो ।।२।।
चढ़त रोहनिया बोवाउ पिया धनवा,
कि मानि लेहु हो ।
भल हमरौ कहनवाँ कि मानि लेहु हो ।।३।।
डारु-डारु-डारु पिया बियवा बियड़वा,
कि ताकु मति हो ।
जात हथवा से तकवा कि ताकु मति हो ।।४।।
तीनि असाढ़ पिया, तेरह कतिकवा,
कि जानि लेहु हो ।
घाघ केर उपदेसवा कि जानि लेहु हो ।।५।।

लगत चिरइया रोपाउ पिया धनवाँ,
कि तब भरिहैं हो।
कोठिला औरउ धनसरवा कि तब भरिहैं हो ॥६॥
मुसरन ढोल पिया तब भल बजिहै, ।
कि होइ जइहै हो।
घरवा-घरवा सुरजवा कि होइ जइहै हो ॥७॥
—मनिहारी (गोंडा)

कृषकपत्नी अपने पति से निवेदन करती है—आषाढ़ में, बादल घुमड़कर गरजते हैं, मानों घूम-घूम कर नोटिस (सूचना) दे रहे हैं ॥१॥

हे किसान प्रियतम ! अब हल और बैल साजिए, क्योंकि गृहस्थी के दिन आ गये हैं ॥२॥

हे प्रियतम ! अब प्रतीक्षा न कीजिए, खेत में बीज डालिए अन्यथा हाथ से अवसर निकला जा रहा है ॥४॥

तीन आषाढ़ और तेरह कार्तिक का उपदेश घाघ कवि ने दिया है, उसे जान लीजिए ॥५॥

हे प्रियतम ! चित्रा नक्षत्र के लगते ही धान की रोपाई कीजिए; उसी के फलस्वरूप कोठिला और धनशाला भरेंगे ॥६॥

हे प्रियतम ! मूसलों ढोल बजेंगे अर्थात् तब बड़ी प्रसन्नता होगी, घर-घर सुराज हो जाएगा ॥७॥

७४. कटवही

जब खेती पक कर तैयार हो जाती है तो किसान उसे मजदूरों की सहायता से काटता है। इस अवसर पर मजदूर जो लोकगीत गाते हैं, उन्हें कटवही या कटौनी गीत कहते हैं।

सन्दर्भ—सखियों से कटाई के लिए कहना ।

खेत मँ लागी कटनिया हो राम ।। टेक ।।
माथ कै झूमर झलामल झलकै,
खनकै कलइया क कँगनवा हो राम ।।१।।
मिलि-जुलि सखिया लउनी बँधवावौ,
भरे चलौ घर कै बखरिया हो राम ।।२।।
सासू-ननदिया रहिया लखत हैं,
सइयाँ कै साजौ सेजरिया हो राम ।।३।।

—बस्ती

एक सखी कहती है—खेत में कटाई हो रही है।

मस्तक का झूमर झलमल झलक रहा है और कलाई का कंगन खनक रहा है ।।१।।

हे सखियो ! मिलजुल कर लौनी बँधवाओ और घर की बखरी (कोठरी) भरे चलो ।।२।।

सास और ननद रास्ता देख रही होंगी (कि हम लोग खेत से घर पहुँचें) । फिर प्रेम से पति की सेज सजाओ ।।३।।

७५. चर्खा गीत

चर्खा चलाते समय जो लोकगीत गाये जाते हैं, उन्हें चर्खा गीत या चर्खा के गींत कहते हैं ।

सन्दर्भ—एक गृहिणी का कथन ।

धरि गये चनन चरखवा,
सिरिजि गज-ओबरि हो राम ।
दिन भर कतबै चरखवा,
ओहरिया ओढ़ाय देबै हो राम ।

साँझै सुतबै मथरिया के कोरवा,
हरिहिं बिसरइबै हो राम।
एहि बिधि नेम निमहबै
तौ कुल पति रखबै हो राम।
—जौनपुर।

एक गृहिणी कहती है—मेरे पतिदेव चन्दननिर्मित चर्खा भली-भाँति सूतिकागृह में रख गये हैं।

मैं दिन भर चर्खा कातूंगी और फिर उसके ऊपर ओहार चढ़ा दूंगी।

सायंकाल माँ की गोद में सो जाऊँगी और अपने पति को विस्मृत कर दूंगी।

इस प्रकार मैं नियम (पातिव्रतधर्म) का निर्वाह करूँगी और अपने कुल की मर्यादा रखूँगी।

●

जातिपरक लोकगीत

अवधी के ग्राञ्माचलों में विभिन्न जातियाँ निवास करती हैं, जिनके अपने-अपने गीत हैं। इनमें से कुछ तो प्रसिद्ध हैं, जैसे-बिरहा, कहरवा, धोबिया आदि। यहाँ कतिपय जाति-गीत प्रस्तुत हैं।

७६. बिरहा

अहीरों का जातीय गीत बिरहा के नाम से प्रसिद्ध है। अहीर लोग बिरहा के विबिध गीत गाने से पूर्व देवी-देवताओं का स्मरण करते हैं, जिसे बिरहा की सुमिरनी कहते हैं। यहाँ एक सुमिरनी देखिये—

सुमिरनी

सन्दर्भ—इसमें प्रार्थनीय देवता तथा विभिन्न देवियों का स्मरण करते हुए उनसे प्रार्थना की गयी है।

सुमिरी डिहवा ठाकुर आज, होइजा दहिने पै सिरताज,
बाजै डंका महराज तोहरे अस्थनवा ॥ बाजै० ॥
सुमिरी कलकत्ते की काली, मइया परगट होइजा हाली,
लइकै खप्पर औ भुजाली, न करा बेल्हमवा ॥ लइकै० ॥
सुमिरी सूरसती महतारी, बरंभा देउता की दुलारी,
बइठा हमरी हियारी, दइ दिया बुद्धि गियनवाँ ॥ बइठा०॥
सुमिरी पाटन की पटेसरि बिन्धाचल की बिन्धेसरि,
लीला कंसा का देखाइउ उड़ि के असमनवाँ ॥ लीला० ॥
सैरा मातादीन बनावा, किरतन बजरंगी कै गावा,
जागा धरती माई, पानी औ पवनवाँ ॥ जागा०॥

—भखरी (सुलतानपुर)

लोकगायक कहता है—हे स्थानीय ठाकुर (देवता) मैं आज आपका स्मरण करता हूँ, आप मेरे दाहिने पर सिरताज हो जाइए अर्थात् आप मेरे अनुकूल हो जाइए। फिर आपके स्थान पर डंका बजे।

हे कलकते की काली! मैं आपका स्मरण करता हूँ, आप खप्पर और भुजाली लेकर शीघ्र प्रकट हो जाइए, विलम्ब न कीजिए।

हे सरस्वती मात ! मैं आपका स्मरण करता हूँ, आप ब्रह्मा देवता की दुलारी हैं। आप हमारे यहाँ बैठिए और बुद्धि-ज्ञान दे दीजिए।

हे पाटन की पटेश्वरी और विन्ध्याचल की विन्ध्येश्वरी ! मैं आपका स्मरण करता हूँ, आपने आकाश में उड़कर राजा कंस को अपनी लीला दिखाई है। यह शेर (सैरा) लोकगीतकार मातादीन ने बनाया है। उसने वज्रांगी हनुमान का कीर्तन गाया। हे धरती माता, वरुण और वायुदेव जागिए।

७७. बिरहा

सन्दर्भ—मिथिला में यज्ञ और धनुष विवरण।

विस्वामित्र राम गोंहराई,
बच्चा सुनि ल्या कान लगाई।
चिट्ठी मिथिलापुर ते आई,
तुहका लै चलबै साथ माँ अपने ।।१।।

साथ माँ अपने लै चलबै, लखनौ का रघुबीर सुना।
अहै बलउवा जनकपुरी का, हुआँ पै भारी भीर सुना।
बड़े-बड़े राजा जुटे जनकपुर, एक ते एक अम्मीर सुना।
रावन औ बानासुर आये, बड़े मिजाजी बीर सुना ।।२।।
राजा जनक धनुष जग करिहैं, तेहि कै हाल सुनावा ले।
मुनिजी एक धधीच रहे, उनकी हड्डी कै धनुष रचावा ले।
उइ धनुहा का राजा जनक जी, नित पूजा करवावा ले।
चउका रानी देइँ हमेसा, खुब से ध्यान लगावा ले।
एक दिन रानी नहीं गईं तौ बिटियै हुकुम लगावा ले ।।३।।
चउका देन का गईं जानकी, गौरि गनेस मनावा ले।
धनुहा पर कुछ गाढ़र जामा, सीता मनै न भावा ले।
अपने हाथे उठाय के धनुहा, जतन से चौक लगावा ले।
चउका लगाय के उइ चली आईं, राजा पूजै आवा ले।
हटा धनुष जौ राजा देखा, मनै बहुत हरखावा ले।। ४।।

लउटि के राजा रानी ते पूछैं, के चउका दै आवा ले।
हाथ जोरि के रानी बोलीं, तख्सीर माफ कै डावा ले।
चउका देन का गईं जानकी, कउन यस काम नसावा ले।
यतनी बात सुनें जब राजा, बिना मउत मरि जावा ले।
सीता कै सत देखै ताईं, ऐसा ग्यान बढ़ावा ले।
कोरा कागद कलम दवाइत, झट्टै ते मँगवावा ले।
खर-खर लिखी पत्निका, देस-देस भेजवावा ले।।५।।
जे यह धनुहा तूरि बहावै, ब्याहै जनकदुलारी का।
लछिमन कहते हरे गुरू जी, यक दम निपट अनारी का।
पिता हमारे तुहीं अहा मुनिजी, बिस्वामित्र पुजारी का।
जउनै कहबा तउनै करबै, धरब न पाँव पिछारी का।
तब तौ रामखेलावन सायर, बार-बार गुन गावा ले।
यहर-वहर कै छोड़ि द्या भाई, भजौ राम का नाम।
तुहका लै चलबै साथ माँ अपने ।।६।।

—जामो (सुलतानपुर)

विश्वामित्र ने राम को पुकारा—हे बच्चा! कान लगाकर सुन लो। मिथिलापुर से निमन्त्रण-पत्रिका आई है, तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा ।।१।।

हे रघुवीर (राम) सुनो! मैं अपने साथ लक्ष्मण को भी ले चलूँगा। जनकपुरी का बुलावा है, वहाँ बड़ी भीड़ होगी। जनकपुर में बड़े-बड़े राजा आकर एकत्र हो गये हैं, जो एक से एक घनी हैं। यहाँ तक कि रावण और बाणासुर भी आये हैं, जो गर्बीले वीर हैं ।।२।।

राजा जनक धनुष-यज्ञ करेंगे, जिसका परिचय सुनो। एक मुनि दधीच थे, उनकी अस्थि का धनुष रचाया गया था। राजा जनक उस धनुष की नित्य पूजा कराते थे। उनकी रानी सुनयना प्रतिदिन चौका देती थीं, इसे ध्यान लगाकर सुनो। एक दिन रानी चौका लगाने नहीं गईं तो उन्होंने अपनी लड़की को ही चौका लगाने की आज्ञा दी ।।३।।

गणेश-गौरी को मनाकर जानकी सीता चौका लगाने गईं। उन्होंने अपने हाथ से धनुष उठाकर ढंग से चौका लगाया। चौका लगाकर वे चली आईं तो राजा जनक पूजा करने के लिए आये। धनुष को हटाकर जब राजा ने देखा तो मन में बहुत हर्षित हुआ ।।४।।

लौटकर राजा ने रानी से पूछा—कौन चौका दे आया है? तब रानी हाथ जोड़कर बोलीं—मेरी त्रुटि को क्षमा कीजिए। वास्तव में चौका देने सीता गई थी, कौन-सा काम खराब हो गया। इतनी बात जब राजा ने सुनी तो वह बेमौत मर (से) गये। फिर सीता की सत्यता जानने के लिए उन्होंने ऐसा विचार किया कि सादा कागज, कलम और दवात मँगवाया और झट-पट पत्रिका लिखी और देश-देश भेजवायी ।।५।।

पत्रिका में उन्होंने लिखा—जो इस धनुष को तोड़ फेंके, वह जनक नन्दिनी सीता से विवाह कर ले।

यह सुनकर लक्ष्मण ने बिश्वामित्र से कहा—हे गुरुजी यह तो एकदम अनाड़ीपने की बात है। मुनिजी! अब तो आपही हमारे पिता हैं, हम तो आपके ही पुजारी हैं। आप जो कहेंगे, हम वही करेंगे और पाँव पीछे नहीं हटाएँगे। यह जान रामखेलावन सायर बार-बार गुण-गान करने लगा—हे भाई! इधर-उधर की बातें छोड़ दो और राम का नाम भजो ।।६।।

७८. बिरहा

सन्दर्भ—कृष्ण जन्म तथा कंस की व्यग्रता।

अब तौ जलमे कन्हाई, देवकी बसुदेव सुख पाई।
भइया! सुनि लेउ ध्यान लगाई, हरि परगटे आधी राति ।।१।।

आधी राति हरि परगट भए हैं, आप रूप वै भगवाना।
देवकी बसुदेव दुइनौ जने, हाथ जोरि बिनती ठाना ।।२।।

बड़ी बात भै आज जौन दरसन दिहेउ किरपा नीधाना।
अठएँ गरभ कि तइयाँ कंसा, किहे रहा बन्दीखाना ।।३।।

देवकी बसुदेव ते किरसन बोले मीठी जाबाना।
यही समइया हमैं उठाय के नन्दघरा को लै जाना ।।४।।

एतना कहिके सिरीकिरसन जी आप भए अन्तरध्याना।
रूप बनाय लिहिन लरिका कै, किहौं-किहौं अब चिल्लाना ।।५।।

देवकी वसुदेव से बोली—हरि को हाली ते लै जाना।
बसुदेव बन्दीखाना माँ, वही समय माँ अकुलाना ।।६।।

एहि बन्दी ते कइसे निपटी, गोकुल का सुत लै जाना।
गजप राम कै मरजी होइगै, चौमुख खुलिगे केंवारा ।।७।।

बासुदेव ललना का लइके, भे गोकुल को तैयारा।
आधी राति सनासन सनकै, बरसैं इन्द्र मुसरधारा ।।८।।

बासुदेव जब बाहेर आये, मेघ मचावै चिग्घारा।
जब लइकै घाटे पै आये, जमुना मारैं किलकारा ।।९।।

चली मारि किलकारा तब तौ बासुदेव दिल बीचारा।
कइसे कै परवा उतरी रामा, जमुना बहैं अपरम्पारा ।।१०।।

यही सोचि कै हले बासुदेव, छोड़ि जिन्दगी साहारा।
नाक भरे पानी माँ आए तब हरि गोड़वा पासारा ।।११।।

चरन छुअत सूखी जमुना, बासुदेव पहुँचिगे उस पारा।
देखैं तौ भै कन्या पैदा, जेहिकै बिन्ध्या नाम परा ।।१२।।

लड़की सोवत रही निधरका, रानी रोहिनी के कोरा।
रानी रोहिनी के कोरा माँ लाल वलारैं सँभार के ।।१३।।

देवकी बासुदेव के भाई, वइसेन बेड़िया परी भरके।
लड़की आय गई बन्दी माँ, किहौं-किहौं अब चिल्लाई ।।१४।।

भै कलबलहटि वहि समया माँ, लरिका पैदा भा भाई।
देवकी कै लरिका भा पैदा, सुनिके कंसा अकुलाना ॥१५॥
आइ मुहार घेरि लीन कंसा, डपटि के लरिका माँगावा।
देवकी बासुदेव कंसा ते करै लागि तब बाहाना ॥१६॥
हाथ जोरिकै देवकी बोली, पेटपोछनी पैदा भा ना।
अबकी तौ कन्या भै पैदा, लाइनि तोहरे सामाना ॥१७॥
भैनी जानि कै छाँड़ौ भइया, एत्ता मोर कहा माना।
कंसा पाजी बड़ा अनारी, भैनी-भैना ना माना ॥१८॥
कन्या के पटकै की तइयाँ, हथवा ऊपर का ताना।
बिन्ध्यारानी गईं सरग का, हाथ खुला कंसा का ना ॥१९॥
उप्पर ते बिन्ध्या बोली की, सुन पाजी अब कंसा ना।
हमका पटके ते का पायो, बागी तोहार पैदा भा ना ॥२०॥

—पूरेभरथा (सुल्तानपुर)

श्रीकृष्ण ने जन्म लिया, जिससे देवकी और वसुदेव ने सुख पाया। लोकगायक कहता है कि हरि अर्द्धरात्रि में प्रकट हुए। ध्यान से सुनिये ॥ १ ॥

जब हरि प्रकट हुए तो देवकी और वसुदेव ने हाथ जोड़कर उनसे विनती की ॥ २ ॥

उन्होंने कहा—यह बड़ी बात हुई कि हे कृपानिधान आपने दर्शन दिया। आठवें गर्भ के लिए ही कंस ने हमें बन्दीगृह में डाल रखा था ॥ ३ ॥

देवकी-वसुदेव से मधुर वाणी में कृष्ण बोले—इसी समय मुझे उठाकर नन्दगृह ले जाना ॥ ४ ॥

इतना कहकर श्रीकृष्ण अन्तर्धान हो गये और फिर बालक का रूप धारण कर 'किहौं-किहौं' रोने लगे ॥ ५ ॥

देवकी वसुदेव से बोली—हरि को शीघ्र ले जाओ। उस समय बन्दीघर में वसुदेव बहुत अकुलाये ।। ६ ।।

वे सोचने लगे—इस बन्दीघर से कैसे निकलूँ, पुत्र को गोकुल ले जाना है। लोकगीतकार कहता है—भगवान् की ऐसी आश्चर्यजनक इच्छा हुई कि बन्दीगृह के चारों दिशाओं के किवाड़ खुल गये ।। ७ ।।

वसुदेव लाडले पुत्र को लेकर गोकुल जाने के लिए तैयार हुए। उस समय निःशब्द अर्द्धरात्रि थी और इन्द्र मूसलाधार वर्षा कर रहे थे ।। ८ ।।

वसुदेव जब बन्दीगृह से बाहर आये तो मेघ चिग्घाड़ मचा रहे थे। वे कृष्ण को लेकर जब तट पर पहुँचे तो यमुना किलकारी मार रही थीं (प्रसन्नता प्रकट कर रही थीं) ।। ९ ।।

यमुना की उत्ताल तरंगों की गर्जना सुनकर वसुदेव ने हृदय में विचार किया—हे राम ! किस प्रकार पार उतरूँ, यमुना तो अपरम्पार बह रही हैं (जिनको पार करना अत्यन्त कठिन है) ।। १० ।।

यही सोचकर वसुदेव जीवन की आशा त्याग कर जल में प्रविष्ट हुए। वे जब नासिका भर जल में पहुँचे तो हरि ने अपना चरण फैलाया ।। ११ ।।

चरण का स्पर्श करते ही यमुना सूख गयीं और वसुदेव उस पार पहुँच गये। वे जब गोकुल में नन्द के घर पहुँचे तो देखा कि उसी समय वहाँ एक कन्या ने जन्म लिया था, बाद में जिसका नाम विन्ध्या पड़ा ।। १२ ।।

वह बालिका रानी रोहिणी की गोंद में निश्चिन्त सो रही थी। वसुदेव ने रोहिणी की गोद में सँभालकर बालक कृष्ण को लिटा दिया ।।१३।।

वे उस बालिका को लेकर बन्दीगृह आये तो देवकी और वसुदेव के

वैसे ही बेड़ी पड़ गई। वह बालिका बन्दीघर में आ गई तो 'किहौं-किहौं' रोने लगी ।।१४।।

उस समय हलचल हुई कि लड़का पैदा हुआ है। 'देवकी के लड़का पैदा हुआ है', यह सुनकर राजा कंस आकुल हो उठा ।।१५।।

उसने आकर बन्दीघर के दरवाजे को घेर लिया और डपट कर लड़का मँगाया। तब देवकी–वसुदेव कंस से बहाना करने लगे ।।१६।।

हाथ जोड़कर देवकी बोली—अबकी बार तो पेटपोछनी कन्या पैदा हुई है, जिसे आपके सम्मुख लाई हूँ ।।१७।।

हे भैया ! अपनी भांजी जानकर छोड़ दीजिए, इतना मेरा कहना मानिए। कंस बड़ा अनाड़ी दुष्ट था, उसने भांजी-भांजा का विचार नहीं किया ।।१८।।

उसने कन्या को पटकने के लिए ऊपर को हाथ ताना। विन्ध्या स्वर्ग को चली गई और कंस का हाथ खुला का खुला रह गया ।।१९।।

ऊपर जाकर विन्ध्या बोली—हे पाजी कंस सुन। मुझे पटक कर तूने क्या पाया ? तेरा बागी (विद्रोही, सर्वनाशक) उत्पन्न हो चुका है ।।२०।।

७९. बिरहा का लचका

वास्तविक बिरहा गाने के बाद लोक गायक उसके बाद की घटना का वर्णन लचका अर्थात् उपसंहार रूप में करता है, जैसा कि प्रस्तुत 'लचका' से स्पष्ट है ।

बिन्ध्या गई अब बिन्ध्याचल का,
ऐसे कहिकै कंसा रजवा राम।
बिन्ध्या कै बोलिया सुनि कंसा कै
ठंडा परा मिजजवा राम ।।१।।

बसुदेव देवकी ते कहै तब कंसा
हमते भा उखमजवा राम ।
दुइनौ जन कै बन्दी कटबै,
होइ चहै केत्तौ अकजवा राम ।।२।।

दुइनौ जनकै बन्दी कटिगै,
पहुँचे जाइ भवनवा राम ।
ताबेदारन ते कहै कंसा—
पकरौ पंडित महरजवा राम ।।३।।

कहे रहा लरिका, पैदा होइगै लड़की,
ससुरी उड़िगै अकसवा राम ।
कंसा कहै जोतिषी का मारौ,
कइकै बन्द दरवजवा राम ।।४।।

एतना सुनतै पंडित उठिगे—
छोड़ै नाहीं दाढ़ीजरवा राम ।
जुटी नारी सब गोकुला की—
अब लेती मउज-बहारना ।।५।।

ढोलक अउर मजीरा बाजै,
हरि परगटे आधी राति ।।६।।

कंसराज से इस प्रकार कहकर विन्ध्या देवी विन्ध्याचल (विन्ध्य-पर्वत) पर चली गईं। विन्ध्या की वाणी सुनकर कंस का दिमाग ठंडा पड़ा ।।१।।

तब उसने वसुदेव और देवकी से कहा कि मुझसे अपराध हुआ। अब मैं दोनों को बन्दीगृह से मुक्त करूँगा, मेरा चाहे जितना अनर्थ हो ।।२।।

फिर क्या था, दोनों लोगों की बेड़ियाँ कट गईं । फिर अपने आज्ञा-पालक सेवकों से कंस ने कहा—पंडित महाराज को पकड़ो ।३।

इसने कहा था कि लड़का होगा, किन्तु लड़की पैदा हो गई, जो आकाश में उड़ गई । फिर कंस ने कहा—इस ज्योतिषी पंडित को दरवाजे बन्द करके मारो (खूब पिटाई करो) ।४।

इतना सुनते ही पंडित उठ गये कि यह दुष्ट छोडेगा नहीं । उधर गोकुल में सब नारियाँ एकत्र हुईं और आनन्द मनाने लगीं ।५।

फिर तो ढोलक और मँजीरा बजने लगे । अर्द्धनिशा में भगवान् ने जन्म लिया ।। ६।।

८०. बिरहा

सन्दर्भ—मयूरध्वज चरित्र ।

अरजुन सिरीक्रिस्न भगवान, पहुँचे मोरध्वज मक्कान,
परिच्छा लेबे की तइयाँ खड़े समनवा ना ।। परिच्छा०।।
राजा बड़े प्रेम से धाये, हथवा जोड़े सीस झुकाये,
अरजुन क्रिस्न का बइठाये दै असनवा ना ।।अरजुन० ।।
सँग माँ रहा सेर यक भारी, बइठै क्रिस्न की गोड़वारी,
पंचौ, सुनि लिया आगे कै बयनवा ना ।।पंचौ० ।।
एक्कै माँगन अहै हमारा, पहिले सेर का देउ अहारा,
पाजी दहिनी भुजा कै माँगै ई भोजनवा ना ।।पाजी० ।।
राजा बार-बार उच्चारा, मालिक जो माँगा दै डारा,
बाबा, हाजिर बाटै सूतल बा ललनवा ना ।।बाबा० ।।
राजा, अहा बड़ा तू दानी, यहि माँ लाभ, नहीं बा हानी,
दानी, दै न डारा हमरौ मँगनवा ना ।। दानी० ।।
रानी, गिरे जौ एक्कौ आँस, सेर नाहीं खाये माँस,
जइहै बेटवा नसाय औ धरमवा ना ।। जइहै० ।।

रानी-राजा लइके आरा, बेटवा चीरि कइके डारा,
सेर कइ गवा अहारा, भा सपनवा ना ।। सेर० ।।

रानी भोजन किहिन तयार, जेवैं अरजुन क्रिस्न मुरार,
लागे पूछै बारम्बार, कहाँ गा ललनवा ना ।।लागे०।।

रानी बार-बार गुन गाई, अपने सेर का दिहा खवाई,
तउके हमका बनावा बेसरमवा ना ।।तउके० ।।

रानी, भोजन परसि के लावा, आगे हमरे तू धरि जावा,
फिरि दरवाजे जाय पुकारा लइके नमवा ना ।।फिरि० ।।

रानि, जाय पुकार लगाई, लरिका सबद सुनै जौ पाई,
आगे आय खड़ा भा भाई वहि दिनवाँ ना ।। आगे० ।।

रानी हरि के चरन पखारी, ओका होंठे सिर पै धारी,
छिरकैं सगरी अटारी औ महलवा ना ।। छिरकैं०।।

परिच्छा पूर भै मोरे भाई, परगट पारब्रह्म होइ जाई,
कहते बरँभादत्त खतम भा बयनवा ना ।। कहते०।।

—भखरी (सुलतानपुर)

अर्जुन और भगवान् श्रीकृष्ण राजा मोरध्वज के घर पहुँचे और परीक्षा लेने के लिए उसके सम्मुख खड़े हो गये ।

राजा बड़े प्रेम से दौड़कर आये, हाथ जोड़े और शिर झुकाया फिर अर्जुन और कृष्ण को आसन देकर उस पर बैठाया ।

उनके साथ एक विशालकाय सिंह था, जो कृष्णके पैरों के पास बैठ गया । बिरहा-गायक निवेदन करता है—हे पंचो ! आगे का वर्णन सुन लीजिए ।

कृष्ण ने मयूरध्वज से कहा—मेरी एक यही याचना है कि पहले इस सिंह को आहार दीजिए । यह दुष्ट बाईं भुजा को खाने के लिए माँगता है ।

राजा ने बार-बार कहा—हे स्वामी ! आपने जो माँगा, मैंने वह दे डाला । मेरा पुत्र सो रहा है, जो सेवा में प्रस्तुत है ।

कृष्ण ने कहा—हे राजन् ! यदि तू बड़ादानी है तो इसमें लाभ है, हानि नहीं । हे दानी ! मेरी याचना दे न डालो ।

राजा ने रानी को समझाया—हे रानी ! यदि एक भी आश्रु गिरेगा तो याचकों के कथनानुसार सिंह मांस नहीं खाएगा । तब पुत्र नष्ट हो जाएगा और धर्म भी नहीं रहेगा ।

इसके पश्चात् रानी-राजा ने आरा लेकर पुत्र को चीर डाला । सिंह ने उसका आहार कर लिया । मानो यह कोई स्वप्न ही हो गया हो ।

फिर रानी ने भोजन तैयार किया । अर्जुन और मुरारी कृष्ण भोजन करने लगे । फिर बारम्बार पूछने लगे कि प्रिय पुत्र कहाँ गया ?

रानी ने बार-बार निवेदन किया—आपने अपने सिंह को उसे खिला दिया और अब मुझे बेशर्म बना रहे हैं ।

भगवान् कृष्ण ने कहा—हे रानी ! तुम भोजन परस कर हमारे आगे रख जाओ, फिर द्वार पर जाकर अपने लड़के का नाम लेकर पुकारो ।

रानी ने जाकर पुकार लगाई । लड़के ने जब माँ का शब्द सुना तो उसी दिन आगे आकर खड़ा हो गया ।

रानी ने भगवान् के चरणों का प्रक्षालन किया, चरणोदक को अपने ओष्ठों तथा शिर पर धारण किया, फिर सम्पूर्ण अट्टालिका और महल में छिड़का ।

इस प्रकार परीक्षा पूर्ण हो गई । लोकगायक ब्रह्मादत्त कहते हैं कि यह (मयूरध्वज की दानशीलता से सम्बन्धित) वर्णन समाप्त हो गया ।

८१. बिरहा—बारहमासा

सन्दर्भ—बिरहे में बारह महीनों का वर्णन ।

अहै असाढ़ निअरान, सइयाँ ना बना नदान,
घरे रहा बज्जर परे नौकरिया माँ ।। घरे रहा०।।
सावन कै आये बहार, करब सोरहौ सिंगार,
मान रखबै तुहार हम कजरिया माँ ।।मान रखबै० ।।
बालम लै दिया, जम्फर सारी, करबै नैहर कै तयारी,
काट्या गोझिया सोहारी ससुररिया माँ ।। काट्या०।
लागे मसवा भदउना, हमहूँ बालम करबै नवना,
सउँना काटि के लाया कुटबै ओखरिया माँ ।।सउँना०।।
कुआर ना करा नदानी, अबहीं चढ़ी बा जवानी,
माटी न लगावा हमरी चुनरिया माँ ।।माटी०।।
कुआर दसमी कै मेला, जइहैं ज्वान बूढ़ गदेला,
हमहूँ बालम जाबै एकहि संघरिया माँ ।। हमहूँ०।।
कातिक कै आवा सैराठ, काँधे धइल्या हर जुआठ,
गोहूँ बोवा तीन सौ आठ, सारी सिरिया माँ ।।गोहूँ०।।
कातिक कै आई दिवाली, हाथे धइल्या दिया दियाली,
बालम, तू जलाया बहिरी हम भितरिया माँ ।। बालम०।।
लागे मसवा अगहन, दै दिया ननदी कै गवन,
चढ़ी जवानी रहैं ससुरे नगरिया माँ ।।चढ़ी०।।
नइहर ना सिखिहैं सहूर, करिहैं ससुरे माँ कसूर,
इनकै सइयाँ मारे बाँधि के रसरिया माँ ।।इनकै०।।
ठंढी अधिक पूस माँ परत, लावा हमैं धोती चौपरत,
हमार नाहीं ना गुजारा झिन्नी सरिया माँ ।। हमार०।।
बालम, बार-बार समुझावा, छोट बिलाउज ना सिवावा,
जाड़ लागै हमरी पतरी कमरिया माँ ।।जाड़०।।

आवा माघ मौजी महिनवा, मारै सासु ननदिया तनवा,
बोंली बोलैं गोली लागथै जिगरिया माँ ।।बोली०।।
होइजा सासु ननद से निआरा, कइल्या आपन बँटवारा,
हम गुजारा करबै टुटही झोपड़िया माँ ।।हम०।।
फागुन लउबै अबीर, बालम तू गाया कबीर,
होली खेलैक होये रंग भरि पिचकरिया माँ ।।होली०।।
फगुवा दुआरे गवाया, बीरा पान कै खवाया,
हमहूँ सुनबै बइठी अपनी बारादरिया माँ ।।होली०।।
चैत माँ काट्या गोहूँ चनवा, सथवा हमहूँ रहब सजनवा,
दिन भै काटब ढोउब राति के अँजोरिया माँ ।।दिन०।।
बढ़िया हवा चलै पछियाँव, दायँ माँड़ि के मड़ाव,
हम ओसाय लेबै भरि-भरि के पलरिया माँ ।।हम०।।
लागे मसवा बैसाख, स्वामी सुनि लीजै अरदास,
बालम, हाजिर रहा हमारी नजरिया माँ ।।बालम०।।
जेठवा करै जुलुमवा भारी, लुकवा बरसै चारिउ वारी,
बालम, घूमइ न जाया दुपहरिया माँ ।।बालम०।।
बारहमासा कै हवाल, भाई गावैं जगपाल,
माई, सूरसती बइठा तू हिअरिया माँ ।।माई०।।

—भखरी (सुलतानपुर)

बारहमासों में अधिकांशत: बिरहणियों के विरह का ही वर्णन रहता है, किन्तु इस बिरहा के बारहमासे में परदेश में नौकरी करनेवाले पति के छुट्टी में घर आने के बाद पुन: डयूटी पर जाने के लिए तैयार होने पर नवोढ़ा पत्नी उससे नौकरी पर न जाने का अनुरोध करती है।

कृषक पत्नी पति से कहती है—आषाढ़ मास निकट है, हे प्रियतम! नादान न बनिए, घर पर रहिए। ऐसी नौकरी पर वज्र पड़े। अभिप्राय यह कि असाढ़ का महीना निकट है, जिसमें काफी दिनों बाद पानी की

फुहार पड़ेगी, दम्पतियों को उसे देखकर आनन्द लेना ही चाहिए, किन्तु आप तो नौकरी पर जाने के लिए तैयार हैं। आप जानबूझ कर अन-जान बन रहे हैं। ऐसी नौकरी से क्या लाभ, जिसमें दाम्पत्य-जीवन का सुख ही नसीब न हो।

नायिका कहती है—आषाढ़ के बाद सावन की बहार आएगी, मैं सोलहों श्रृंगार करूँगी तथा कजली में आपका मान रखूँगी। हे प्रिय-तम ! आप मुझे जम्फर और साड़ी ले दीजिए ना, तब मैं अपने मायके जाने की तैयारी करूँगी। आप अपनी ससुराल में गोझिया और सुन्दर पूड़ियों का आनन्द लीजिएगा।

जब भादों का महीना लगेगा तो मैं भी नवान्न (नवसस्येष्टि) करूँगी। आप सावाँ काटकर लाना, मैं उसे ओखली में कूँटूँगी।

क्वार में आप नादानी न कीजिएगा, अभी तो मेरी चढ़ी जवानी है अर्थात् मैं कामोत्सुका नवयौवना हूँ। आप मेरी चूनर में मिट्टी न लगाइए अर्थात् मेरा यौवन व्यर्थ न कीजिए।

क्वार में विजयदशमी का मेला होगा, जिसमें युवक-युवतियाँ, वृद्ध और बालक जाएँगे। हे प्रियतम ! मैं भी एक साथ (आपके संग) चलूँगी।

कार्तिक का सामीप्य आ गया है। अब कन्धे पर हल और जोंठ रख लीजिए। तीन सौ आठ (३०८) नम्बर का गोहूँ सारी सीर (सम्पूर्ण कृषि-क्षेत्र) में बोइए।

कार्तिक की दीवाली आएगी आप हाथ में दीप-दीपावली ले लीजिगा। हे बालम ! आप बाहर दीपक जलाइएगा और मैं भीतर जलाऊँगी।

अगहन का महीना लगने पर ननद का गौना दे दीजिए। इस यौवनावस्था में वे ससुर की नगरी में रहें।

यदि मायके में शिष्टाचार न सीखेंगी तो ससुराल में गलतियाँ करेंगी। तब इनका पति रस्सी में बाँधकर इन्हें मारेगा।

पौष मास में अधिक ठंडक होती है। मुझे चौपर्त कर धोती लाइए। मेरा झीनी साड़ी में निर्वाह नहीं होगा।

हे बालम ! मैंने आपको बार-बार समझाया कि छोटा ब्लाउज न सिलाइए, क्योंकि उससे मेरी पतली कमर में जाड़ा लगता है।

माघ का आनन्ददायक महीना आ गया है। सास और ननद ताने मारती हैं। वे ऐसी बोली बोलती हैं कि वह हृदय में लगती है।

आप सास-ननद से अलग हो जाइए बँटवारा कर लीजिए, फिर हम टूटी झोपड़ी में गुजारा करेंगे।

मैं फागुन में अबीर लाऊँगी। हे प्रियतम ! आप कबीर गाइएगा। पिचकारी में रंग भर कर हम लोग होली खेलेंगे।

आप अपने द्वार पर फाग गवाइएगा और पान का बीड़ा खिलाइएगा। मैं भी अपनी बारादरी में बैठी हुई सुनूंगी।

चैत्र में गोहूँ-चना काटिएगा। हे साजन ! मैं भी साथ रहूँगी। हम लोग दिन भर काटेंगे और उजाली रात्रि में ढोएँगे।

चैत्र में बढ़िया पछुआ हवा चलती है। इसी अवसर पर मड़नी में गोहूँ माड़िएगा, फिर हम पलरी में उसे भर-भर कर ओसा लेंगे।

वैशाख मास लगने पर हे स्वामी। मेरी विनती सुन लीजिए—मेरी दृष्टि के सामने उपस्थित रहिए।

ज्येष्ठ बड़ा जुल्म करता है, चारों ओर लू बरसती है। हे बालम ! दोपहर में घूमने न जाइएगा।

यह बारह महीनों का वर्णन जगपाल भाई गा रहे हैं। हे माता सरस्वती ! तू मेरे हृदय में विराजमान हो।

८२. कहरवा

कहारों का प्रसिद्ध गीत 'कहरवा' या 'कहरा' के नाम से विख्यात

है। कहार प्रायः अपने यहाँ विवाह के अवसर पर ये गीत गाते हैं, किन्तु अब राष्ट्रीय जागृति के साथ-साथ राष्ट्रीय कहरवा भी गाये जाते हैं।

सन्दर्भ—किसी नवयुवक का युद्ध में जाने के लिए तैयार होना।

सासु ढिग गइली भोरहरी बहुरिया,
सजन सरहदवा पै जइहैं ॥टेक॥
देसवा क सुनि के पुकार, सजन सरहदवा पै जइहैं ॥१॥
पापी रे परोसिया कहनवा न मानै,
धइके अँचरवा मयरिया कै तानै,
जननी के करेला उघार, सजन० ॥२॥
धीमी रे बचनिया ससुइया जी बोलली,
सँग जइहै हमरो दुलार, ललन० ॥३॥
कोखिया जुड़वले जनमि अस पुतवा,
आज सुफल मोरे छतिया कै दुधवा,
पहिरइ बिजय कै हार, ललन० ॥४॥
घरवा में सुनलीं जे लहुरी ननदिया.
हँथवा में रखिया औ मँथवा पै रोरिया,
सँग जइहै रखिया कै प्यार, बिरन० ॥५॥
हाली-हाली धावली दुअरिया बहुरिया,
लइके सुहगवा हमार हो, सजन० ॥६॥
हथवा पकरि बोली धीमी रे अवजिया,
रखिहौ सजन मोरे सेंधुरा कै लजिया,
मास्टर मनइहैं जै-जैकार हो, सजन० ॥७॥
—बभनौटी (वाराणसी)

प्रातः बहू अपनी सास के पास गई और उससे बतलाया कि पति जी सीमा पर जाएँगे।

देश की पुकार सुनकर पतिजी सरहद पर जाएँगे ॥१॥

पापी पड़ोसी देश कहना नहीं मानता और भारतमाता के आँचल को तानकर खींचता है। इस प्रकार वह माता को नग्न कर रहा है, इसीलिए सजन सरहद पर जाएँगे ॥२॥

बहू की बात सुनकर धीरे से सासजी बोली—साथ में मेरा दुलार जाएगा, यदि लाल सीमा पर जाएँगे ॥३॥

ऐसे पुत्र ने जन्म लेकर मेरी कोख को सफल कर दिया, आज मेरी छाती का दूध सुफल है, मेरी कामना है कि वह विजय का हार पहने ॥४॥

उसी समय घर में छोटी नन्द ने सुना। उसने कहा कि मेरे वीर भ्राता सीमा पर जाएँगे तो मैं उनके हाथ में राखी बांधूँगी और उनके मस्तक पर रोली लगाऊँगी ॥५॥

बहिन ने ऐसा ही किया। भाई घर से निकल पड़ा। तब जल्दी से बहू (पत्नी) द्वार की ओर यह कहते हुए दौड़ी कि मेरा सुहाग लेकर सजन सरहद पर जाएँगे ॥६॥

वह (वधू) हाथ पकड़कर धीमी आवाज में बोली—हे सज्जन पति ! मेरे सिन्दूर की लाज रखना अर्थात् जीतकर आना।

लोकगीतकार मास्टर जयजयकार करेंगे ॥७॥

८३. कहरवा (परम्परित)

सन्दर्भ—एक व्यक्ति का किसी स्त्री पर मोहित होना।

तोहरे माथे कै टिकुलिया गोरिया नीक लागै राम ॥टेक॥
मूँगे वाली सोहै नथुनिया, झुलनी झोंपेदार।
कँगना तोरे खन-खन बाजैं, चमकै गले का हार॥
तोहरी अँगुरी कै मुँदरिया, गोरिया नीक लागै राम ॥१॥

लट घुँघराली ऐसे चमकैं, जैसे कालीं नगिनिया।
कउने गाँउ की हो तुम गोरी, कउने छयल की रनिया ॥
तोहरी छम-छम बाजै पयलिया, गोरिया नीक लागै राम ॥२॥

—आकाशवाणी (लखनऊ)

एक स्त्री राह-राह जा रही है। एक नवयुवक उससे कहता है— हे गोरी ! तुम्हारे मस्तक पर लगी हुई टिकुली बहुत अच्छी लग रही है।

मूँगे वाली नथ शोभायमान है और झोंपेदार झुलनी (बुलाक)। तुम्हारे कंगन खन-खन बजते हैं और गले का हार चमकता हैं। हे गोरी ! तुम्हारे हाथ की मुद्रिका अच्छी लगती है ॥१॥

घुँघराली लटें ऐसे चमकती हैं जैसे काली नागिन ! हे गोरी ! तुम किस गाँव की रहनेवाली हो और किस सुन्दर युवक की रानी (प्रिय पत्नी) हो। तुम्हारी पायल 'छम-छम' बज रही है, जो बहुत अच्छी लगती है। २॥

८४. कहरवा (समाज-सुधार)

सन्दर्भ—चतुर्दिक् विपत्ति का वर्णन।

के कै आसा जोही, के से कही बिपतिया,
सँसतिया बाटै चारिउ ओरिया ॥टेक॥
लरिका सूट-बूट की खातिर रोजै करैं लड़ाई।
लाली सुर्खी बेंदी माँगै पतउर धिया पराई।
नारी कहै ख्याल ना करै मोर, दहनतिया ॥१॥
बिना दहेज के ब्याह न होवै रहै चहै बर काना।
खर्चा-वर्चा के कारन ते रहै अगर कम गहना।
समधी लौटि जाय लैं द्वारे ते बरतिया ॥२॥

बर कुजोड़ के कारन दुलहिन बार खोलि अभुवावै ।
होय ओझाई राति भै सारी, सोखा भेद बतावै ।
धमसा, फूलमती के साथे बा सवतिया ।।३।।
कटे उमिरिया कइसे मोरी, नइया लागे पार ।
परग-परग पै झगरा बाटै, बिन मेहनत ओंकार ।
जीतैं महालच्छिमी, हारैं सूरसतिया ।।४।।

एक ग्रामीण अपनी दयनीय दशा का वर्णन करता है । वह कहता–है—मैं किसकी आशा करूँ और किससे अपनी विपदा बतलाऊँ । चारों ओर साँसत ही साँसत है ।

लड़के सूट-बूट से लिए नित्य लड़ाई-झगड़ा करते हैं । मेरी पुत्रवधू जो दूसरे की पुत्री है, वह सुर्खी और बेंदी माँगती है । पत्नी कहती है—यह दुष्ट मेरा ख्याल नहीं करता ।।१।।

दहेज के बिना विवाह नहीं होता हैं, चाहे वर एकचक्षु ही क्यों न हो । विभिन्न प्रकार के खर्चों के कारण से यदि पिता पुत्री के लिए कम गहने बनवा सके तो समधी बारात लेकर दरवाजे पर से ही लौट जाता है ।।२।।

अनमेल (बेमेल) वर के कारण नववधू बाल खोलकर अभुवाती है। फिर तो रातभर ओझाई होती है और सोखा रहस्य बताता है कि धमसा और फूलमती क्षुद्र देवियों के साथ सौत भी (लगी) है ।।३।।

ग्रामीण सोचता है—मेरी उम्र कैसे कटेगी और नौका पार लगेगी, क्योंकि यहाँ पग-पग पर तो झगड़े हैं और लोग परिश्रम नहीं करना चाहते, प्रत्युत केवल बैठे-बैठे ईश्वर का नाम लेना चाहते हैं । यहाँ तो महालक्ष्मी जीतती हैं और सरस्वती हारती हैं अर्थात् धनवानों का सर्वत्र आदर होता है और विद्वानों को कोई नहीं पूछता (उनकी उपेक्षा होती है)। रुपये का बोलबाला है और विद्या की उपेक्षा ।

८५. धोबिया

धोबियों का प्रसिद्ध गीत धोबिया है, जिसमें भगवान् शिव, राम राम और कृष्ण की लीलाओं के विविध प्रसंग होते हैं। इसके अतिरिक्त सांसारिक मानव के विविध जीवन-प्रसंग भी बड़ी खूबी के साथ अभिव्यक्त किये जाते हैं। इसे गाते समय धोबी भाव-विभोर हो अपने विवाहादि मांगलिक अवसरों पर नृत्य करते हैं।

सन्दर्भ—सीता-वियोग।

रामचन्द्र जी बनि कै जोगी, बन-बन घूमैं भाय।
सीता ऐसी तिरिया गँवाया, कस रूठे बिधि राम।
अरे रामा कस रूठे बिधि राम ॥१॥
पतरी अँगुरिया रानी सीता कै, मुँदरी बरन करिहाउँ।
ठाढ़ी बिसूरइँ गढ़ लंका माँ, काहे सुधि भूले भगवान।
हे हो, काहे सुधि भूले भगवान ॥२॥

—पन्थौली (सुलतानपुर)

रामचन्द्रजी योगी बनकर वन-वन में घूम रहे हैं। वे कहते हैं—सीता जैसी त्रिया को मैंने गँवा दिया, न जाने क्यों विधि मुझसे रूठे हुए हैं ॥१॥

रानी सीता की अँगुली पतली है और मुद्रिकावत पतली कमर है। वही सीता लंकागढ़ में बिसूर रही हैं कि क्यों भगवान् (राम) सुध भूल नये हैं ॥२॥

८६. चमरवा

'चमार' जाति के गीतों को चमरवा या चमारों के गीत कहते हैं, जिसमें निर्गुन भजनों की अधिकता रहती है।

सन्दर्भ—जीव को प्रेरणा और उपदेश।

चारि पहर करौ काम, भजन करौ एक घरी ।।टेक।।
चारि पहर दिन धन्धा मँ बीते,
चारि पहर गयो सोइ
एक घरी हरिनाम न लीन्ह्यो,
मुकुती कहाँ ते होइ ।।१।।
कंठी बोलै काठ की भाई,
काऽ नित फेरौ मोहिं ।
एक बार हिरदयँ ते फेरौ,
राम मिलावौं तोहिं ।।२।।
माया दिहेउ सूम क मालिक,
ना खरचै ना खाय ।
कहै कबीर सुनौ भाई साधौ,
अब तौ नरका क जाय ।।३।।

—मँझगवाँ (गोंडा)

कोई गुरु उपदेश देते हुए कहता है :—

चार प्रहर (दिन भर) काम करो और एक घड़ी भर (कम-से-कम एक घड़ी) ईश्वर का भजन करो ।

चार प्रहर दिन व्यवसाय-धन्धे में व्यतीत होता है और चार प्रहर सो गये, किन्तु एक घड़ी भी हरिनाम नहीं लिया तो मुक्ति कैसे हो अर्थात् इस प्रकार तो मुक्ति नहीं होती ।।१।।

हे भाई ! काठ की कण्ठी कहती है कि मुझे नित्य क्यों फेरते हो अर्थात् माला लेकर नित्य जाप क्यों करते हो ? एक बार हृदय से फेरो तो मैं ईश्वर से तुम्हें मिला दूँ। अभिप्राय यह कि अनमने मन से प्रति-दिन जप करने से क्या लाभ ? एक बार मन लगाकर जप करने से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त हो सकती है ।।२।।

हे स्वामी (परमात्मा) ! आपने कृपण को धन-दौलत दी, जो न तो

उसको सत्कर्मों में खर्च करता है और न पेट भर (उचित ढंग से) खाता ही है। कबीरदास जी कहते हैं, हे साधु भाइयो ! सुनो, ऐसी दशा में वह कृपण नरक को जाता है ।।३।।

८७. दुसाध-पचरा

दुसाधों के प्रसिद्ध लोकगीत को 'पचरा' कहते हैं। यह किसी के बीमार हो जाने पर गाया जाता है।

सन्दर्भ—देवी-स्मरण ।

सुमिरौं मैं आदि भवानी, जगत मइया ।।टेक।।
सिंघ चढ़ी देबी गरजत आवैं,
लाल धुजा फहरान ।
देबी दुआरे यक हरिअर पीपर,
गड़िगा झंडा निसान ।।१।।
देबी दुआरे यक बँझिनी पुकारै,
देउ बलक घर जाउँ ।
देबी दुआरे यक अँधरा पुकारै,
देउ नयन घर जाउँ ।।२।।
—जौनपुर

मैं आदि शक्ति, जगन्माता का स्मरण करता हूँ।

देवी सिंह पर सवार होकर गरजते हुए आती हैं, उनकी लाल ध्वजा फहराती है। देवी के द्वार पर एक हरा पीपल है, जिस पर उनका निशान झंडा गड़ गया है ।।१।।

देवी के द्वार पर एक बन्ध्या पुकारती है—पुत्र का वरदान दीजिए तो मैं घर जाऊँ। देवी के द्वार पर एक अन्धा पुकारता है—नेत्र दीजिए तो मैं घर जाऊँ ॥२॥

८८. गोंड़ऊ

गोंड़ जाति के लोकगीतों को सामान्यतया 'गोंड़ऊ' कहा जाता है। इन लोगों का 'गोंड़ऊ नाच' तथा 'हरबोलाई' अभिनय प्रसिद्ध है। नृत्य के साथ ये गीत भी गाते हैं।

सन्दर्भ—राम-बारात।

चली है बरात जनकपुर जाना ॥टेक॥
सजी आलकी, सजी पालकी, चौबन्दी चौबाना।
रत्थ साजि घोड़ा सजवाये, चढ़ि के चलेन भगवाना ॥

—मिर्जापुर

जनकपुर जाने के लिये बरात चल पड़ी। छोटी और बड़ी पालकियाँ सज गई हैं, जो चारों ओर से बन्द हैं। रथ साजकर, घोड़े सजवाये और चढ़कर भगवान चल पड़े।

८९. पसिया

पासी जाति के लोकगीतों को 'पसिया' या 'पासियों के गीत' कहते हैं। इन लोकगीतों में जीवन के विविध रूपों के साथ-साथ राम और कृष्ण के चरित्र से सम्बन्धित वर्णन भी उपलब्ध होते हैं।

सन्दर्भ—शबरी के आश्रम में राम-लक्ष्मण का पदार्पण और शबरी द्वारा स्वागत।

आज बसैं सेवरी घर रामा ।।टेक।।
सेवरी राम का आवत जानैं,
चन्दन ते लिपवावयँ धामा ।।आज०।।
गंगा ते सेवरी जल भरि लावैं,
तखत बइठि परभू करैं असनाना ।।आज०।।
बइरी-मकोइया परभू भोग लगावैं,
अवर नहीं सेवरी घर सामा ।।आज०।।
कुस कै गोंदरी सेवरी बिछावैं,
लोटि-पोटि परभू करैं बिसरामा ।।आज०।।
कहत 'कबीर' सुनौ भाई साधो,
सुफल भयो यहि सेवरी कै जामा ।।आज०।।

—बस्थनवा (बस्ती)

आज शबरी के घर में राम निवास कर रहे हैं। शबरी राम को आते जानती है तो चन्दन से अपना धाम लिपवाती है।

शबरी गंगा (नदी) से जल भर लाती है और प्रभु स्रीराम तख्त पर बैठकर स्नान कदते हैं।

प्रभु वेर और मकोय का भोग लगाते हैं। शबरी के घर और कोई भी सामग्री भी तो नहीं है।

शबरी कुश की गोंदरी (चटाई) बिछाती है। प्रभु उस पर लेटकर विश्राम करते हैं, थकान मिटाते हैं।

महात्मा कबीरदास कहते हैं, कि हे साधु भाइयो, सुनो। शबरी का मानव शरीर धारण करना सफल हो गया। उसने भगवान के साक्षात् दर्शन किये और यथाशक्ति उनकी सेवा भी की।

टिप्पणी—वस्तुतः यह पसिया भजन सन्त कबीर रचित नहीं है, किन्तु लोक कबीर, सूर तथा तुलसी सरीखे भक्तों के नाम से अपने भी भजन प्रचलित कर देता है। भारतीय संस्कृति में भक्तों के प्रति भक्ति-भावना अधिक रहती है।

६० सफेड़ा

सुल्तानपुर जनपद की कादीपुर तहसील में 'भर' जाति के लोग भी निवास करते हैं। ये अपने उत्सवों में 'सफेड़ा' नृत्य करते और 'सफेड़ा' नामक गीत गाते हैं। इसे गाते सनृत्य स्त्री-पुरुष परस्पर काव्यात्मक संवाद भी करते हैं, जैसा कि निम्नलिखित लोकगीत से स्पष्ट है।

सन्दर्भ—पति-पत्नी का वार्तालाप।

पुरुष—कउने दिसा रानी कासी-बनारस,
हरे रनिया, कउने दिसा नैपाल ?
कउने दिसा रनिया नगर अजोध्या,
हरे रनिया, जनमा लिहे भगवान ?

स्त्री—दक्खिन दिसा राजा कासी-बनारस,
हरे राजा, उत्तर दिसा नैपाल।
पच्छू दिसा राजा नगर अजोध्या,
हरे राजा, जलमा लिहे भगवान ॥१॥

पुरुष—केथुवा से छावा रानी कासी-बनारस,
हरे रनिया, केथुआ से छावा नैपाल ?
केथुवा से छावा रानी नगर अजोध्या,
हरे रनिया, जनमा लिहे भगवान ?

स्त्री—पथरा से छावा राजा कासी-बनारस,
हरे राजा, टिनवा से छावा नैंपाल।

फुलवा से छावा राजा नगर अजोध्या,
हरे राजा, जलमा लिहे भगवान ॥२॥

पुरुष—केना खनावै जोड़ा पोखरवा,
हरे रनिया, केना बन्हावै घाट ?
कउन अइसी, रानी करे दतुअनिया,
हरे रनिया, झलकैं बतीसी दांत ?

स्त्री—राम खनावै जोड़ा पोखरवा,
हरे राजा, लछिमन बन्हावैं घाट।
सीता अइसी रानी करैं दतुअनिया,
हरे राजा, झलकैं बतीसी दाँत ॥३॥

—बेलवाई (सुल्तानपुर)

पुरुष स्त्री से पूछता हैं—हे रानी, किस दिशा में काशी-वाराणसीं है और किस दिशा में नैपाल देश है ? किस दिशा में अयोध्या नगर है, जहाँ भगवान् राम से जन्म लिया हैं ?

स्त्री कहती है—हे राजा, दक्षिण दिशा में काशी-वाराणसी हैं, उत्तर दिशा में नैंपाल है और पश्चिम दिशा में अयोध्या नगर है, जहाँ भगवान् ने जन्म लिया है ॥१॥

पुरुष पूछता है—हे रानी, किस वस्तु से काशी-वाराणसी छाया यगा हैं, किससे नैपाल और किस चीज से अयोंध्या नगर छाया गया है, जहाँ भगवान् ने जन्म लिया है ?

स्त्री बताती है—हे राजा, पत्थर से काशी-वाराणसी छाया गया है, टीन से नैंपाल और फूल से अयोध्या नगर जहाँ भगवान् ने जन्म लिया हैं ॥२॥

पुरुष प्रश्न करता है—कौन पोखर खुदवाता है और कौन घाट बँधवाता है एवं कौन-सी रानी दातून करती है, जिसके दाँतों की बतीसी झलकती है ?

स्त्री उत्तर देती है—राम युग्म पोखर खुदवाते हैं, लक्ष्मण घाट बँधवाते हैं और सीता-सी रानी दातून करती हैं, जिसके दाँतों की बतीसी झलकती है ।

विविध लोकगीत

संस्कारों, ऋतुओं, श्रम-क्रियाओं एवं विभिन्न जातियों के लोकगीतों के अतिरिक्त अन्य विविध प्रकार के लोकगीत भी होते हैं, जिनसे लोक अपने सुख-दुःख, आशा-निराशा आदि की अभिव्यक्ति करता रहता है। इन लोकगीतों में पुरबी, निर्गुन, लचारी, झूमर, मेला गीत, बाग लगाते समय के गीत, कुआँ खुदते समय के गीत, नेवाड़ पड़ते समय के गीत, खेल—गीत, गदर के गीत, भारत-चीन तथा भारत-पाकिस्तान-युद्ध सम्बन्धी गीत आते हैं।

६१. पुरबी

'पुरबी' अवध के पूर्वी जनपदों, विशेषतया बलिया, गाजीपुर तथा बिहार के छपरा जनपद में एक विशिष्ट राग-लय में गाई जाती है। इन 'पुरबी' लोकगीतों में भगवान् शिव, राम तथा कृष्ण की मनोहारी लीलाओं के वर्णन तो होते ही हैं, दाम्पत्य जीवन के रंगीन चित्र भी मिलते हैं।

सन्दर्भ—शिव-विवाह।

हिमगिरि के भवनवाँ, चले गिरिजा के सजनवाँ,
गजब दुलहा बनि आये ना ।।टेक।।
बरँभा बिसनू रिषी मुनी सब चढ़ि-चढ़ि चले बिमान।
बूढ़े बैल भँगेड़ी बाबा, देखि सबै अकुलान।।
जटा तक भसम रमाये ना।
नाग बिछुबन के पहिरे गहनवाँ, गजब० ।।१।।
दूत-दैत औ भूत-परेत, लूल-लँगड़ अधिकार।
केहुक सींग केहु अधिक नैन, अँधरन केरि कतार।।
हाहाकार मचाये ना।
देखि पुरबासी भये हैरनवा, गजब० ।।२।।
परछन करन सास जब निकसी, नाग कीन फुफकार।
फेंकि समान जीउ लै भागी, परै बज्जर अस सिंगार।।

कहाँ ते बंगाली आये ना ।
बचिहैं काहू के नाहीं परनवा, गजब० ॥३॥
नाउनि भागि चली अपने घर, तब सिव कीन विचार ।
द्विज जगदम्मा रूप देखायो, मोहि गईं नर-नार ॥
खुसी ते ब्याह रचाये ना ।
कहौ कबि कहाँ लग करै बयनवाँ, गजब० ॥४॥

—मँझगवाँ (गोण्डा)

राजा हिमाचल के भवन गिरिजापति शिव चले। वे अद्भुत दूल्हा बनकर वहाँ आये।

ब्रह्मा, विष्णु, ऋषि, मुनि सब विमान पर चढ़-चढ़कर चले। भंग खानेवाले शिवजी को वृद्ध वृषभ पर बैठे हुए देखकर सब लोग व्याकुल हो गये। वे जटाओं तक भस्म लगाये हुए थे और साँप, बिच्छू गहने के के रूप में धारण किये हुए थे ॥१॥

शिवजी की बरात में अवधूतों, दैत्यों, भूतों, प्रेतों और लूले-लँगड़ों की अधिकता है। किसी के सिर पर सींग है, किसी के दो से अधिक नेत्र हैं और अन्धों की तो पंक्ति ही लगी है। ये सब हाहाकार मचा रहे हैं, जिन्हें देखकर पुरवासी हैरान हो उठे ॥२॥

परछन करने के लिए जब सास निकली तो सर्प ने फुफकार की। जिससे घबड़ा कर वे सामान फेंक जी लेकर भगीं और कहने लगीं ऐसे शृंगार पर बज्र पड़े अर्थात् ऐसा शृंगार तो व्यर्थ भयोत्पादक है। पता नहीं कहाँ से लोग बंगाली ले आये। लगता है अब किसी के प्राण नहीं बचेंगे ॥३॥

नापित-पत्नी भी भागकर जब अपने घर को चली तो शिवजी ने विचार किया। पंडित जगदम्बाप्रसाद जी कहते हैं कि शिवजी ने ऐसी स्थिति देखकर अपना सुन्दर रूप बनाकर दिखाया, जिसे देखकर नर-नारी सभी मोहित हो गये। फिर क्या, प्रसन्नतापूर्वक विवाह सम्पन्न

हुआ, जिसका वर्णन कवि कहाँ तक करे उस विवाह का पूर्णरूपेण वर्णन करना कठिन है।

परिनिष्ठित साहित्य के गीतों की भाँति लोक-साहित्य के गीतों में भी रहस्यवादी विचार मिलते हैं। इन लोकगीतों में सन्त कबीर एवं रहस्यवाद की छाप दृष्टिगोचर होती है। ये लोकगीत अधिकांशतः कोरी और चमार जाति के लोग गाते हैं।

९२. निर्गुन

सन्दर्भ—गुरु का महत्व।

बिना रे खेवइया नइया कइसे लागै पार हो।
भव वाले सगरबा पै गुरु मल्लहवा यार हो ॥१॥
गहिरी नदिया नाव पुरानी, लहर उठैं गुमकार हो।
केतनेउ निगुड़ा करम के हीने, बाँधे जम के द्वार हो ॥२॥
सन्तन जहाज लादा हंसन के उपकार हो।
ग्यान करहरा बाँधि कै उतरैं, भवजल पार हो ॥३॥
सन्तन केरी बोली बानी, रहनि अपार हो।
साहेब कबीर गुरु ग्यान बतावैं, काया माँ करतार हो ॥४॥

—रहमतगढ़-सुकुल बजार (सुल्तानपुर)

बिना कर्णधार के नाव कैसे पार लगेगी। भव रूपी सागर पर गुरु रूपी मल्लाह ही मित्र है (जो नाव को पार लगा सकता है) ॥१॥

गहरी नदी है, नाव पुरानी है और उत्ताल तरंगें उठ रही हैं, कितने ही निगुड़ा (निगुरा-गुरुरहित) व्यक्ति जो कर्म से हीन हैं, वे यम के द्वार पर बाँधे गये हैं ॥२॥

सन्तों ने जलयान बनाया, जिससे हंसों (सज्जन व्यक्तियों) का उपकार हो और वे ज्ञान रूपी पतवार लेकर भवजल (यहाँ भवसागर से अभिप्राय) से पार हो जायँ ॥३॥

सन्तों की बोली-वाणी और रहन-सहन अत्यन्त उत्तम कोटि की

होती है । कबीर साहब का कहना हैं कि सच्चे गुरु यह ज्ञान देते हैं कि इस शरीर में ही ईश्वर रहता है ।।४।।

६३. लचारी

जब किसी घर में कोई बालक चेचक से बीमार पड़ जाता है तो उसे स्वस्थ करने के लिए किसी वृद्धा या मालिन द्वारा नीम के पल्लवों से झलते हुये (हवा करते हुए) शीतला देवी के गीत गाये जाते हैं। इन लोक गीतों को अवधी में लचारी कहते हैं।

सन्दर्भ—देवी से याचना।

माँगेउँ बरदान, देबी के मँडिलवा भीतर ।।टेक।।
भइया जौ मागेउँ सत-पँच ठइ रे।
बहिनी आकेलि, देबी के मँडिलवा भीतर ।।१।।
देवरा जौ माँगेउँ, सत-पँच ठइ रे।
ननदी आकेलि, देबी के मँडिलवा भीतर ।।२।।
अपना जौ माँगेउँ, सोने कै सिहरवा।
जुग-जुग बाढ़ै अहिबात, देबी के मँडिलवा भीतर ।।३।।

एक स्त्री कहती है कि मैंने देवी के मन्दिर में वरदान माँगा है।

मैंने कई भाइयों की याचना की और एक बहिन की ।।१।।

मैंने कई देवरों की याचना की और एक नन्द की ।।२।।

मैंने अपने लिये सोने का सिधोरा और अहिवात की वृद्धि माँगी अर्थात् मेरे पति बहुत दिनों तक जीवित रहें और मेरी मृत्यु उनके जीवित रहते ही हो (मैं विधवा न होऊँ) ।।३।।

६४. झूमर

जिन लोकगीतों को महिलाएँ मांगलिक अवसरों पर समवेत स्वरों में झूम-झूम कर गाती हैं, उन्हें 'झूमर' कहा जाता है। इनमें दाम्पत्य जीवन का वर्णन इतना मोहक होता है कि ललनाएँ गाते-गाते मस्त हो उठती हैं।

सन्दर्भ—पत्नी और पति का प्रेमालाप ।

बूँदन भीजै मोरी सारी, मैं कैसे आवउँ बालम ।। टेक।।
यक तौ मेह झमाझम बरसै, दूजे पवन झकझोरै ।।१।।
आवउँ तौ भीजै सुरँग चुनरिया, नाहित छुटत सनेह ।।२।।
नाहीं डेराई भीजै क चुनरिया, डेर लागै छूटै क सनेह ।।३।।
नेहिया से चूनरि होइहै बहुअरि, चुनरी से होइ न सनेह ।।४।।
—जोरई, ज्ञानपुर (वाराणसी)

कोई स्त्री अपने पति से मिलने की अपनी विवशता बताती है कि बूँदों से मेरी साड़ी भीजती है। तो हे प्रियतम मैं आपके पास कैसे आऊँ ?

एक तो काफी वर्षा हो रही है और दूसरे पवन भी झकझोरता है ।।१।।

यदि मैं आऊँ तो मेरी सुन्दर रंगोंवाली चूनर भीज जाये और न आऊँ तो स्नेह छूटता है। आखिर मैं क्या करूँ ? ।।२।।

मैं चूनर भीगने को तो नहीं डरती, किन्तु डर लगता है कि कहीं प्रेम में कमी न आ जाय ।।३।।

दूसरी सखी उसे समझाती है कि हे बहू ! प्रेम होने से चूनर भी हो जायगी, किन्तु चूनर होने से प्रेम नहीं होगा अर्थात् चूनर के भीगने की परवाह न कर पति के पास जाओ ।।४।।

८५. मेला गीत

किसी मेले में जाते समय महिलाएँ जो लोकगीत गाती हैं, उन्हें मेला-गीत या मेले के गीत कहते हैं।

सन्दर्भ—कृष्ण-विरह-वर्णन ।

हमैं ना सुहाय हो, मोहन बिन मथुरा ।। टेक ।।
सबकी महलिया में दिअना बरत हैं।
हमरी महलिया तौ सुन्न सरायँ हो ।।१।।
सबकी गोदिया तौ होरिला खेलत हैं।

हमरी गोदिया तौ कुछू ना लखाय हो ।।२।।
मोहन बेदरदी सुधि ना लिअत हैं ।
हम तौ फिरी चारिउ ओर बौराय हो ।।३।।
—अतरसुइया (सुल्तानपुर)

कोई गोपी कहती है—मोहन कृष्ण के बिना मुझे मथुरा नगरी नहीं सुहाती ।

सबके महलों में दीपक जलते है, किन्तु मेरा महल तो शून्य सराय जैसा है ।।१।।

सबकी गोद में उनके पुत्र खेलते हैं, किन्तु मेरी गोद में तो कुछ भी दिखाई देता अर्थात् मेरे न तो पुत्र है न ही पुत्री ।।२।।

मोहन ऐसे बेदर्दी हैं कि मेरी सुध तक नहीं लेते । मैं चारों ओर बावली जैसी घूमती रहती हूँ ।।३।।

८६. बाग लगाते समय का गीत

बगीचा लगाने से पूर्व पुरोहित द्वारा पूजा करायी जाती है । इसी समय महिलाएँ तत्सम्बन्धी लोकगीत गाती हैं ।

सन्दर्भ—बाग लगाने का सुफल ।

बगिया लगाये कवन फल, सुनौ पिया नायक ।
जौ रे लगावौ लखराँव, तबै फल होइहैं ।।१।।
सगरा खनाये कवन फल, सुनौ पिया नायक ।
जौ रे बन्हावौ, गउआ घाट, तबै फल होइहैं ।।२।।
धेरिया जलमें कवन फल, सुनौ पिया नायक ।
जौ रे बपइया पूजै पाँव, तबै फल होइहैं ।।३।।
जस रे घिअइ बिन होम, दुधे बिन जाउरि ।
जस रे धेरिया बिन धरम, पूते बिन सोहर ।।४।।
—केशबपुर (फैजाबाद)

पत्नी कहती है—हे प्रियतम ! सुनिये कि बाग लगाने का क्या फल

होता है ? यदि लखरावँ (लक्ष वृक्ष या काफी पेड़) लगाइए, तभी उसका सुपरिणाम होता है ।।१।।

हे प्रियतम ! सुनिये कि सागर खुदवाने का क्या फल है ? सागर में पशुओं के पानी पीने के लिए घाट बँधवाइए, तभी सागर के खुदवाने का अभीष्ट फल मिलता है ।।२।।

हे प्रियतम ! सुनिये कि पुत्री के जन्म होने से क्या फल होता है । यदि पिता उसके पाँव पूँजे अर्थात् कन्यादान करे तभी उसका फल मिलता है ।।३।।

जैसे घी के बिना होम और दूध के बिना जाउर (खीर) व्यर्थ होती है एवं जैसे पुत्री के बिना धर्म नहीं होता वैसे ही पुत्र के बिना सोहर व्यर्थ होता है ।।४।।

६७. कुआँ खुदते समय का गीत

किसी के यहाँ कुआँ खुदते समय नारियाँ लोकगीत गाकर वातावरण सरस और स्निग्ध बना देती हैं ।

सन्दर्भ—कुआँ खुदाना ।

कवन सिंघ इँटिया पथावयँ, पजउआ लगावयँ ।
कवन सिंघ सगरा खोदावयँ, जगतिया बँधावयँ ।।१।।
राजा दसरथ इँटिया पथावयँ, पजउआ लगावयँ ।
सिरी रामचन्द्र सगरा खोदावयँ, जगतिया बँधावयँ ।
अरे, होत्थै अजोधिया में सोर तौ जग्गि रचावयँ ।।२।।

—बस्ती ।

एक सखी दूसरी सखी से पूछती है—कौन सिंह ईंटें पथाते और पजावा लगाते हैं । कौन सिंह सागर खुदवाते और कुएँ की जगत बँधवाते हैं ।।१।।

दूसरी सखी उत्तर देती है—राजा दशरथ ईंटें पथवाते और पजावा लगाते हैं । श्री रामचन्द्र सागर खुदवाते और जगत बँधवाते हैं । अयोध्या में शोर हो रहा है, वे यज्ञ रचाते हैं ।।२।।

९८. नेवाड़ गीत

जब कुआँ खुद जाता है तो गूलर की लकड़ी का नेवाड़ डाला जाता है, जिस पर ईंटों का गोला चलाया जाता है ! इस अवसर पर महिलाएँ जो लोकगीत गाती हैं, उसे नेवाड़ गीत या नेवाड़ पड़ते समय का गीत कहा जाता है !

सन्दर्भ—गंगा माता से विनय एवं गंगाजी का आशीर्वाद ।

मन मोर गया के गजाधर, पराग बेनी माधव ।
बहिनी, जिभिया पै बसैं नरायन, ओंठे परमेसुर ।१।
हँसि-हँसि बोलैं रमइया भइया, सुना हो लखन भइया ।
भइया, फाँड़े से काढ़ा मोहरिया तौ गंगा का चढ़ाई ।२।
लछिमन काढ़ैं मोहरिया तौ रमइया जू चढ़ावयँ।
गंगा माई, मुख भरि देहु असीस, लउटि घर जाई ।३।
बाढ़ौ तौ भइया रमइया अउर लछिमन भइया ।
भइया, बाढ़ै अजोध्या कै राज तौ नित उठि आवा करा ।४।
—सुल्तानपुर ।

एक सखी दूसरी सखी से कहती है—मेरा मन गया के गदाधर एवं प्रयाग के वेणीमाधव में लगे और हे बहिन ! मेरी जिह्वा पर नारायण और ओष्ठ पर परमेश्वर निवास करें ।१।

भ्राता राम हँस-हँस कर कहते हैं—हे भ्राता लक्ष्मण । अपने फाँड़ से मुहर निकालो तो मैं गंगाजी की सेवा में अर्पित करूँ ।२।

लक्ष्मण मुहर निकालते हैं और रामजी उसे चढ़ाते हैं । साथ ही वे गंगाजी से प्रार्थना करते हैं—हे गंगे माते ! आप भरपूर आशीर्वाद दीजिए तो हम घर लौट जायें ।३।

गंगाजी आशिष देती हैं—हे राम-लक्ष्मण तुम दोनों उत्तरोत्तर

प्रगति करो, साथ ही अयोध्या का राज्य भी वृद्धि को प्राप्त हो और तुम लोग नित्य आया करो ।४२।

९९. खेल गीत

बालक-बालिकाएँ विभिन्न खेल खेलते समय गीत भी गाते हैं, जिनसे उनकी थकान दूर होती रहती है। हर खेल का अपना गीत होता है। शिशुओं को उनके अभिभावक दुलराते तथा खेलते समय गीत गाते हैं, जिनसे शिशु आनंदित होते हैं।

सन्दर्भ—घन्त-मन्त का कौड़ी पाना ।

घन्त-मन्त दुइ कउड़ी पावा ।
ऊ कउड़ी हम गंग बहावा ॥१॥
गंगा माता बारू दीन्ह ।
ऊ बारू हम भुजवा क दीन्ह ॥२॥
भुजवा हमका दाना दीन्ह ।
ऊ दनवा घसियरवै दीन्ह ॥३॥
घसियरवा हमका घास दीन्ह ।
ऊ घसिया हम गइया क दीन्ह ॥४॥
गइया हमका दूध दीन्ह ।
ऊ दुधवा हम चिल्हिया क दीन्ह ॥५॥
चिल्हिया हमका पंखा दीन्ह ।
ऊ पंखा हम राजा क दीन्ह ॥६२॥
राजा हमका घोड़ दीन्ह ।
घोड़े चढ़े आई थे ।
सीटी बजाई थे ॥७॥

घन्त-मन्त ने दो कौड़ियाँ पाईं, जिन्हें मैंने गंगाजी में फेंक दिया ॥१॥

प्रसन्न होकर गंगा माता ने मुझको बालू दी। उस बालू को मैंने भड़भूजे को दिया ॥२॥

भड़भूजे ने मुझे दाना दिया। उस दाने को मैंने घसियारे को दे दिया ॥३॥

घसियारे ने मुझे घास दी। वह घास मैंने गाय को दे दी ॥४॥

गाय ने मुझे दूध दिया। वह दूध मैंने चील को दे दिया ॥५॥

चील ने मुझे पंखा दिया। उस पंखे को मैंने राजा को दिया ॥६॥

राजा ने प्रसन्न होकर मुझे घोड़ा दिया ! अब मैं घोड़े पर चढ़कर आता हूँ और सीटी बजाता हूँ ॥७॥

१००. गदर गीत

१८५७ के प्रथम राष्ट्रीय आन्दोलन को अंग्रेज इतिहासकार गदर कहते थे, उनके लिए वह गदर ही था, किन्तु वस्तुतः वह राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए प्रयासस्वरूप प्रथम राष्ट्रीय आन्दोलन था। उससे सम्बन्धित गीतों को गदर गीत, गदर के गीत या राष्ट्रीय चेतना के गीत कहते हैं।

सन्दर्भ—स्वातन्त्र्य वीर राजा देवीबख्श सिंह की वीरता।

राजा बखानौं मैं गोंडा के देवीबकस महराज रहे।
असी चार चौरासी कोस माँ, जेहिके डंका बाजि रहे ॥१॥
गोंडा ते पाती गै झाँसी, झाँसी क राजा रामलला।
साथ हमारा दीजै राजा, हमरे राज माँ चोर हला ॥२॥
कहौं-कहौं का चलैं साँड़िया, कहौं-कहौं चलिगे हाथी।
देस-देस औ गाँव-गाँव का राजा लिखि भेजेन पाती ॥३॥
यकदम ते धावन पहुँचिगे, मानौ यकीन है।
गोंडा नगर ते झाँसी भैवा, मैजिल तीन है ॥४॥

गोंडा नगर ते पलटन चलिगै, लमती काहे लुकाय रहे।
तम्बू गड़िगे तम्बू उप्पर, तम्बू-तम्बू छाय रहे ॥५॥
जाइ फउज लमही माँ पहुँची, मार-मार डिड़ियाय रहे।
पक्का यक-यम मन कै गोला, साँचा महाँ ढराय रहे ॥६॥
फउज कै मालिक मान सिंह औ तोप कै पुरइया।
दागै तोप दइउ अस गरजै, फाटि कगारा नइया ॥७॥
हज्जारन गोरा बहि गये, चिल्लाने बप्पा दइया।
अँगरेजन की मेमै बोली, धनि धनि राजा भइया ॥८॥
भागि चलौ बिल्लाइति साहब, हियाँ पार ना पइया।
भइया, परमेसुर के लम्बे हाथ ॥९॥

लोककवि कहता है—

मैं गोण्डा के राजा देवीबख्श सिंह का वर्णन करता हूँ। जिनका डंका चौरासी कोस में बजता है ॥१॥

गोण्डा से झाँसी को पत्रिका गई। झाँसी का राजा रामलला (बालक) था। पत्रिका में लिखा था—हमारे राज्य में चोर (अंग्रेज) घुस आया है, आप हमारा साथ दीजिए ॥२॥

कहीं-कहीं को साँड़िया ऊँट चल रहे थे और कहीं-कहीं को हाथी चल पड़े थे। राजा ने देश-देश और हर गाँव को पत्री लिख भेजी ॥३॥

विश्वास मानिए—तुरन्त दूत पहुँच गये। गोण्डा से झाँसी की दूरी तीन दिन की है ॥४॥

गोण्डा शहर से पल्टन चल पड़ी और लमती गाँव में छिप रही। वहाँ तम्बू गड़ गये; फिर तो तम्बू ही तम्बू छाये हुए थे ॥५॥

सेना जाकर लमती पहुँची और 'मार-मार' की जोरों की आवाज हो रही थी। पक्का एक-एक मन का गोला साँचे में ढलाये जा रहे थे ॥६॥

सेना का मालिक मानसिंह था और तोप का पुरैया। वह ऐसा तोप दागता था जो दैव के समान गरजता था। जान पड़ता था मानो नदी का कगार फट पड़ा हो ॥७॥

हज़ारों गोरे अंग्रेज नदी में बह गये। वे हाय बप्पा, हाय दैया करने लगे अर्थात् हाय-तोबा करते हुए रोने लगे। अंग्रेजों की मेमें बोलीं—राजा भैया, धन्य हैं ॥८॥

अंग्रेज स्त्रियाँ अपने पतियों से कहने लगीं—हे साहब ! विलायत भाग चलो, यहाँ पार नहीं पाओगे (राजा देवीबख्श बहुत वीर हैं और फ़िजा अंग्रेजों के खिलाफ है)। ईश्वर के बड़े लम्बे हाथ हैं, वह जब जो चाहता है कर डालता है ॥९॥

टिप्पणी—इस लोकगीत में तत्काल स्थिति का एक शब्द-चित्र प्रस्तुत कर राजा देवीबख्श की वीरता पर प्रकाश डाला गया है।

१०१. भारत-चीन युद्ध गीत

भारत और चीन से सम्बन्धित युद्ध के समय के लोकगीत को 'भारत-चीन युद्ध' का लोकगीत कहते हैं।

सन्दर्भ—भारत का चीन से युद्ध।

जागा बीर भारती देसवा के रतनवाँ
मैदनवा बाटे चीन से रचा ॥टेक॥
हल्दीघाटी के रन बाँके, दुसमन केर नसइया।
डगमग-डगमग डोलत बाटे, आज देस कै नइया॥
बदला करवट आपन, खोला तनी नयनवाँ ॥१॥
बीर भगतसिंह, ताँत्या टोपे छत्रपती के लाल।
राना के सन्तान अनोखे, बिकट काल के काल॥
दुसमन लवा समर, जेस खेती लवै किसनवाँ ॥२॥

उठा-उठा अब सिंघ हिन्द के, बाजत मारू डंका ।
अमर अहै ना केउ दुनियाँ माँ, छोड़ के तन कै संका ।।
बेड़ी समरभूमि माँ काटि करौ खरिहनवाँ ।।३।।
भारत माँ के लाल केसरी, देसवा के सरदार ।
अहै हिमालय तोहिं ललकारत, बार-बार ओंकार ।
मारा दौरि-दौरि के सरहद पै दुसमनवाँ ।।४।।

—फैजाबाद ।

लोकगीतकार भारतीय वीरों का आह्वान करता है—

हे देश के रत्न, भारतीय वीरो ! जागो, चीन से युद्ध करना है ।

हे हल्दीघाटी के रणबीरो, शत्रु का नाश करने वाले ! आज देश की नाव डगमग-डगमग डोल रही है । अपनी करवट बदलो और तनिक अपने नेत्र खोलो ।।१।।

तुम तो वीर भगतसिंह, ताँत्या टोपे, छत्रपति शिवाजी और राणा प्रताप की अनोखी सन्तान हो एवं विकटकाल के भी काल हो । शत्रु को युद्ध में वैसे ही काटो जैसे किसान खेती कटता है ।।२।।

हे हिन्द के सिंहो ! अब उठो, मारू डंका बज रहा है । संसार में कोई अमर नहीं है । शरीर की चिन्ता छोड़कर दासता की बेड़ी को युद्धभूमि में काटकर खलिहान कर दो ।।३।।

भारतमाता के लाल, सिंह और देश के सिरमौर ! तुम्हें हिमालय ललकारता है और बार-बार 'ओम्' कहता है । सीमा पर दौड़-दौड़कर शत्रु को मारो ।।४।।

१०२. भारत-पाकिस्तान युद्ध गीत

एक बार भारत और पाकिस्तान का युद्ध हो चुका है । उससे सम्बन्धित लोकगीत को भारत-पाकिस्तान युद्ध का लोकगीत कहते हैं ।

सन्दर्भ—युद्ध के समय राष्ट्र-रक्षा की भावना।

देसवा आपन हम बचइबै, सब जतनिया कइके ना।
मनवा देसवा कै बढ़इबै, सब जतनिया कइके ना॥
गोदिया कै देबै अपने लाल, सोना-चाँदी देबै माल।
भारत मइया का बचइबै, हम केसरिया बनिकै ना॥

—गोण्डा।

राष्ट्रभक्त भारतीय व्यक्ति कहता है—मैं सब प्रकार से यत्न करके अपने देश की रक्षा करूँगा। मैं सब यत्न करके देश का मनोबल बढ़ाऊँगा। मैं अपनी गोद का लाल (प्रिय पुत्र) देश के लिए दे दूँगा और सोने-चाँदी का सामान भी दूँगा। मैं सिंह बनकर भारतमाता की रक्षा करूँगा।